वर्ष 26 | माघ - फाल्गुन | मार्च-2021 | अंक 03 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन
आर.एन.आई. नं. 0048570/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023
मूल्य 10/- रुपये
मासिक प्रकाशन

आगमोद्धारक

प्रकाशन हर माह की 6 तारीख को

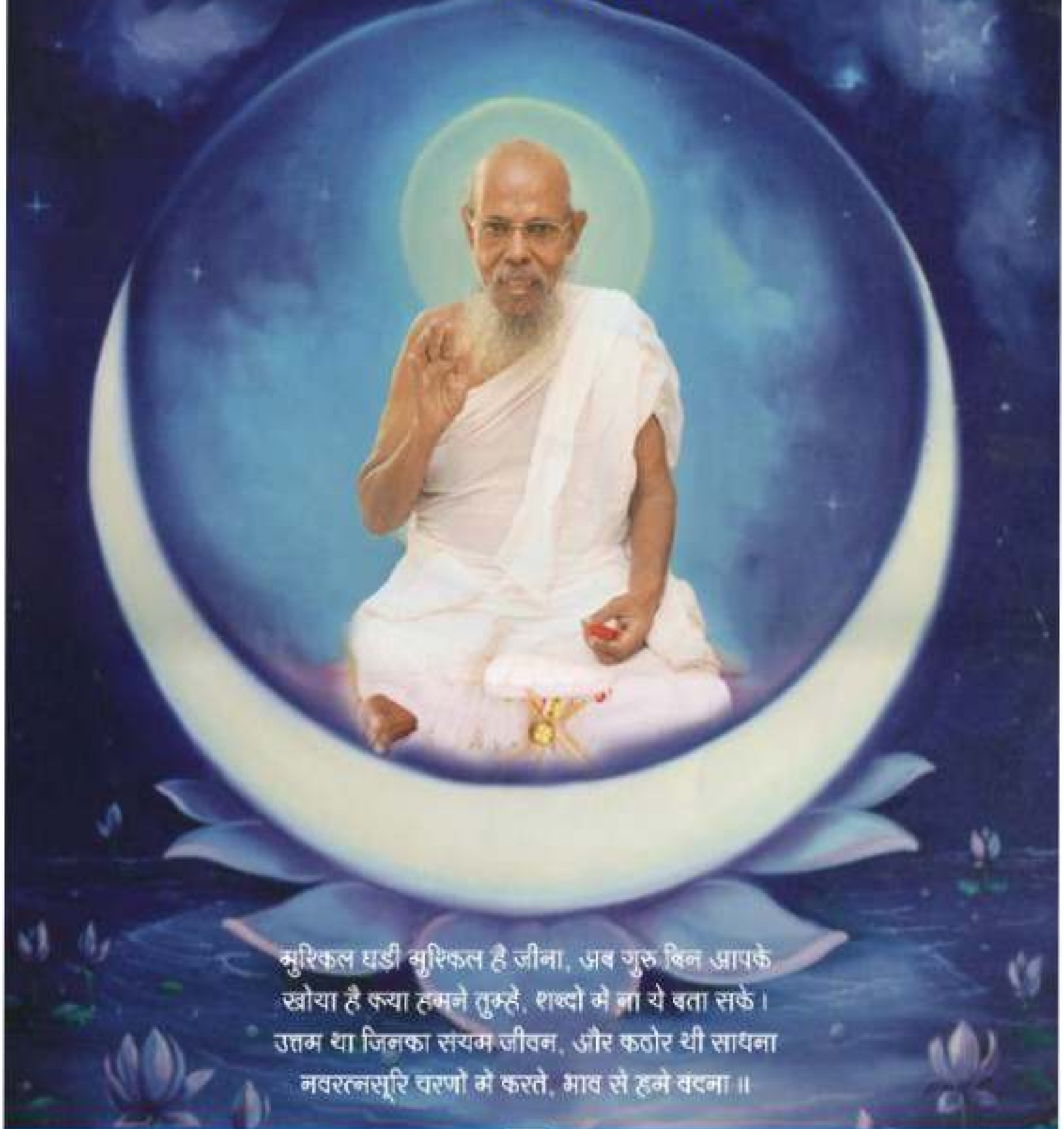

आगमोद्धारक

नमो नाणस्स नमो नमः

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन
उज्जैन का जैन हिन्दी मासिक

प्रधान सम्पादक
डॉ.सुभाष जैन, उज्जैन

सम्पादकीय कार्यालय
डॉ.सुभाष जैन
46, सखीपुरा, उज्जैन-456001 (म.प्र.)
मोबा. नं. 94250-91012, 8770884897
1-E-mail-Subash_3333@yahoo.co.in
2-E-mail-i.am.Subhashjain@gmail.com

इन्दौर कार्यालय
प्रफुल्लकुमार जैन "पप्पू"
1073, सुदामानगर, फूटीकोठी रोड़
इन्दौर-452009 (म.प्र.)
5057087, 5057067
मोबा. नं.-98260-10089

सदस्यता

आगमोद्धारक के सदस्य बनने वाले श्रीमानों से निवेदन है कि सदस्य के लिये शुल्क राशि बैंक ड्राफ्ट/चैक/M.O. से श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट, उज्जैन के नाम से सम्पादकीय पते पर भिजवाये। अन्य नाम से सदस्यता राशि स्वीकार नहीं की जायेगी। - **डॉ.सुभाष जैन**

इतना सहन नहीं करोगे ?

सेवाभावी व्यक्ति का क्रोध आप सहन करते हैं। कमाऊपुत्र का रोष सहन करते है। दुधारू गाय की लात सहन करते हैं। रोग मिटानेवाली औषधि की कड़वाहट सहन करते हैं। तो भविष्य में अनन्त लाभ प्रदान करनेवाले, तप आदि धर्म का तनिक कष्ट सहन नहीं करोगे ? कुछ कटु वचन सहन नहीं करोगे ?

दिव्य आर्शीवाददाता
प.पू.मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

मार्गदर्शक एवं प्रेरक
प.पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन, उज्जैन
अध्यक्ष- भाई श्री प्रफुल्लजी जवेरी, मुंबई (महा.)

शाश्वत संदेश

सव्वं जगं जइ तुहं, सव्वं वा वि धणं भवे।
सव्वं पि ते अपज्जत्तं, नेव ताणाय तं तवे ॥

यदि सारा जगत और सारा धन भी तुम्हारा हो जाय, तो भी वे सब अपर्याप्त ही होंगे और न ये सब तुम्हारा रक्षण करने में ही समर्थ होंगे। **- उत्तरा. सूत्र, 14.39**

पाथेय

हे मेरे मधुर स्वामी ! मैं आपकी अभीप्सा करता हूं, तुम्हें जानना चाहता हूं और तुमसे जुड़ जाना चाहता हूं। मैं तुमसे ऐसे महान प्रेम की याचना करता हूं। जो उत्तरोत्तर पवित्र विशाल और सघन होता जाए और प्रत्युत्तर में, सहसा ही मैं स्वयं को पाता हूं। जड़तत्व में अन्दर तक डूबा हुआ। चूंकि तुमने स्वयं इस भौतिक जड़ तत्व में रम जाना किया है स्वीकार, जिससे तुम इसे चेतना के प्रति धीरे-धीरे कर सको जागृत, क्या तुमने मुझसे कहा है कि यदि तू चाहता है सच्चा प्रेम करना, तो यही सही पाठ है सच्चा प्रेम सीखने का। अचेतना और अंधकार में उतर जा जिससे इन्हें कर सके परिवर्तित चेतना एवं प्रकाश में। प्रभु मैं जानता हूं कि मैं एकमेव तुमसे जुड़ा हूं इसलिये तुम्हारी इच्छा ही, मेरी अपनी इच्छा है।

शुल्क सोपान

स्तम्भ	11,511/- रुपये
आजीवन	1000/- रुपये
पांच वर्षीय सदस्य	301/- रुपये
एक वर्षीय सदस्य	80/- रुपये
एक प्रति	10/- रुपये

नोट- आगमोद्धारक में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

वर्ष-26 माघ-फाल्गुन मार्च 2021 अंक-3

विषय सूची

1- शाश्वत संदेश, पाथेय 3

2- विषय सूची 4

3- नवरत्न गुरु का गुरुत्व आकर्षण....-(सम्पादकीय)- डॉ.सुभाष जैन 5-6
पूज्यपाद गुरुदेवमालव भूषण आचार्य देवेश नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा,
ऐसे गुरुवर मिले अभिमान करो रे.... आनंद करो रे....

4- पाप की सजा भारी-प.पू.आचार्य श्री अरुणविजयजी म.सा. 7-8

5- हम चण्डालचौकड़ी-श्रीमद् विजयमुक्ति/ मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.,जानने योग्य दस बातें....9-11

6- बोधि समाधि शीला पर जैन संस्कारों का ध्वजारोहणकर्त्ता आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी-शांतिलाल सगरावत, गुरुदेव नवरत्नसागर ! 12

7- चलता फिरता भगवान- डॉ. सुभाष जैन 13

8- गुरु तो, सिर्फ नवरत्नसागर.... है 14

9- पू.सा.श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा.: एक पुण्य स्मरण, महाविदेह क्षेत्र के 160 तीर्थंकर महाविदेह की 32 विजय व राजधानी 15-16

10-गुरु बिन कौन करे भव पार...? 17-18

11-युगों-युगों तक आपकी जीवनगाथा गाये आपश्री के चरणों पर श्रद्धा सुमन चढ़ाये 19-20

12-उपकारी के उपकार को कैसे भूला सकते है ? - मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी म. 21

13-महापुरुष वही, जिसका नाम मृत्यु के बाद भी लिया जाये-चन्द्रशेखरसागर सूरी 22

14-गुरु अवतरण दिवस : 31 मार्च 2021 चैत्र वदी-3, गुरुदेव आचार्यश्री 23-24

15-एक दिव्य कल्पवृक्ष : नवरत्नसागर- डॉ.सुभाष जैन 25

16-अनागत चौबीसी के तीर्थंकर 26

17-दुनिया का दर्पण-प.पू.पंन्यास प्रवर श्री राजहंसविजयजी म.सा., नम्रता की जीत अभिमान पर 27-28

18-आगमोद्धारक भविष्य फल-मार्च-2021- अनु दीपक जैन 29

19-वर्गपहेली- 310 - जयंतीलाल जैन 30

20-ज्ञान गंगोत्री- 310 - आ.प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा. 31

21-शासन-समाचार 32-41

22-हमारे तीज त्यौहार, सादर आमंत्रण, सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है,भाव श्रावक के छः लिंग 42

संपादकीय

नवरत्न गुरु का गुरुत्व आकर्षण....

मेरे जीवन में बचपन से ही शिक्षक और प्रशिक्षकों की भरमार रही पर 24-25 वर्ष की उम्र से ही एक सद्गुरु की तलाश रही, 30 होली और 30 दीपावली देखने के बाद भी निराशा ही हाथ लगी थी और जीवन की असंयत गाड़ी चल रही थी। जिसमें हॉर्न को छोड़कर सब कुछ बजता था और ब्रेक को छोड़कर सब कुछ लगता था, सदा मन में एक कुण्ठा रहती थी मन में विचार आता था अपनी दशा और दिशा के लिये मुझ अनगढ़ पाषण खण्ड को किसी शिल्पी का योग मिल जाये पर ऐसा निःस्वार्थ सद्गुरु का जीवन में आना जरुरी था परमात्मा तक पहुंचने के लिए बीच में जो भी होगा (मेरे और परमात्मा के बीच में) वह निकट परमात्मा के ज्यादा होगा और वही सेतू (पुल) बन सकता है पर हर किसी का पुण्य इतना प्रभावशील नहीं होता-पर मैंने कुछ पुण्य करे थे पूर्वजों का और बीवी बच्चों के भाग्य से और जब मिले सद्गुरु तो क्या अनुभूति हुई थी वह शब्दों में लिख तो नहीं सकता कलम वह लेखन तो नहीं कर सकती है पर चाहता हूं जरुर लिखना। 30-35 वर्ष पूर्व मन की प्रार्थना कब पूरी हुई यह तो अब मुझे भी याद नही रहा पर मै पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी का भक्त बन गया था आपश्री के पास बैठते ही आत्मा को जो अनुभूति हुई जो तलाश अपूर्ण थी वह पूर्ण हो गई, मन से आवाज आई-

''गुरुवर अब आप ही मेरी धड़कनों का एहसास हो
अब हर एक लम्हा मेरे जीवन में साथ रहोगे
अब बुझ न सकेगी जो सांसो के रहते
गुरुवरश्री मेरी जिंदगी की वो आस हो।''

जिनको देखकर श्रद्धा और विश्वास के साथ पूर्ण समर्पण को मन चाहने लगता था जिनके समक्ष बैठते ही हर चिन्ता से मुक्त हो जाता था स्वयं भी नहीं समझ पाया, अचानक इतना लगाव इतना अपनापन क्षणभर में पूर्ण भरोसा न हिचकिचाते मन में एहसास होता है जैसे मिल गयी मंजिल मिल गया सहारा प्रश्न तो पूछना चाहता था मेरे उलझे हुए भावो को जवाब मिल जाना मेरे अफसानों को कैसे महसूल किया मेरे इंतजार का जिस तरह अभिव्यक्त कर रहे है मुझ गुमराह को राह देना ऐसा व्यक्तित्व, ऐसा गुरुत्व आकर्षण जहां बिना निमंत्रण के भी जाने को मन करता था मुझ जैसे शख्स को अंधेरे से उठाकर रोशन करना। समाज में एक पहचान, मान और सम्मान दिलाना, सद्गुरु में जो कहीं किसी मैं नहीं ऐसा क्या सम्मोहन था ऐसा क्या विराजमान था कि जब भी बोलते थे तो जिव्हा पर सरस्वती विराजमान है ऐसे शब्द खिरते थे जैसा किसी परमात्मा की सभा में ही संभव हो सकता है। अपनत्व और प्रेम की बोली अब तो सुनने को 5 वर्ष हो गये है मेरे जीवन को सब कुछ लूटाकर पूज्यश्री पता नही किस लोक के वासी हो गये है पर वे आज भी मेरी खैर खबर रखते है यह अहसास पूज्यश्री खुद करवाते है।

इतने लोग आते है किसी का भी मन जुदा होने का नहीं करता (जुदा होते है तो) मन वापस लौट-लौटकर आने का करता है इन गुरु में कौन सा गुण था, वो कौन सा चुंबक था कि लोगों को अपनी तरफ खींच लेते थे बहुत सोचा और देखा तो पाया उनकी साधना और परमात्मा से उनकी आत्मा की संधी थी जिस कारण इनके स्मरण मात्र से ही हमारे दुःखों का अंत हो जाता था पूज्यश्री के पास ज्ञान रुपी प्रकाश का विराट आकाश मौजूद था तो रत्नों से परिपूर्ण सागर की गहराई थी हिमालय पहाड़ जैसे ऊँचाईयाँ थी मैंने पाया इनका हर इशारा हर कदम महत्वपूर्ण होता था जरुरत थी तो बस मन की आँखों से देखने की, मैंने जो देखा और गुरुवर की जो चाहत थी वह माली की तरह से थी (हम शिष्य) वृक्ष की तरह है हमारी हर उपलब्धी में गुरु का पूर्ण योगदान आज भी रहता है वृक्ष को जैसे खाद्य पानी मौसम से जानवर-कीटाणु-बिमारियों से बचाना और जब वृक्ष की तरह जम जाये जड़ जब फैल जाये मजबूती आ जाती है और जब फूल या फल उगाने में समर्थ होने पर माली रुपी गुरु की चाहत होती है कि फलदार है तो भूखे की भूख मिटा सके यात्री की छाया बन सके, पंछियों का घरोंदा बने हरियाली से वातावरण को प्रदूषण मुक्त रखे वर्षा का कारण बने, धरती एवं प्राणी जगत को जीने में जैसे सहायक बने खुद खुशहाल रहे तो हर सामनेवालों को भी सुखी रखे यही गुरुवर चाहत थी।

भारतीय संस्कृति में हमें धर्म मार्ग के लिये बढ़ने के लिये साधन सम्पन्न नहीं साधना सम्पन्न मार्ग निरुपति किया

है यहां भोग का नहीं योग को, त्याग को, वैराग्य को, पाने में प्रयासरत रहे-कभी भी कटु नहीं बेहतर बने कमजोर नहीं सशक्त बने आलोचक नहीं बुद्धिमान बने योग्यताएँ व्यक्तित्व, प्रबल प्रेरणा और प्रतिभा हमें शिखर तक पहुंच सकती है परन्तु चरित्र ही हमें ऊँचाईयों पर स्थिर बनाए रख सकता है। यह गुरुवर का कहनाथा।सच तो यह है कि **''अब छोड़ दिया है इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में।''**

गुरुवर के गुरुकुल में जहां अब भी मुझे अपनत्व मिलता है एक परिवार का सा एहसास होता है मैं जब सब शिष्य परिवार से मिलता हुं तो लगता है जैसे अपना कितना वृहत्त परिवार है एक ही बात सबसे अधिक दर्द देती है कि वहां सब तो होते पर गुरुदेव नही होते है।

बस गुरुवर से आखरी अगर तमन्ना है कि असंयम के साथ तो अनन्तों बार मरण हो चुका, अब एक बार तो कम से कम संयम के साथ मरण हो ताकि दुर्गति से बचा जा सके और सुगति को पाकर मुक्ति का वरण किया जा सके।

✻ डॉ. सुभाष जैन

ऐसे गुरुवर मिले अभिमान करो रे.... आनंद करो रे....

श्रमण संस्कृति के अग्रदूत महाश्रमण चरम तीर्थंकर परमात्मा श्रीप्रभुवीर ने इस विनाशशील,परिवर्तित होने वाली सृष्टि में 1- मनुष्य भव 2- धर्माचरण और 3-धर्मश्रद्धा को अत्यंत दुर्लभ बतलाया है। मानव शरीर धारण करना एक बात है तो जीवन में मानवीय गुणों को धारण करना अलग बात है, कुछ ही विरले मानव होते है जिनकी कथनी करनी चर्चा और चर्या मन और वचन ,आचरण और उच्चारण में एक रुपता दिखाई देती हो जिनमें यह योग्यता होती है, वे महापुरुष दिव्यता को प्राप्त करते है। जैन जगत के श्रमणत्व के इतिहास में ऐसे महापुरुषों की एक समृद्ध परम्परा चली आ रही है, श्रमण परम्परा की इस कड़ी के अनमोल रत्न वर्तमान युग में **पूज्य गुरुदेव श्री नवरत्नसागर सूरीश्वर जी म.सा.** रहे है। साधना सरलता की प्रतिमूर्ति नवयुवकों के चेहते, जन कल्याण की भावना से ओतप्रोत गुरुदेवश्री ने देश के अनेक प्रांतों में लाख किलोमीटर से ऊपर पद यात्रा करते हुए मार्ग में आये सभी जीव राशियों को सत्य अहिंसा प्रेम मानवता वात्सल्य संदेश देकर जीवन कल्याण का संदेश दिया था।

पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराजा

संत अपने करुणा के स्त्रोत संख्यातीत असंपृ मानसों को रसाभिसिक्त करते हैं उनकी वाणी न केवल मानव जाति को दिशा बोध कराती है अपितु मानवता के उपवन को सुंदर रुप में सजाने संवारने के प्रयास भी करती है। संतों की तुलना उस सूर्य से की जा सकती है जो बिना भेदभाव के महलों और झोपड़ियों को समान रुप से उजाला प्रदान करता है। श्रमण संस्कृति को अक्षुण्य रखने वाले संत,साधकों,तपस्वीयों में परम पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी महाराज का नाम अग्रणी रहेगा और गौरव के साथ लिया जाता रहेगा श्रद्धेय गुरुदेव का व्यक्तित्व फूलों के गुलदस्ते की भांति उनका मुस्कराता हुआ भावपूर्ण चेहरा सरल स्वभाव, दयार्द हृदय, निस्कपट,व्यवहार,उदार विचार,जप-तप,मंत्र-यंत्र-तंत्र के सिद्ध साधक, चंद्र सम शीतलता, सूर्य सम तेज, पूज्यता और पृथ्वीसम क्षमाशीलता ,अनुकम्पाशील विशाल हृदय आदि विभिन्न गुणों की सौरभ से सुरभित रहा है। उन असंख्य गुणों से सुशोभित गुरुदेव के बारे में लिखना सीप की अंजली में महासागर को समेटना जैसा है,छोटे से दीये में सूरज को भरना और पंखों में अनंत आकाश को भरने जैसा है। गुरुवर का समग्र जीवन परोपकार, जीवोद्धार, जीर्णोद्धार, समाजोद्धार, सद्विचार और सौभ्यता तथा आध्यात्मिकता जीवन की धरोहर बन चुका है। पूज्य गुरुदेव के मुखारबिंद से भव्य जीवों को संबोधनार्थ जब वाणी नि:सृत होती थी तो उस अद्भूत प्रभावशाली वाणी से हजारों-हजार श्रोताओं का हृदय क्षणमात्र में आंदालित,परिवर्तित करती हुई जीवन पथ के लिये एक नई दिशा बोध कराती थी तथा विद्वता से भरे विश्लेषण एवं सरल सुगम शब्दों में झरती वाणी श्रोताओं पर अमिट छाप छोड़ती थी।

गुरुदेव के अनवरत बढ़ते हुए कदम नवीनतम क्षितिज को छूने के लिये उत्सुक प्रतीत होते थे। भारत के विभिन्न प्रांतों,अंचलों में पद विहार कर सामान्य व्यक्ति से लेकर विशिष्ट राजनीतिज्ञ व असंख्य धर्मनिष्ठों को सात्विकता और सदाचार के पावन संस्कार आपने प्रदान किये। ऐसे गुरुदेव का आज पुण्य स्मरण आंखों को बार बार गिला कर रहा है क्या लिखे क्या बोले

पाप की सजा भारी...!

*प.पू.आचार्यश्री अरूणविजयजी म.सा.

गतांक से आगे...!

इसमें नादरीवृत्ति का प्रमाण ज्यादा होता है-

अक्सर ऐसे पैशुन्य वृत्ति वाले जीव नारदी वृत्ति ज्यादा रखाते है। नारदजी की आदत थी कि इधर की उधर करते थे और दोनों को भिड़ा देते थे। लड़ाते थे और फिर तमाशा देखते थे। मन में राजी होते थे। वैसे ही पिशुनवृत्ति वाले जीवों में भी नारदी वृत्ति भरी रहती। इसी वृत्ति से एक की चुगली दूसरे के पास की फिर दूसरे की बात इधर-उधर की और परिणाम यह आया कि दोनों झगड़ने लगा। चूंकि पैशुन्य वृत्ति में माया का प्रमाण मिला हुआ है। अतः इसका स्वभाव मायावी ज्यादा रहता है। अतः चुगली करने वाला मायावि वृत्ति का सेवन करता है। पैशुन्य का मूल माया के घर में है। इसीलिये माया-कपट का आश्रय लेता है।

स्त्रीयां जब इस पाप स्थान को सेवन ज्यादा करती है और इधर की उधर बातें करती है तब एक दूसरी को कहती है सुन.... यह बात मैं तुझे सुनाती हूं परन्तु तू किसी को मत कहना। मेरी सोगन है तुझे! सामने वाली सुनाती है। उसे भी रस आता है किसी की बातें सुनने में आपने यदि दिलचस्पी ली या रस दिखाया तो समझ लेना कि चुगलखोर आपको भी चिपक जाएगा! चुगलखोर तो वैसे भी रस्ते पर के फेरीवाले के जैसा है। उसे तो उसकी बात सुनानी ही है। पर सुनने वाला चाहिये। बस आप दिलचस्पी दिखाइए वह आपको सुनाएगा!

यह पापस्थान ही मृषावाद के घर का अवान्तर प्रभेद इसीलिए मृषावाद-असत्य का कथन यह अंश ज्यादा रहता है। चुगलखोर कभी भी शत-प्रतिशत सत्य बोलता ही नहीं है। पचास प्रतिशत तो वह झूठ बोलता ही है। अतः सुनने वाले जरुर ध्यान रखें। यह पापस्थान विचित्र प्रकार का है। बोलने वाले की अपेक्षा सुनने वाले को ज्यादा नुकशान करता है। बोलनेवाले के पास तो क्या है? क्योंकि चुगलखोर न तो प्रमाण रखता है, न सबूत रखता है न कुछ। अतः वह तो छूट जाएगा। लेकिन सुनने वाला संभव है कि लड़-झगड़ भी सकता है! वह सुनकर आवेश में आ जाए और बोला-चाली में मारामारी पर भी आ जाते है। ऐसे समय में यदि सुनने वाला चुगलखोर का नाम-पता दे और मानों दोनों मिलकर उसे पूछने भी जाय तो वह स्पष्ट झूठ बोल देगा! अब आपके पास क्या प्रमाण है? और क्या सबूत है? वह तो झूठ बोलकर खिसक जाएगा और आप लड़ते रहेंगे! चुगलखोर को झूठ बोलते शरम नहीं आएगी। झूठ बोलने का ही घर है। मृषावाद का ही अवान्तर पाप स्थान है। अतः उसे कहां से तकलीफ है। इसीलिए लोगों को चाहिये कि ऐसे पापस्थानों से दूर रहे। सुनी-सुनाई बातों से दूर रहे। सुनानेवाला चुगलखोर ही सुनने वाले को सुनाते समय ही यह कहता जाता है कि आप किसी को यह बात मत कहना। वह अपनी सोगन भी डालता है तो फिर भी स्त्रीयों में ऐसी बातें बड़ी रफ्तार से बढ़ती जाती है। फैलती जाती है। एक दूसरे को कहती जाती है और सौगन भी डालती जाती है। दूसरों को कहने की मनाई भी करती जाती है। फिर भी आश्चर्य तो इस बात का है कि 2-4 घंटे में तो सारे गांव में फैल जाती है। घर-घर इस बात की चर्चा शुरु हो जाती है।

कलह आदि पापों का मूल कारण-

चुगलखोर के सिर पर कितना पाप बढ़ा? क्योंकि सारी बात फैलाने का मूल कारण तो वह एक ही है। हजारों को झूठ बोलने का निमित्त कारण तो वही बना और इस बात पर कई लड़ैंगे-झगड़ैंगे संभव है मारा-मारी होगी, क्रोधादि कषाय खड़ा होगा, द्वेष वैमनस्य होगा, बढ़ेगा इत्यादि इन सब पापों का मूल निमित्त कारण तो वह अकेला ही बना। अतः उसे कितना दोष लगा। बारहवां पापस्थान कलह का जो है उसका भी मूल निमित्त कारण अभ्याख्यान और पैशुन्य ही है। ये दोनों ही दूसरों को लड़ाने-झगड़ाने का काम करते हैं। अतः पैशुन्य वृत्ति वाले चुगलखोर झगड़े के केन्द्र में रहता है। झगड़ालु के रुप में उसकी छाप ही पड़ जाती है। अतः समाज के ऐसे लोगों से संभल कर रहना चाहिये। नहीं तो ये लोग समाज में क्लेश-कषाय-कलह के बीज बो देते हैं। जाति-जाति के बीच, भाई-भाई के बीच, बाप-बेटे के बीच वैर-वैमनस्य खड़ा कर देते हैं। स्त्रीयां घर की छोटी-छोटी बातों में अपनी तरफ से थोड़ा नमक-मिर्च मसाला छिड़क कर रात को पति के कानों में कानाफूसी करती है। इधर-उधर की दो-चार बातें करती है। चुगली भी खाती है। परिणाम यह आता है कि स्त्री प्रेम की तरफ ज्यादा आकृष्ट कच्चे कान का पति दिन में माता से पिता से झगड़ने लगता है और यही क्रम 2-4 वर्ष यदि चलता रहे तो आखिर एक दिन बाप-बेटा, माँ-बेटा अलग हो जाते है। वह कहीं अलग स्वतंत्र घर लेकर रहने लगता है। बस स्त्री का साध्य-लक्ष्य यही था और वह उसने अपनी कला से

साध लिया। अतः ऐसे परिणाम देखकर पति को कच्चे कान का नहीं बनना चाहिये। निरर्थक बातों को महत्व नहीं देना चाहिये और माता पिता का द्रोह नहीं करना चाहिये। परद्रोह करानेवाले अनेक निमित्त हैं। कहते हैं-

पैशुन्य परवादं च, गालिदानं च तर्जनम्।
मर्मोदघाटं विधत्ते यत्, परद्रोहः स उच्चते ॥

पैशुन्य का सेवन करना अर्थात् चुगली खाना, निंदा पर प्रपंच करना, गाली देना, मारपीट करना, डांटना-फटकारना और किसी के मर्मों को प्रकाशित करना, गुप्त रहस्यात्मक बातें प्रगट करनी यह सब परद्रोह का कार्य कहा जाता है। समाज में जब रहना है तो फिर परद्रोह करने से कैसे काम चलेगा ? अतः शांति से रहना ही लाभदायक है।

चुगली के धंधे में करोड़ों रुपये कमाए-

यह शीर्षक देखकर तो शायद कईयों का मन लालायित हो जाएगा। वाह- करोड़ों कमाए ? अच्छा है चलो देखें ऐसा कौन सा प्रकार है यह, जिससे बिना पूंजी के करोड़ों रुपए कमाए। चलो यह अच्छा सस्ता प्रकार है। संसार में लोगों ने पैसे कमाने के लिए लाखों प्रकार के व्यापार लगाए हैं। लाखों तरीके खड़े किए है। संसार का हर मनुष्य पैसा उपार्जन करने के पीछे लगा है। इस व्यवसाय में अनेक पापों का सेवन लोग करते हैं। ऐसे ही सज्जनों को बम्बई में देखने का अवसर मिला। समाज के लोगों ने उस मनुष्य के बारे में सूचना देते हुए कहा महाराज ! इसने करोड़ों रुपये कमाए हैं। मैंने पूछा-कैसे ? तो लोगों ने बताया कि इसका धंधा ही ऐसा पाप का है। जिन्दगी भर इसने ऐसा ही किया है। इसका काम ही ऐसा है। इसने रोज लोगों की पोलें इकट्ठी करनी शुरु की और आय कर विभाग के अधिकारियों को सूचना देते रहता था कि आज यहां छापा लगाइए। कल वहां छापा लगाइए। इसके यहां इतनी संभावना है। इस प्रकार चारों तरफ से बातों का पता लगाकर सारी जानकारी आय-कर विभाग के अधिकारियों को देता था। बस इस प्रकार की चुगली खाने से उसे जो भी पकड़ा जाय, जितना भी माल मिले उसके 10 प्रतिशत उसे मिलते थे और भी अधिकारियों के साथ हिला-मिला रहकर कई प्रकार की चोरी करता था। 45 वर्ष की आयु तक उसने यही चुगली का ही पाप किया। उसका क्या जाता था ? 2-4 नाम रोज दे देना, कुछ बातें बता देनी फिर आगे तपास तो अधिकारियों को ही करनी है। वे ही करेंगे। जो भी मिला सो सही। जितना मिला उसमें से उसे तो अपना भाग मिल ही जाएगा। इस प्रकार कहते हैं कि उसने करीब 2-4 करोड़ रुपये इसमें कमा लिए।

ऐसा खराब और हलका नीच-अधम कक्षा का पाप व्यापार करके करोड़ों रुपए कमाए। बंगला-गाड़ी बसाकर राजाशाही ठाठ से रहने लगा। फिर भी समाज में उसकी एक कोड़ी की भी कीमत नहीं थी। सभी उसे अच्छी तरह पहचानते थे अतः कोई भी उससे व्यवहार नहीं रखाते थे। संबंध नहीं रखाते थे। करोड़ों रुपये होते हुए भी उसकी 1 पैसे के जितनी भी इज्ज़त नहीं थी। वह खुद भी ऊंचा मुंह रखकर समाज के बीच आ नहीं सकता था। फिर भी कलियुग की कहावत है- सर्वे गुणः कांचनमाश्रयन्ति। सभी गुण सोने में रहते है। अर्थात् जिसके पास पैसा है उसके पास सब कुछ है ! पैसे से आज मनुष्य बड़ा लग रहा है। क्योंकि आज मनुष्य को मापने का मान सिर्फ पैसा ही एक मात्र साधन हो गया है। पैसे से ही मनुष्य माना जाता है जिसके पास जितना ज्यादा पैसा है वही उतना बड़ा है। ऐसी आज की मान्यता हो गई है लेकिन यह कितनी गलत है ? इसका तो जब अनुभव होता है तभी ही पता चलता है। पैसा मिला कि सब कुछ मिल गया ऐसा भी नहीं है। माल-सामान बेचकर पैसा इकट्ठा किया जाता है लेकिन पैसा भी देकर इज्ज़त खरीदी जाती है। अतः लोग पाप व्यापार से पैसा तो कमा लेते है लेकिन फिर समाज में यश-प्रतिष्ठा पाने के लिये दान-पुण्य के मार्ग में पैसा भी पानी की तरह बहाते है जिससे समाज में नाम बना रहे ! इज्ज़त, शोभा और प्रतिष्ठा मिले। लेकिन ज्ञानी गीतार्थों ने धर्म कार्य में दान-पुण्य न्याय सम्पन्न विभव वापर ने का उपदेश दिया है। वह सज्जन भी लाखों रुपये धर्म क्षेत्र में बोलकर दान-पुण्य करने लगा। लेकिन उसमें भी पापवृत्ति का आचरण करने लगा। पैसा लिखाना और बोलना सही लेकिन एक पैसा भी देना नहीं। ताकि समाज में एक बार तो सभा में बैठे लोगों को लगे कि वाह कितना दान करता है। लेकिन पीछे से लिखाया हुआ भी देना। यह कितना पाप ? आखिर पैसा ही पाप मार्ग से आया है अतः पाप की बुद्धि उत्पन्न हो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। शास्त्रकार महर्षि कहते है कि पैशुन्य वृत्तिवाले का दान-पुण्य-सब व्यर्थ जाता है !

दानं च विकलं नित्यं, शौर्य तस्य निरर्थकम् ॥
पैशुन्यं केवलं चित्ते, वसेद्यस्याऽयशो भूवि ॥

जिसके मन में पैशुन्य वृत्ति का पाप सदा रहता है उसका दान-सर्वथा निष्फल जाता है, उसकी शूरवीरता शक्ति सब निरर्थक जाती है और संसार में अपयश अप्रतिष्ठा होती है।

(आगे और भी है...!)

हम चण्डालचौकड़ी

✻ पू.आ.श्रीमद् विजयमुक्ति/मुनिचन्द्रसूरीश्वरजी म.

मेरा नाम तो रखा गया था- अशोक, परन्तु दूसरों को शोक करवाना ही मेरा धंधा ! दूसरों की अच्छी बात मैं कभी सच मानता ही नहीं और खराब बात सच माने बिना रहता नहीं। मेरा यह जन्मजात स्वभाव ! दूसरों की कलई खोलना हंसी-मजाक करना, दूसरों के पैर खींचना, यह मेरा प्रिय शौक ! इसके लिए मैं चाहे जितनी नीची हद तक भी उतर जाता। मेरे तीन मित्र थे- कामांकूर, ललितांग और रतिकेलि ! ये सभी मेरे जैसे ही थे। जैसे को तैसा मिल जाता है ! कबूल को कौए और आम्र को कोयल मिल ही जाते हैं।

उलटे-सीधे, आडे-टेढ़े करके हम राजा के मंत्री बन गये। राजनीति में कैसे दांवपेच करने, महाराजा को कैसे खुश रखना, किस को कैसे पछाड़ना, इस सभी बातों में हम पहले से ही होशियार थे। ....और आप जानते ही है कि ऐसे हमारे जैसे गुंडे ही सफल राजपुरुष बनते है, जल्दी से आगे जा जाते हैं। सज्जन तो राजनीति की गंदगी से सैकड़ों योजन दूर रहते हैं। इससे हम जैसे गुंडों को खुला मैदान मिल जाता है। एक तो बंदर और ऊपर से दारु पीने का मौका मिल जाये, एक तो जहर और उसे छौंकने में आए, एक तो झगड़ालू बहु और वह माँ बनी हो। एक तो गुंडे की जमात और उसे राजनीति का सहारा मिले, फिर क्या बाकी रहता है ? राजनीति का साथ मिलने से हमारी गुंडागीरी-दादागीरी आसमान पर चढ़ गई थी। लोग हमसे बहुत ही नाराज थे लेकिन उनका चले भी क्या ? हमने राजा को बराबर वश में कर रखा था। बड़ों को/राजाओं को खुशामत बहुत ही पसंद होती है- यह बात हम अच्छी तरह से जानते थे। खुशामत का एक भी मौका हम छोड़ते नहीं थे।

एक बार राजा के साथ युद्ध के प्रसंग पर बाहर जाने का हुआ। वहां भी दरबार लगता और अभिनव बातें होती। हमारे साथ अजितसेन नामक एक मंत्री भी था। उसके पिता रत्नाकर सेठ को अजितनाथ भगवान की शासनदेवी अजितबाला की कृपा से वह प्राप्त हुआ था। अतः उसका नाम अजितसेन रखा गया था। वह अत्यंत बुद्धिमान था। बुद्धि के साथ शुद्धि भी उसे मिली हुई थी।

उसके गले में फूलों की माला थी। आश्चर्य की बात यह थी कि अनेक दिन बीत जाने पर भी वह मुरझायी नहीं थी। फूल तो शाम होते ही मुरझा जाते हैं। मुरझा जाना यह तो फूलों का स्वभाव है, जैसे मृत्यु यह मानव का स्वभाव है। बिनमुरझाई फूलों की माला देखकर राजा ने कारण पूछा तो किसी ने कहा- राजन् ! इस मंत्री की पत्नी सती है। उसके सतीत्व के प्रभाव से माला मुरझाती नहीं है।

यह सुनकर हम चारों चौक उठे- स्त्री और सती ? कभी हो ही नहीं सकता। स्त्री और सती ? दोनों एक साथ ? आग और पानी जैसा दोनों में विरोध है। राजन् ! ''सती'' शब्द शास्त्र तक ही ठीक है। हकीकत में सती बनी जैसी कोई स्त्री हो ही नहीं सकती। नीति शास्त्रकारों ने भी कहा है-

''सर्पे क्षान्ति स्त्रीषु कामोपशान्तिः।
काके शौचं केन दृष्टं श्रुतं वा ?''

सांप और क्षमाशील ? स्त्री और वासना-रहित ? कौआ और पवित्र ? हो ही नहीं सकता। स्वयं द्रौपदी ने ही नारद को कहा है- हे नारद ! स्त्रीओं को कोई एकांत स्थान, कोई समय, कोई प्रार्थना करनेवाला पुरुष नहीं मिलता इसलिए ही वह ''सती'' होती है। द्रौपदी की इस बात में कुछ तो तथ्य होगा ही न ? मंत्री की स्त्री सती हो यह हम मान नहीं सकते। नाम शीलवती हो सकता है, बाकी स्त्री शीलवती हो ही नहीं सकते। नाम शीलवती हो सकता है, बाकी स्त्री शीलवती हो ही नहीं सकती। शीलवती नाम ठगनेवाला बन सकता है। स्त्रीयां बहुत चालाक होती है। अपने पति को वे कई प्रकार से ठग सकती हैं। बनावटी फूलों की माला में इत्र छांटकर सुगंधित बनाकर पति को सौंप सकती है और कह सकती है कि- नाथ ! यह मामला मुरझा जाये तो मानना कि मेरा सतीत्व गया। बेचारा भोला पुरुष मान बैठता है- ओह ! मेरी पत्नी कितनी उच्च कक्ष की सती हैं ! बाकी फूल न मुरझाये ऐसा कभी हो सकता है ? उगना और अस्त होना सूरज का स्वभाव है। जन्म लेना और मरना मानव का स्वभाव है। खिलना और मुरझाना फूलों का स्वभाव है। स्वभाव कैसे बदला जा सकता है ? हाँ, एक बात है, कागज के बनावटी फूल कभी मुरझाते नहीं है। असली फूल तो मुरझायेंगे ही। हम यह सिर्फ बातें ही नहीं करते हैं। इस सती के दंभ का पर्दा हटाने के लिये तैयार हैं। आप हमें आज्ञा दें। हम वहां जाकर उसे भ्रष्ट बनाकर आते हैं। हमने आपको पहले ही कहा- किसी की सच बात सच मानना हमारे स्वभाव में नहीं हैं।

हमारी बातें सुनकर राजा को भी तमाशा देखने का मन हुआ। 50000 द्रव्य देकर सर्वप्रथम हम चारों में से मुझे (अशोक को) शीलवती के वहां भेजा गया।

मैं तुरन्त ही नंदन नगर में पहुंचा। यह तो मुझे अपनी पसंद का कार्य मिल गया था। एक तरफ राजा की ओर से इनाम ! दूसरी तरफ शीलवती जैसी सुंदरी का संभोग ! हमारे जैसे भ्रष्ट मनुष्य को विवेक या मर्यादा जैसा कुछ होता ही नहीं। स्व-स्त्री या परस्त्री जैसी कोई भेदरेखा थी ही नहीं। शैतान के लिये भेदरेखा या लक्ष्मण रेखा कैसी ?

मैं अपने रुप, बुद्धि और सौभाग्य पर गर्विष्ठथा। मैं यही मानता था- चाहे जैसी स्त्री को मैं अपने वश में ले सकता हूं। स्त्रीयों को वश करना मेरे दाहिने हाथ का खेल था !

मैं बन-ठनकर, इत्र इत्यादि लगाकर शीलवती के घर के पास गया। दासी के द्वारा शीलवती को कहलाया- तुझे एक सौभाग्यशाली पुरुष मिलना चाहता है।

कुछ देर बाद दासी ने आकर कहा- हमारी स्वामिनी ने कहलाया है कि पैसे के बिना ऐसा काम नहीं हो सकता। व्यक्ति का वशीकरण पैसों से होता है। 50000 द्रव्य दो तो अभी काम हो जायेगा।

मैं मुस्करा उठा। इतना जल्दी मेरा काम हो जायेगा ? इसकी मुझे कल्पना भी नहीं थी। पुरुष स्त्रीयों के रुप से आकर्षित हो जाते हैं और स्त्री पुरुषों की संपत्ति से आकर्षित हो जाती है, यह बात मुझे अभी बिलकुल सत्य लगी।

50000 द्रव्य देकर मैंने दासी से मिलने का दिन ले लिया। निश्चित किये हुए दिन को मुस्कुराता-मुस्कुराता मैं शीलवती के घर गया। वह भी मुझे मिलने के लिये अधीर हुई हो ऐसा उसके चेहरे से लग रहा था। हंसता हुआ उसका चेहरा भीतर की चाहना प्रकट करता हो वैसा लगा। मुझे मीठा सत्कार मिला। मेरा हृदय झंकृत हो रहा था। मेरे रोम-रोम में शीलवती को मिलने का आनंद छा गया। मृदु आवाज में शीलवती ने कहा- अंदर पलंग बिछाया हुआ है आप वहां बिराजिए। उसके रुप ने उसकी चांदी की घंटी जैसी मीठी आवाज ने मुझ पर जादु कर दिया था।

मैं अंदर के कुछ अंधकारभरे कमरे में गया। जैसे ही पलंग पर बैठा वैसे ही धड़ूम.... मैं सीधे नीचे खड्डे में पड़ा। पलंग के नीचे गहरा खड्डा था। पलंग के ऊपर सिर्फ चद्दर थी। मैं आज बराबर फंस गया था। मैं मन ही मन बोल उठा- यह तो साला गजब हो गया। 50000 द्रव्य गया। प्रतिज्ञा पूरी नहीं हुई। शीलवती नहीं मिली और मैं मूर्ख बना यह नफे में। यह शीलवती तो जबरदस्त निकली। बाहर से कैसा मीठा-मीठा बोलती थी। मुझे बराबर खड्डे में उतारा। अब नहीं लगता है कि इस खड्डे में से मुझे कोई बचाये। हे भगवन् ! अब सिर्फ तेरा आधार हैं।

जिंदगी में पहली बार ही मैंने भगवान को याद किया था। सचमुच ही सुख में नहीं, दुःख में ही भगवान याद आते हैं। इसीलिये ही भक्तों ने भगवान के पास दुःख मांगा है। कुंती ने कहा है कि-''विपदः सन्तु नः शश्वत्'' हमें हमेशा दुःख ही दुःख मिले।

सुख मथे शिला पड़ो, प्रभु हृदय से जाय,
बलिहारी हैं दुःख की, पल पल नाम जपाय।

आज मुझे समझ में आया। भक्तों के जीवन में दुःखी क्यों आते हैं ? चंदना, अंजना, मयणा, सुलसा, सीता, मदनरेखा इत्यादि के जीवन में दुःख के पहाड़ क्यों टूट पड़े ? दुःख के समय भगवान अधिक याद आते हैं, भगवान का निरंतर स्मरण होता रहे इस हेतु से ही दुःख आये होंगे ? दुःख भी भगवान की कृपा से ही आये होंगे ? सचमुच ही, दुःख भी भगवान की निग्रह कृपा है।

मैं अंधकार भरे खड्डे में दुःखपूर्वक दिन बिताने लगा। छोटे से खड्डे में ही खाना-पीना और लघु-बड़ी नीति करना, सोना भी उसी खड्डे में ! छोटे से ठीकरे में थोड़ा-थोड़ा खाने का शीलवती भेजती थी। मेरे जैसे अनाड़ी को सीधा करना हो तो ऐसा ही करना पड़ता है न ? लातों के भूत बातों से नहीं मानते- यह बात शीलवती अच्छी तरह से समझती होगी।

25-30 दिनों के बाद अचानक धडुम.... आवाज आई। मैंने देखा तो मेरी तरह ही कोई एक भाई ऊपर से गिरा था। अच्छा हुआ कि वह मेरे पर नहीं गिरा, नहीं तो मेरी हड्डीयां टूट जाती। मैं सहज में ही बच गया। ध्यान से देखा तो पता चला- अरे ! यह तो मेरा लंगोटिया कामांकूर ! मैं तुरन्त ही परिस्थिति समझ गया। आ भाई हरखा। अपन दोनों सरिखा ! मैं मन ही मन बोल उठा। वह कुछ कहे उसके पहले ही मैं समझ गया था कि राजा ने मेरी तलाश करने के लिए इस मूर्ति को भेजा लगता है और यह भी मेरी तरह फंस गया है। चलो, एक से दो भले ! इस अंधकार भरे खड्डे में एक बातें करनेवाला व्यक्ति तो मिला ! हम परस्पर बातचीत करते रहे और हमारी मूर्खता पर रोते भी रहे और हंसते भी रहे।

ऐसे फिर एक-एक महिने के बाद हमारे शेष दो लंगोटिये ललितांग और रतिकेलि भी पड़े। हम चारों चाण्डाल चौकड़ी यहां पर मिल गये थे। मानों हमें हमारे पापों ने जीते-जी नरक में डाल दिये थे ! छोटे-से खडडे में रहना, खाना, पीना, सोना इत्यादि सभी करना ! ओह ! कितना जुल्म ! कितना दुःख !

मैंने (अशोक ने) तो लगातार चार महिने तक ऐसा दुःख सहन किया। चारों में लीडर तो मैं ही था न ! लीडर को ही सबसे ज्यादा सहन करना पड़ता है न !

एक बार हम चारों ने शीलवती को लक्ष्य करके कहा- ओ स्वामिनी ! हमने तुम्हारी महिमा देखी। हमारे कुकर्मो का फल भी भुगता। मेहरबानी करके अब हमें बाहर निकालो। ऊपर से शीलवती ने कहा- मैं तुम्हें बाहर जरुर निकालूंगी, लेकिन इसके पहले मैं कहूं वैसे करना पड़ेगा।

सतीमां ! तुम कहो वैसे हम करने के लिये तैयार हैं। हम तुम्हारी गाय है। कल के भराड़ी हम, आज बें बें करती बकरी हो गये थे।

मैं जब वाक्य के अन्त में ''भवतु'' कहु, तब तुम्हें भी ''भवतु'' कहना हैं.... बराबर समझ गये ?

हाँ बिलकुल बराबर समझ गये। हम ''भवतु'' कहेंगे।

बाहर चल रही बातचीत से लगा- राजा भोजन करने के लिए आनेवाले हैं। उनके लिये सभी तैयारियां हो रही है ऐसा लगता है। राजा के पूरे परिवार के लिये रसोई तैयार करके हमारे कमरे में रख दी गई। बाहर से तैयारी जैसा कुछ भी नहीं लगता।

भोजन का समय होते राजा परिवार आया, भोजन की कुछ भी तैयारी न देखकर पास में रहे मंत्री से पूछा- यह क्या है ? अपनी मश्करी तो नहीं है न ? भोजन की कुछ भी तैयारी नहीं है।

नहीं.... राजन् ! यह मंत्री मजाक करे ऐसे है ही नहीं। हम रुकते है और देखते हैं। पहले से ही किसी के बारे में कुछ निर्णय कर देने से सामनेवाले को अन्याय होना संभव हैं।

हमारे कानों में राजा-मंत्री की बातचीत पड़ रही थी।

इतने में शीलवती ने अंदर आकर सभी सुन सके वैसे कहा- ''भो यक्षाः ! राजा समागतः। अतः सर्व प्रकारेण रसवती प्रगुणा भवतु।'' (राजा आये हैं, रसोई तैयार हो जाओ।)

हम चारों एक साथ बोल उठे- ''भवतु।''

और.... तुरन्त ही रसोई की तैयार सामग्री कमरे में से बाहर आने लगी। राजा तो स्तब्ध होकर यह सभी देखता रहा।

भोजन के बाद राजा ने पूछा- मंत्रीश्वर ! हम जब आये थे तब कोई रसोई तैयार नहीं थी। अचानक ही कैसे सब तैयार हो गई ? राजन् ! मेरे यहां चार यक्ष है। आज्ञा करते ही सभी काम कर देते हैं। रसोई तो क्या ? किन्तु दूसरे भी बड़े-बड़े काम पलक में कर देते हैं।

ऐसे अद्भूत यक्ष तो मेरे यहां ही शोभा देते हैं। वैसे भी मेरे बहुत से काम होते हैं। यदि यक्ष काम कर दें तो मुझे बहुत ही सरलता रहेगी। तो यक्ष मुझे देंगे ?

जरुर.... राजन् ! यक्ष आपके ही हैं। मैं भी आपका हूं, वहां यक्षों की तो बात ही कहाँ ? आप खुशी से ले जा सकते हो, मैं अभी टोपली में रखकर आपको देता हूं। आप गाजे-बाजे के साथ आपके महल में ले जाओ। परन्तु एक बात कभी भूलना मत कि यक्षों का स्वरुप किसी को भी नहीं बताना है।

मंत्रीश्वर की ऐसी उदारता देखकर राजा स्तब्ध हो गया। उसके बाद हमें बड़े करंडीये में डाला गया। ऊपर बड़ा कपड़ा ढंककर रथ में स्थापित करके राजमहल में ले जाया गया। हमारे रास्ते में कुंकुम का जल छांटा जा रहा था। आगे शाही वाद्य बज रहे थे। पीछे राजा की रानीयां गीत गा रही थी। हम मन ही मन बड़बड़ रहे थे। इस शीलवती ने तो हमारी हालत बिगाड़ दी हैं। ऐसी बुरी हालत कर दी है कि अब मुंह भी बताने जैसे नहीं रहे। देखो.... तो सही.... हमारा कैसा ''वरघोड़ा'' निकल रहा है ! इसमें बदनामी कैसी होगी !

हमारे ऐसे विचारों के साथ स्वागत यात्रा पूरी हुई। राजमहल के दरवाजे पर हमारा सत्कार किया गया।

भोजन के समय राजा हमारे पास आया। हमारी विधिपूर्वक पूजा करके कहा- ''रसवती प्रगुणा भवतु''

परन्तु ऐसे ''भवतु'' कहने से कोई भोजन तैयार हो जाता है ?

भोजन नहीं देखाकर अकुलाये हुए राजा ने कपड़ा हटाया। हम चारों को देखा। सचमुच ही हम भूत जैसे बन गये थे। दाढ़ी, मुंछ बढ़ गये थे। शरीर कृश हो गया था। चेहरा कुम्हला गया था। ध्यान से देखते-देखते राजा पहचान गया और खिलाखिलाकर हंस पड़ा-अरे राम ! तुम्हारी ऐसी बुरी दशा कैसे हुई ? शीलवती का क्या हुआ ? ऐसी दशा किसने की ?

हमने शीलवती के उत्कृष्ट शील धर्म की बात की तथा हमारी हालत की भी बात की। राजा सहित सभी स्तब्ध हो गये। सभी शीलवती के शील, बुद्धि और निर्मलता इत्यादि की प्रशंसा करने लगे। हम चारों तो एकदम सीधे हो गये। उसके बाद हम कभी भी किसी भी स्त्री को छेड़ने की हिम्मत नहीं कर सके।

✻ जिसके लिये आर्त्तध्यान करना पड़ता है वहां से या तो मन हटा लेना या वह कृत्य कर डालना। इस तरह उससे विरक्त हुआ जायेगा।

बोधि समाधि शीला पर जैन संस्कारों का ध्वजारोहणकर्त्ता आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी

परम योगीन्द्राचार्य अति स्मरणीय मालवा के अधित्मय प्रज्ञा शांति के धारक मालव भूषण आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी म. अद्भूत चमत्कारिक महामांगलिक व महाप्रणेता होकर एक महामान्य संघ के महोमानव है। यह सर्वमान्य है कि व्यक्ति यदि जन्म से लेकर निद्रा, मैथुन, रंगारंग में जीवन बिताता है, तो जीवन निरर्थक है और यह भी सत्य है कि मानव और समाज सेवा कर उसके कंटाकाकीर्ण मार्ग को निर्मल बनाना भी सामान्य मानव के बस की बात नहीं है। इसीलिए जब-जब भी धर्म हानि होती है, तब-तब महाविभूतियों का अतिमति होता है जो कर्ता की अनुपस्थिति में फर्म की मशाल और दीपस्तंभ होते हैं, कर्म कर्त्ता के स्मारक होते हैं। कर्म कर्त्ता के स्मारक होते हैं।

महामना दिव्य कल्पवृक्ष श्री नवरत्नसागरजी आचार्यश्री देव ने अपनी आत्मशुद्धि के लिये ही नहीं वरन जनकल्याणार्थ महामांगलिक का सूत्रपात किया, उन्हें किसी अधिकार रत्न, धान की कमी नहीं थी, अपितु ''तपस्या थुई नहीं तख्त ही शर्मिदा'' कहावत को चरितार्थ किया। आपने उस वर्धमान आयम्बिल तप की तपाराधना की, जिस साधना को करके श्रेणिक राजा की महासती महासेन कृष्णा ने दीक्षा लेकर सवा चौदह वर्ष तक वर्धमान आयंबिल तपाराधना करके कर्म खपाये और मोक्ष प्राप्त किया। अंतगढ़ सूत्र आचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने अपने जीवन में व्यक्तित्व और कर्त्तव्य को जन कल्याणार्थ समर्पित कर युगों युगों तक अपनी पहचान को विशिष्ठतम स्वरुप में ढालकर जैन जगत के शाश्वत पटल पर अपनी प्रेरणादायी अनुकरणीय आध्यात्मिक उपस्थिति को स्थाई रुप से उत्कीर्ष कर दिया। ऐसी महाविभूति के जीवन में सदासर्वदा सहृदयता का अद्भूत समन्वय, असाधारण समता भाव, आध्यात्मिक ऊर्जा वात्सल्य का जीवन कल्पवृक्ष, उज्ववल आत्मिक ज्योति, अंतर्तेज से देवित्यमान आत्मिक शक्ति, वैराग्यवासित मालव भूषणता चारित्र, संस्कार और चिंतन की युगपुरुषता, बोधि समाधि की शीला पर जैन संस्कारों के ध्वजारोहणकर्त्ता के गुणों को धारण कर समाज का मार्गदर्शन किया।

आपश्री ने मात्र अपनी आत्मशुद्धि के लिये ही संन्यास धारण नहीं किया अपितु जनकल्याण के अपना जीवन अर्पण समर्पण कर दिया। निःसंदेह आप जितने तार्किक थे इतने ही श्रद्धालु भी थे, आप जितने आध्यात्मिक थे इतने ही सामाजिक और व्यवहारिक भी थे। आप संख्या में नहीं गुणों में विश्वास करते थे। आप शब्दों से नहीं, अनुभूति रही आपकी पहचान आप अनुशासन में नहीं, प्रेमानुशासन के पक्षधर थे। अरिहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधुगण, ज्ञान, दर्शन चारित्र और तप थे, नव शाश्वत पवित्र तत्वों के आराधक, साधक नाम तुल्य आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरिश्वरजी की चिरन्तरता में मानवता अमरता प्राप्त करें, संयम खिलकर आध्यात्मिक फल को फलदायी सिद्ध करें। इन्हीं भावनाओं के साथ शुभारंभ भावना से आपश्री के चरण कमलों में अंतरमन से विनयांजलि-वंदनांजलि।

✻ शान्तिलाल सगरावत, मंदसौर

गुरूदेव नवरत्नसागर ।

तुम दीन दयाल कृपालु
गुरूदेव नवरत्नसागर
बेटे हो माँ मणि के
चल दिये प्रभु के होकर,
नहीं मिलती और मिसाल
गुरूदेव नवरत्नसागर।
वाणी में भरा एक जादू है,
अमृत से अधिक सुस्वादु है,
प्रवचन है बड़ा कमाल
गुरूदेव नवरत्नसागर।
आप इस समाज के गौरव हो जीवनशक्ति हो, वैभव हो
हम आपसे है मालामाल
गुरूदेव नवरत्नसागर।
हे नमस्कार गुरूदेव आपको
कर जोड़ करते वंदन हम
चरणों में मस्तक डाल
गुरूदेव नवरत्नसागर ।

चलता फिरता भगवान

✻ डॉ. सुभाष जैन

यह घटना वर्षो पुरानी है मुझे सूरत में आचार्यश्री के चातुर्मास के समय ज्ञात हुई थी। शायद किसी फ्लेट में आचार्यश्री एक धार्मिक कार्यक्रम के लिये पधारे थे(***उस समय मुनि अब आचार्य***)वहां ***मुनिश्री मृदुरत्नसागरजी*** भी विराजमान थे। मैं भी वहां उपस्थित था। दोपहर में, मैं जहां आचार्यश्री ठहरे हुए थे वहां पहुंचा ही था कि मुनिश्री मृदुरत्नसागरजी ने बुलवाया और बोले- ***सुभाषभाई ! देखो सामने जो नवयुवक खड़ा है उसके परिचय प्राप्त करो वह जैनेत्तर नवयुवक है और उससे मिलना आपके लिये उपयोगी रहेगा।*** मैंने कहा- कैसे ? तो मुनिश्री ने कहा- वह आचार्यश्री के प्रति वह बहुत श्रद्धा रखता है उसका अनुभव प्राप्त करो। मैं तत्काल उसके पास गया और अपना परिचय देते हुए मैंने बात का सिलसिला आगे बढ़ाया तो वह नवयुवक भी खुल गया। हम एक ओर कोने में दरी पर जाकर बैठ गये तब उसने मुझे बताया कि- ***मैं इन महात्मा को नहीं जानता था,*** उन दिनों मेरी आर्थिक स्थिति व्यापार में घाटा हो जाने से अत्यंत ही खराब थी ***सुबह को खाने की व्यवस्था हो जाये तो शाम की चिंता से मन भारी हो जाता था ऐसी घोर संकट वाली जिंदगी जी रहा था*** उधार मांगने वालों एवं तिरस्कार और अपमान करने वाली नजरों से बचने के लिये मैंने आत्महत्या का विचार बना लिया था उन्हीं दिनों में मेरे एक जैन गुजराती मित्र ने मेरा बहुत हौंसला बढ़ाया। एक दिन वह आया और बोला- देख मैं तेरी परेशानी को जानता हूं ***मैं भी दुःखी हूं पर तेरी मदद करने इतनी शक्ति मेरी नहीं है*** कि तेरी मदद कर सकुं आज जैन उपाश्रय में हमारे जैन साधुजी आये है एक बार तू उनसे मिल लें तो वह बोला- ***मैं उनसे मिलकर क्या करुंगा वे मुझे क्या देंगे ?*** तो मित्र बोला- ***तू चल तो सही, कम से कम तेरे बैचेन मन को कुछ देर शांति तो मिल ही जायेगी,*** आखिर दोनों मित्र उपाश्रय में आये यहां पूज्यपाद गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराज विराजित थे। दोनों ने वंदन किया। आचार्यश्री बोले- ***कहो भय्या कैसे आये हो ?*** तब जैन मित्र ने अपने मित्र की सभी परेशानियों से आचार्यश्री को अवगत कराया तो आचार्यश्री बोले- अरे भाई ! इसमें मैं क्या कर सकता हूं ? ***यह तो सब कर्मो का खेल है।*** तब जैन मित्र और उसका साथी बोला- नहीं साहेबजी आप सब कुछ कर सकते है। ***आपका आर्शीवाद मेरी जीवन नैय्या पार लगा सकता है।*** आचार्यश्री को लगा इसकी परेशानी सही है। इसे सांत्वना की आवश्यकता है ,यह सोच आचार्यश्री ने उसे कुछ देर समझाया और बोले- ***मेरे पास देने को तो कुछ है नहीं पर आपकी आत्म शांति के लिये मैं आपको महामंत्र दे रहा हूं*** अगर आज से आप प्रतिदिन एक घंटा नियमित जाप करेंगे तो अच्छा रहेगा। युवक को और क्या चाहिये था। बोला- ***साहेबजी वैसे ही फुर्सत में हूं, करने को कुछ है नहीं।*** आपके कहे अनुसार मनभाव से एक घंटा रोज जाप करुंगा। बस अगले ही दिन से उसने जाप आरंभ कर दिया अभी दो-तीन दिन ही बीते थे कि जैसे चमत्कार हो गया, वह युवक सुबह जापकर घर में बैठा था कि उसका पुराना पार्टनर आया। वह युवक यह देख आश्चर्यचकित रह गया कि यह घर क्यों आया है। पार्टनर ने आते ही उस युवक से कहा- देख भाई ! मुझे तेरी परेशानी का पता चला है तो मैं आया हूं ***तुझे मुझ पर गुस्सा तो आ रहा होगा पर मैं भी क्या करुं तेरी स्थिति देखकर आया हूं।*** यह कुछ रुपये है तू अपना कुछ काम शुरु कर ले ***रुपये तेरी इच्छा हो तब लौटा देना ।*** युवक की आंखों से आंसु की धारा बह निकली वह बोला- ***भाई तूने मुझे मरने से बचा लिया है ।*** दोनों ने अपने गिले शिकवे दूर किये। अगले दिन से उसने अपना कुछ कार्य आरंभ किया और देखते-देखते उसके हालत बदल गये ***अब जाप में उसकी श्रध्दाभक्ति और बढ़ गई थी।*** वह रोज ही आचार्य भगवंत को याद करता था, उस दिन जब वह मुझ से मिला था तब तो वह बहुत ही स्थिर हो गया था ***सब कुछ अच्छा होने लगा था , पैसा भी जमा हो गया था अब बाजार में वह एक इज्जतदार पैसा वाला व्यापारी माना जाता था।*** वह मुझसे बोला- मैं गुरुदेव के दर्शन करने आया था और आप मिल गये। वह युवक भावविभोर होकर बातें कर रहा था आगे बोला- ***सुभाष भाई ! मैंने भगवान के बारे में बहुत सुना है पर जीवित भगवान मैंने नहीं देखे है, हां स्थान-स्थान पर विभिन्न मूर्तियां देखी है, घरों में कैलेण्डर आदि देखे है जिन से मुझे पता चला कि ये राम है, ये कृष्ण है, ये हनुमान है, ये महावीर है, पर मैंने जिंदा चलता-फिरता भगवान देखा है तो वह आचार्यश्री में देखा है उन्हें देखकर मुझे लगता है कि भगवान होता है । मेरे लिये तो यही भगवान है ।*** मैं तो इन्हें ही भगवान मानता हूं। उसके यह उद्‌गार सुन मैं भी आनंद से भर गया था। ***ऐसे करुणा सागर थे हमारे आचार्य भगवंत।***

✻ आत्मज्ञान भीतर
के विश्व की पहचान है।

गुरु तो, सिर्फ नवरत्नसागर....है

गुरु शब्द मुंह में आया आँखें बंद हुई और पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी का वीतरागी स्वरुप सामने आ जाता है। मेरे श्रद्धेय गुरुदेव के चरणों में मेरा कोटि-कोटि आदरांजलि।

यह मेरा हाल ही नहीं हर उस भक्त का हाल है जो एक बार में ही पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी का हो जाता था। वो क्या बात है जो हर कोई एक बार दर्शन करता था वह खिंचा चला जाता था। तो चलिए बात करते है गुरुदेव की कठिन चर्या एवं साधना के फलस्वरुप उसके होनेवाले असर की। उनके दर्शन मात्र से होने वाला प्रथम असर-

जैसे आँखो की डिबिया में निंदिया,
और निंदिया में मीठा सा सपना,
और सपने में मिल जाये फरिश्ता सा कोई।

यह है असर आपश्री के दैदीप्यमान स्वरुप का जिसको उन्होंने स्वयं जन्म दिया था एक ऐसा जन्म जो शरीर का नहीं आत्म स्वरुप का था। ऐसे जन्म लेने वाले विरले ही होते है, उनमें से कोहिनूर की तरह चमकते हुए पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी थे जिनके दर्शन के बाद मन बस में नहीं रहता था, बार-बार जाना चाहता था उनकी शरण में फिर होता है दूसरा असर उनकी अवर्णनीय वाणी का और मन कह उठता है-

आपके प्रवचन से हम बदलने लगे
आँखो से आप दिल में उतरने लगे।
आपके सानिध्य का हुआ यूं असर
कि हम आपके चरणों में ही रहने लगे।

धन्य है वह घड़ी जब पूज्यश्री का मुनि रुप में जन्म हुआ था। पग-पग पर भौतिकता को फिसलन होते हुए भी जो हिमालय की तरह अडिग थे, रत्नत्रय की साधना में रहते थे, तभी तो पुण्योदय से अगर गुरुदेव का चौमासा भक्त के शहर में हो जाता था तो गुरुदेव के अमूल्य सानिध्य के सब दीवाने हो जाते थे है तीसरा असर और मन कह उठता है-

कई जन्मों से बंधा आत्मा से कर्मो का ये बंधन,
प्यार से सिखाया आपने काटना ये बंधन।
है नया तरीका, सरल सहज मार्गदर्शन
होंठ है खामोश लेकिन कह रही धड़कन।
मुश्किल दामन को छुड़ाना लगता है,
गुरुवर का मुखड़ा सुहाना लगता है।

अहंकार, मोह माया, कपट, ईर्ष्या, द्वेष इन चीजों से दूर गुरुदेव के समीप रहने स्वच्छ, निर्विकार प्रेम को प्राप्त करते हुए समय बीत जाता था और सदैव बहती हुई सरिता के समान स्वभाव वाले गुरुदेव शहर छोड़ आगे बढ़ जाते थे पता नहीं चलता और जब होश आता है तब होता है चौथा असर और मन कह उठता है-

हम तेरी वात्सल्य की छांव में पले गुरुवर,
जा रहे है आप हमको छोड़ कर गुरुवर।
खूबसूरत ये जमाने याद आयेंगे,
चाह कर भी हम आपको न भूल पायेंगे।
मुश्किल अश्कों को छुपाना लगता है,
गुरुवर का मुखड़ा सुहाना लगता है।

मन बार-बार यही कहता है कि- धन्य है वह माँ जिन्होंने अपने लाड़ले को स्वार्थ त्याग हम सभी का दे दिया, धन्य है वह जमीं, राजगढ की पावन भूमि जिसमें गुरुवर का जन्म हुआ और धन्य है वह घड़ी वह दिन जब ब्रह्मचर्य रुपी संयम का धारण कर गुरुदेव ने स्वयं को नया जन्म दिया और अपने शरीर को अपना दास बना लिया उस शरीर का जिसका दास सारा जगत बना हुआ था।

और अंत में यहीं कहूंगा-

''जब मैं था तब गुरु नहीं,
अब गुरु नही हैं तो मैं नहीं।

पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजीके अ वतरण दिवस पर आपश्री को भावभरी आदराजंलि।

***आप हमसे जितना भी चाहो दूर जाकर देख लो।**
मेरे दिल के करीब और करीब होते जायेंगे आप॥*

पू.सा.श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा.: एक पुण्य स्मरण

भारत भूमि साधकों, संतों, दार्शनिकों तथा चिंतकों की स्थली है। संतों ने समय-समय पर विश्व को कर्मठता का संदेश दिया है। इस परम पवित्र भूमि पर कई रत्नों ने जन्म लिया उन्हीं रत्नों में से एक महामूल्या रत्ना का अवतरण राजगढ़ की पावन भूमि पर हुआ था। पुण्यशाली पिता श्रीकंचनभाई एवं ममतामयी माता सुगनबाई की रतनकुक्षी से 21-7-1946, श्रावण सुदि-7 संवत 2003 के दिन वो रत्ना ''जन्मी''। वही रत्ना शिरोमणि के नाम से राजगढ़ में ''चमकी''। संस्कारों का सिंचन शुरु हुआ। हां कहते है B (Birth) से D (Death) के बीच में C (Character) का निर्माण करने में पहली सीढ़ी माता पिता ही होते हैं।

बाल्यकाल से ही प्रभु की पूजा-सेवा करवाते थे, उपाश्रय में म.सा.के पास भेजते थे। ऐसे ही एक दिन साध्वीजी म.सा. के पास रंग पंचमी खेलने से पानी के जीवों की हिंसा जानकर-

हलु कर्मी शिरोमणि के अंदर पापों का 'कंपन''हुआ।
मस्तिष्क में विचारों का ''मंथन'' हुआ,
दिल में दीक्षा का ''स्पंदन''हुआ।

13 वर्ष की उम्र में उन्होंने मालवोद्धारक प.पू.आ.श्री चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. एवं प.पू.इन्दुश्रीजी म.सा.की निश्रा में शिरपुर में उपधान किये।

उपधान में चतुर्थ महाव्रत के पचक्खाण लेकर दीक्षा ही लेनी है, इस प्रकार मन को Lock किया। मालव विभूषिका हेमप्रभा श्री म.सा. को गुरु माँ बनाकर सभी को Shock किया.

उज्जैन में वैशाख सुद-9 दिनांक 13-5-1962 के दिन आ.श्रीचन्द्रसागर म.सा. के करकमलों से महामयी प्रवज्या को ग्रहण किया। 14 वर्ष की बालवय में आपकी संयम रुपी Train Start हुई। आपका नाम प्रियदर्शना श्रीजी घोषित हुआ।

P=Peaceful, R=Respectful,
I=Idealfull, Y=Youthful, A=Attractful

सभी गुरु बहनों एवं समुदाय के सभी साध्वीजी के साथ आपकी आत्मीय प्रीति थी। सभी को सही सलाह देनेवाली अच्छी मार्गदर्शिका थी। **''यथा नाम तथा गुण''**

संयम की ट्रेन में बैठकर आपने अलग अलग प्रांत मालवा, मेवाड़, निमाड़, महाराष्ट्र, पंजाब, राजस्थान, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश आदि 59 स्टेशन पर स्टाप कर 59 चार्तुमास आपके हुवे। ट्रेन में जैसे पेसेन्जर आते है और जाते है वैसे आपने अपने जीवन में गुणों को ग्रहण किया और दोषों को दूर किया।

आपको पढ़ सकुं ऐसी किताब चाहिए,
गुण कितने है आपमें मुझे हिसाब चाहिये।
कैसे बने आप इतने महान ?
इस प्रश्न का जवाब चाहिये-
भवदीया अनेका गुणः वर्णायितुम् अहम् न शक्नोमि।

1-सरलता :- बड़ों की हर आज्ञा को आप हमेशा मान देते थे, हर छोटे की बात को सम्मान देते थे।

2- परार्थरसिकताः- स्वयं का काम छोड़कर हर किसी के हर कार्य के लिए आप हर वक्त तत्पर रहते थे।

3- ज्ञानरसिकताः- ज्ञान के विषय में आप हमेशा स्टेडेन्ट की तरह रहे। हम जैसे छोटों के लिए आप बेस्ट टीचर थे। शाता हो या अशाता जाप-साधना-स्वाध्याय में हमेशा दृढ़ नियम वाले थे। हम सभी को इसी ज्ञान मार्ग में आगे बढ़ने की हमेशा प्रेरणा देते थे।

4- वैयावच्चरसिकताः- दिन हो या रात हो छोटे हो या बड़े की सेवा के लिए आप हमेशा आगे रहते थे। सबसे बड़ी उदारता तो आपने तब बताई जब आप की प्रथम शिष्या बन रही थी तब साध्वी की सेवा के लिए आप दीक्षा में नहीं गये।

5- गुरु समर्पिताः- बिबड़ोद तीर्थ में सिद्धचक्र मंदिर की प्रेरणा दात्री आप स्वयं होने के बावजूद भी आप उसकी प्रतिष्ठा में मौजूद न होकर आपके गुरु की सेवा में रहकर गुर समर्पण का बेमिसाल उदाहरण दिया था।

6- शौर्यताः- अनेक संघों की छोटी-बड़ी उलझनों को सुलझाने की आप में खूबी थी। ''एक बार आसमान में कितने सितारे है यह बताना मुमकीन है लेकिन आपके गुणों का आंकन करना यह नामुमकिन है।'' गुणानुरागी आपको कोटि-कोटि वंदन हो।''

दोष रुपी पैसेन्जर्स जैसे निंदारस, स्वादरस, राग, परिग्रह विगेरे को आपने कासों दूर करा था। **तपस्या करता-करता हो के डंका जोर बजाया हो।**

मासक्षमण, 16 उपवास, सहस्त्राकुट, बीसस्थापक

290 आयंबिल, शत्रुंजय छट्ठ-अट्ठम्, वर्धमान तप की 76 ओली, नवपद ओली की आराधना ऐसी आत्मा को निर्मल करने वाली अनेक तपस्या आपके द्वारा हुई।

उमरण में उपाश्रय में प्रेरणा, खरगोन में जिनमंदिर जीर्णोद्धार प्रेरणा, बिबड़ौद तीर्थ में सिद्धचक्र मंदिर की प्रेरणा एवं तीर्थ जीर्णोद्धार की प्रेरणा महिदपुर में महावीर भवन शांतिनाथ आराधना भवन की प्रेरणा, शासन के अनेक कार्य आपकी प्रेरणा से हुए। आपके परिवार में आपकी 6 शिष्याएं, 8 प्रशिष्या एवं 2 प्रशिष्या है।

Gurudev for the world you may be someone
But for me you are my world.

आपका जीवन अनेक सद्गुणों का समुद्र था उस समुद्र का वर्गीकरण करना कठिन ही नहीं अतिकठिन है आपके विराट व्यक्तित्वरुपी सिंधु को शब्दों के बिन्दु से बांधना बहुत ही कठिन है। 73 वर्ष की उम्र व 59 वर्ष के दीक्षा पर्याय में आपका ऐसा गुडविल था कि हर समुदाय, हर संघ आपके गुणों से अवगत था।

ऐसे ही अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करते-करते 2020 में भोपावर की शुभ प्रतिष्ठा के लिए आपने जाप का बिगुल बजाया था। प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द सम्पन्न होने के बाद आप उज्जैन में पढ़ाई करवाने के लिए पधारे। यहां आने के बाद गत 10 महिने से अशाता वेदनीय कर्म को आप धर्मवीर योद्धा बनकर समता समाधि के साथ क्षय कर रहे थे। किन्तु नियति को कुछ ओर ही मंजूर था। श्री विजय हीरसूरीश्वरजी बड़ा उपाश्रय ट्रस्ट एवं श्रीसंघ आपकी वैयावच्च में हरपल तैयार रहा। स्वास्थ्य में सुधार न होने के कारण अन्त में इन्दौर चिकित्सा के लिए आपको ले जाना पड़ा, वहां पर वेदना के बावजूद आपके मुखमंडल पर निखार था परन्तु कर्मसत्ता ने ऐसा क्रूर खेल खेला कि पोष सुदी-दूज 15-1-2021 संध्या के समय 6.35 मिनट पर वो आपको हमसे दूर ही ले गया।

किसको खबर थी किसको यकी था,
कि ऐसे भी दिन आयेंगे। आज उज्जैन छोड़ चले,
कल दुनिया छोड़ चले जायेंगे ॥

ऐसा लगता है कि आपको महाविदेह क्षेत्र में ले जाकर श्रीसिमंधर स्वामी से आपको मिलवाना था इसलिये काल ने दूज को चुना। हम सभी को यही एक आशा है कि आप तीर्थंकर पद पाकर मोक्ष मंजिल की जल्दी से जल्दी स्वामी बने।

महाविदेह क्षेत्र के 160 तीर्थंकर
महाविदेह की 32 विजय व राजधानी

विजय	राजधानी
1- कच्छ	*क्षेमा*
2- सुकच्छ	*क्षेमपुरी*
3- महाकच्छ	*अरिष्ठा*
4- कच्छावती	*रिष्टवती*
5- आवर्त	*खड्गी*
6- मंगलावर्त	*मंजुषा*
7- पुष्कलावर्त	*औषधी*
8- पुष्कलावती	*पुंडरिकिणी*
9- वत्स	*सुसीमा*
10- सुवत्स	*कुंडला*
11- महावत्स	*अपराजिता*
12- वत्सावती	*प्रभंकरा*
13- रम्य	*अंकावती*
14- रम्यक्	*पद्मावती*
15- रमणीय	*शुभा*
16- मंगलावती	*रत्नसंचया*
17- पद्म	*अश्वपुरी*
18- सुपद्म	*सिंहपुरी*
19- महापद्म	*महापुरा*
20- पद्मावती	*विजयपुरा*
21- शंख	*अपराजिता*
22- कुमुद	*अपराख्या (अरजा)*
23- नलिन	*अशोका*
24- नलिनावती	*वीतशोका*
25- वप्र	*विजया*
26- सुवप्र	*वैजयन्ति*
27- महावप्र	*जयन्ति*
28- वप्रावती	*अपराजिता*
29- वल्गु	*अंकपुरी (चकपुरी)*
30- सुवल्गु	*खड्गपुरी*
31- गंधिल	*अवन्ध्या*
32- गंधिलावती	*अयोध्या*

गुरु बिन कौन करे भव पार....?

समग्र चैन्नई महानगर उन दिनों गुरुभक्ति में लीन था। गुरु-शिष्य परंपरा के इतिहास में ऐसे अवसर कम ही देखने को मिलते है। चैन्नई की महान ऐतिहासिक विरासत के अनुरुप ही यहां की पावन धरा पर गुरु भक्ति एवं गुरु के चरणों में साधना की प्रेरणामयी स्वर्णिम गाथा का सृजन हुआ था और यह पुण्य, सुखद, स्वर्णिम व दुर्लभ अवसर - सभी गुरुभक्त समुदाय को सुलभ कराया था पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा ने। चैन्नईवासियों के पुरजोर एवं मार्मिक भावपूर्ण आग्रह को स्वीकार कर गुरुवर ने चैन्नई महानगर में अपना अंतिम चार्तुमास किया था इस नगर की रज-रज और कण-कण का हरेक अंश पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के चरण कमल के स्पर्श से स्वयं को धन्य और गौरवशाली अनुभवकिया था।

मुझे अपने अभी तक के जीवन में कई धार्मिक उत्सवों एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर मिला है लेकिन चैन्नई में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के चार्तुमास में आयोजित प्रवेश महोत्सव में प्रवाहित हुई भक्ति, ज्ञान एवं अध्यात्म की भागीदारी में डूबकी लगाकर जिस तरह असंख्य भक्तों और शिष्यों ने अपने जीवन की धारा को परिवर्तित करते देखा, वह मेरे जीवन का अविस्मरणीय क्षण था, मैंने अपने गुरु के प्रति शिष्यों की ऐसी आस्था और समर्पणभाव के दृश्य कम ही देखे हैं। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा ने अपने अध्यात्म एवं ज्ञानरुपी पथ का लोगों को अनुशरण कराते हुए देश-दुनिया में उन लाखों लोगों को अपना परम भक्त बनाया था जो अभी तक सच्चे ज्ञान की तलाश में थे। आचार्यश्री अपने शिष्यों पर जीभर कर और दोनों हाथों से आशीष लुटाते थें। ज्ञानपथ दिखाने और आशीषों की बारिश करने में गुरुवर के पास कोई कोताही या कंजूसी नहीं थी, यदि कहीं से कुछ विलंब है तो वह शिष्य या भक्त की ही और से होता था। आचार्यश्री तो ज्ञान के सागर थे, यह भक्त पर निर्भर करता था कि वह इस ज्ञानरुपी सागर में से कितना अमृत प्राप्त कर अपने जीवन को सार्थक स्वरुप प्रदान करता है।

हम यहां बात कर रहे है पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा अंतिम चैन्नई के चार्तुमास की सभी धार्मिक महोत्सव में ऐसा लगता था कि जैसे आज से करीब ढाई हजार वर्ष पूर्व शिष्य गौतम गणधर को भगवान श्रीमहावीर जैसे महान गुरु मिले थे और इस तरह पूज्य आचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी ने धार्मिक महोत्सव के परम पावन अवसर पर चैन्नईवासियों को गुरु के रुप में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के त्यागमय संत के मंगल दर्शन करवाये थे। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के सानिध्य एवं उनकी स्नेह व ममतामयी उपस्थिति के चलते यह चार्तुमास ऐतिहासिक बन गया था। चैन्नई महानगर की वीथिकाओं एवं चौराहों तक सभी श्रीसंघों में पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा जैसे महान गुरु के बारे में ही चर्चा हो रही थी।

मैं यहां वास्तविक स्थिति उल्लेखित कर रहा हूं। मैंने नगरवासियों को यह कहते हुए सुना कि- चैन्नई में गुरु आ गए है और अब इस नगर में धर्म पथ प्रशस्त होगा, अब गुरु ही बताएंगे कि इस धर्म का स्वरुप क्या है और यहां का प्रत्येक व्यक्ति किस तरह सुखी, समृद्ध व संतोषप्रद जीवन जिए। गुरु अपने शिष्यों में आशा और नवजीवन का संचार करते रहे थे आचार्यश्री चैन्नई के अपने भक्तों को ज्ञान की राह दिखा रहे थे। चैन्नईवासियों की लंबी प्रतीक्षा के बाद पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा यहां पधारथे। चैन्नईवासियों के कई धार्मिक प्रश्न और शंकाएं का समाधान अपने प्रिय महामना गुरु से प्राप्त किये थे।

चैन्नईवासियों के शिष्यों ने उम्मीद लगाई थी कि अब गुरुवर ही उनके जीवन को बदलेंगे और उन्हें ज्ञान बांटने के साथ मोक्ष का रास्ता बताएंगे। कहने को ग्रंथों में भी ज्ञान का भंडार है लेकिन शिष्यों में इतनी सामर्थ्य कहां कि वे बिन गुरु ग्रंथों से ही ज्ञान का संचय करके अपने जीवन की दशा और दिशा को बदल सकें।

आचार्यश्री कहते थे कि- ग्रंथ इतनी कड़वी दवा है कि उसे डायरेक्ट नहीं पिया जा सकता है। गुरुवर ही ग्रंथों की वाणी को सरल-सहज रुप में अपने शिष्यों को बताते-समझाते थे। गुरु ने अपने प्रवचन में इस बात का उल्लेख भी किया था। यह वास्तविकता है कि गुरु शिक्षक का कार्य करता है, गुरु ही अपने शिष्यों को उंगली पकड़कर मोक्ष का पथ दिखाता

है। मुझे गुरुवर के सानिध्य में रहकर इस बात का अनुभव हुआ कि गुरु का आर्शीवाद और उनके ज्ञानरुपी दुर्लभ अनमोल कोष में से रंचमात्र भी हासिल करने के लिये शिष्य में अपने गुरु के प्रति समर्पण भाव और गुरु के चरणों में एकाग्रचित्त आवश्यक है।

गुरु के दरबार में मनमानी, ढोंग और दिखावे का कोई स्थान नहीं है। गुरु के पास ऐसी अर्तींद्रीय शक्ति होती है कि वे अपने शिष्य के समर्पण भाव, निष्ठा और ज्ञान प्राप्ति की लगन को तत्काल पहचान लेते हैं, गुरुवर श्री नवरत्नसागर सूरीजी महाराज के पास जो भी शिष्य सच्चे ज्ञान की तलाश में आता था, उसे निराश नहीं होना पड़ता थाऔर उसे आचार्यश्री के दुर्लभ कोष के ज्ञानरुपी अमृतकलश में से कुछ ज्ञानसंजीवनी बूंदें मिल ही जाती थी, जिनसे शिष्य अपना जीवन धन्य बना सकता है। गृहस्थकाल में एवं दीक्षा लेने के पूर्व आचार्यश्री श्री नवरत्नसागरसूरीजी म.सा. का नाम रतन था। मेरा मानना है कि वे अपने शिष्यों के लिए आज भी रतन का ही काम कर रहे हैं, जिस तरह पारस के स्पर्श मात्र से लोहा भी स्वर्ण बन जाता है, ठीक उसी प्रकार आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी म.सा. के सानिध्य में आकर और उनका शिष्य बनकर कोई भी व्यक्ति अपने जीवन को स्वर्णिम बना सकता था।

आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी म.सा. एक सच्चे गुरु का दायित्व निभा रहे थे। गुरु को सदैव अपने शिष्य के सुखद व प्रगतिपूर्ण भविष्य की चिंता रहती थी। आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराज भी हमेशा यही चिन्ता करते थे, वे चाहते थे कि जो उनकी शरण में आए हैं, सिर्फ वे ही नहीं, बल्कि समग्र समाज, राष्ट्र, विश्व और मानवता चतुर्दिक प्रगति करें और हर तरफ सुख, शांति और समृद्धि की बरसात हो। चैन्नई में चले रहे चार्तुमास के दौरान आचार्यश्री के प्रवचनों का मूलसार इसी पर केंद्रित रहताथा कि मानव मात्र की भलाई कैसे हो और व्यक्ति के जीवन में बंद पड़े ज्ञान के द्वार कैसे खुलें, क्योंकि ज्ञान से ही व्यक्ति के जीवन में सुख और समृद्धि का सूत्रपात होगा। उनके आशीष वचनों में मानव जाति ही नहीं बल्कि पशु-पक्षियों के प्रति भी करुणा का दिग्दर्शन होता है। विश्व के प्रत्येक जीवधारी के कल्याण की ऐसी भावना कोई महामानव ही रख सकता है, आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी म.सा. अपने समय के ऐसे ही एक विशिष्ट महान संत थे जिनके मन में संपूर्ण जग के कल्याण की भावना थी। यही वजह है कि सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि विश्व के लाखों, करोड़ों, लोगों को यही लगताथा कि वर्तमान युग में आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी म.सा.ही ऐसी महान विभूति है जिनका शिष्य बनकर उनके चरणों में बैठकर ज्ञान का संवरण कर प्रभु प्राप्ति की राह जानी जा सकती है।

मैं यहां बढ़-चढ़कर नहीं बल्कि यथार्थ बात ही कह रहा हूं, आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराज जैसे गुरुवर सहस्त्राब्दियों में ही जन्म लेते हैं, यह हम शिष्यों का सौभाग्य है कि आचार्यश्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराज जैसे महान गुरु हमारे काल में अवतरित हुए हैं और हमें उनके दिखाए पथ का अनुगामी होने का सौभाग्य मिला है, आचार्यश्री के चार्तुमास के दौरान चैन्नई महानगर और इसके आसपास के अंचल में आशा और उत्साह की भावनाओं का संचार हुआ था, यह स्थिति सिर्फ चैन्नई नगर में ही नहीं बनी है बल्कि आचार्यश्री महाराज का चार्तुमास जिन-जिन स्थानों पर हुआ है एवं उनके परम सानिध्य में जहां भी ज्ञान की गंगा महोत्सव एवं पंचकल्याणक महोत्सव आयोजित हुए हैं वहां का वातारण इसी प्रकार गुरुभक्ति एवं श्रद्धाभाव से ओतप्रोत हो गया है। इसी कड़ी में चैन्नई महानगर का नाम भी जुड़ा है।

आचार्यश्री का चार्तुमास दीपावली तक चला। इस चार माह की अवधि में चैन्नई के शिष्यों, भक्तों और अनुयायियों को प्रतिदिन आचार्यश्री से ज्ञान, धर्म और अध्यात्म की शिक्षा प्राप्त करने का सौभाग्यशाली सुअवसर मिला। गुरुवर की चरणरज जहां भी गिरती थी वहां का परिवेश ही परिवर्तित हो जाता था। ठीक ऐसा ही चैन्नई में देखने को मिल रहा था, यहां के वातावरण में सुखद परिवर्तनों की सुगंध की अनुभूति स्पष्ट अनुभव की जा सकती है। सच्चे गुरु अपने शिष्यों और समाज का ध्यान आसपास के परिवेश में व्याप्त समस्याओं की ओर भी आकृष्ट कर उनके निराकरण के लिये शिष्यों को सचेत करते थे।

यह हम सभी अनुयायियों और समाजबंधुओं का दायित्व है कि हम अपने कर्म एवं आचरण को आचार्यश्री की शिक्षाओं के अनुरुप ढालें। यदि हमने आचार्यश्री के बताए पथ पर चलते हुए अपने जीवन में सकारात्मक दिशा में परिवर्तन किये तो हम अपने जीवन को खुशहाल, समृद्ध, शांतचित और संतोषप्रद बना पाएंगे। हममें से प्रत्येक शिष्य को गुरुवर के चार्तुमास की शिक्षाओं का उपयोग अपने जीवन की दिशा-दशा बदलने में करना है। यही हमारी गुरु के प्रति सच्ची भक्ति होगी।

युगों-युगों तक आपकी जीवनगाथा गाये आपश्री के चरणों पर श्रद्धा सुमन चढ़ाये

* डॉ. सुभाष जैन

सब कुछ अच्छा चल रहा था कोई ऐसी बात नहीं थी कि मन दुःखी हो क्योंकि सुपुत्र की शादी की सहमति पूज्यपाद गुरूदेवश्री से नवंबर 2015 में ही मैंने ले ली थी। उसी के अनुसार 2 फरवरी 2016 को विवाह का आयोजन होना था इसके पूर्व 29 से 31 जनवरी 2016 तक जिनेन्द्र भक्ति महोत्सव का आयोजन भी किया जा रहा था। 29 जनवरी2016 को प्रातःकाल श्री शीतलनाथ जिनालय दौलतगंज, उज्जैन में स्नात्र पूजन से कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रतिदिन की भांति उत्साह से पूजन पढ़ाना आरंभ किया सब कुछ ठीक चल रहा था कि अचानक ही झांझर स्नात्र के पाट पर रखे पीतल के दीपक से टकराई और दीपक लगभग 10-15 फीट पर जाकर गिरा, मैं कर्त्तव्य विमूड़ होकर देखता रह गया। अचानक यह क्या हो गया तभी पूजारी ने दीपक पुनः प्रज्जवलित कर दिया साथवाली बहनें भी बोली कोई बात नहीं, कभी हो जाता है, पर मैं चिंतित हो उठा यह क्या हो गया। परमात्मा की कोई अशातना नहीं, कोई गलती नहीं फिर ऐसा क्यों? पूजन पूर्ण होने के बाद शांति कलश आरंभ किया, जहां पर श्री शांतिनाथ प्रभु तिगड़े पर विराजित थे, उससे कुछ दूरी पर मूलनायक प्रभु के यहां शांति कलश चल रहा था, मैंने सहज रूप से शांतिनाथ परमात्मा की ओर निगाह डालकर मन में विचार किया कभी नहीं हुआ ऐसा आज कैसे हो गया? दीपक खंडित क्यों हुआ? और तभी परमात्मा पर लगा गुलाब का पुष्प नीचे गिर गया। यह देख फिर मन को शंकाओं ने घेर लिया। कुछ अनहोनी हो गई है पर कुछ घटित होने वाला है। मन में अस्थिरता लिये नवकारसी के पच्चखाण ले घर पहुंचा, धर्मपत्नी सुनीता को सारी घटना बताई तो बोली अरे! आज से अपने कार्यक्रम शुरू हो रहे है, शुभ-शुभ सोचो, बोलो। नीचे गुरूमंदिर में पाठ करते समय माफी मांग लेना। मैंने सोचा कोई गलती की नहीं तो माफी किस लिए। भारी मन से नीचे आया। गुरू श्री गौतमस्वामीजी गृहमंदिर में धूप दीप प्रज्जवलन कर श्री गौतम रासा का पाठ किया, मन को शांत रखने का प्रयास किया।

दोपहर में जिनालय में पंचकल्याणक पूजन श्री मनोहर इन्द्र महिला मंडल ने पढ़वाई। सब ठीक चल रहा था। परमात्मा आंगी तैयार हो गई, लगाने की तैयारी चल रही थी। यह सब होने के बाद शाम को आरती का समय 7 बजे रखा था। सभी पारिवारिक लोगों के साथ आरती के लिये मंदिरजी पहुंचे, भक्ति भाव से आरती कर घर के लिये रवाना हुए। तभी मेरा मोबाईल बज उठा देखा तो मुनिप्रवर श्री वज्ररत्नसागरजी म.सा.का फोन था। पूज्यश्री ने मुझे माध्यम से सूचित किया-सुभाषजी शीघ्र ही जैसे हो वैसे चैन्नई के लिये प्रस्थान करो। मेरे लिये गुरूआज्ञा, आदेश के समान रही है। मैंने कहा ठीक है, साहबजी शीघ्र निकलने का प्रबंध कर रहा हूं। कृपया कुछ बताईये तो सही? मुनिश्री ने जो बताया वह दिल बैठने वाला समाचार था। वे बोले- पूज्य आचार्यश्री अत्यधिक सीरियस है और वेल्लुर से पूज्यश्री को चैन्नई ला रहे है। यह सुनकर आंखें बहने लगी, मैं शीघ्र ही श्रीमतीजी-पुत्र को बुलाया और यह दुःखद सूचना उन्हें दी और कहा कि- मुझे शीघ्र ही चैन्नई जाना होगा। वे बोले-शादी? मैंने कहा- शादी हो जायेगी। इस बीच फोन लगातार बजने लगा। वाट्सअप पर मैसेज की बाढ़ आ गई, कई तरह के अलग-अलग तरह के मन को भ्रमित और शंका में डालने वाली सूचनाएं जाननेवालों के लगातार फोन। मैं पूरी तरह से अधीर हो गया था। इसी बीच फ्लाईट की टिकिट की प्रक्रिया चल रही थी, टिकिट बम्बई से अगले दिन या 30 नवंबर को मिल रहा था, बुक किया।

यह तैय हो चुका था कि पूज्यपाद गुरूदेवश्री के साथ अत्यधिक गंभीर घटना घटित हो चुकी थी, मेरे चैन्नई सम्पर्कों से लगातार फोन से चर्चा करने पर वाट्सअप के सब मैसेज झूठे सिद्ध हो गये, चैन्नई से यह 100 प्रतिशत प्रमाणित हो गया कि गुरूदेव ने यह संसार छोड़ दिया है। अब चैन्नई उन्हें लाया जा रहा है। मेरे जीवन की सबसे बुरी खबर और यह अपूरणीय क्षति थी। रात के करीब 1-2 बजे का समय हो गया था। जाने के लिये हल्का सा बेग तैयार किया, घर में वातावरण मरघट सा हो गया था। सभी स्तंभित थे यह क्या हो गया। श्रीमतीजी ने साहस बंधाया, कहा- आप जाऊ हम सब देख लेंगे। इन्दौर जाने के लिये सुबह 5 बजे वाहन की व्यवस्था की। आगे क्या होगा, यह भी पूछने पता करने का सामर्थ्य नहीं बचा था, सब लोग आराम में चले गये थे, मैं बैठा-बैठा भावी का चिंतन करता 5 बजे का इंतजार कर रहा था। बराबर 5 बजे मैं घर से रवाना हुआ। सोचा, रास्ते में गाड़ी रोककर एक-दो फोन लगाकर बात तो कर लुंगा। बम्बई से श्री प्रफुल्लभाई से चर्चा होने पर यह पक्का पता चल गया कि पूज्य गुरूवर की देह इन्दौर लाकर भोपावर में अग्नि संस्कार होगा, यह निश्चित हो चुका है, आप चैन्नई मत जाओ, दोपहर बाद पूज्यश्री की पुण्य देह चार्टर प्लेन से इन्दौर पहुंचेगी और भोपावर महातीर्थ में अग्नि संस्कार होगा। वापस घर लौट आया। इसी बीच लगातार मोबाईल बजने

लगा। सारी स्थिति स्पष्ट हो गई। सबसे पहले फ्लाईट की टिकिट निरस्त करवाई। इन्दौर में सुनीलजी से चर्चा की, देह दोपहर में आने की जानकारी थी, मैं दोपहर में (30 जनवरी) को इन्दौर पहुंच गया। चार्टर प्लेन के आने में परिवर्तन होता रहा, शाम 6 बजे एयरपोर्ट पहुंच गये, वहां बहुत बड़ी संख्या में गुरूभक्त इंतजार में थे। मेरे साथ भाई सुनीलजी थे, बार-बार प्लेन के आने का समय बदल रहा था। गुजरात, महाराष्ट्र को भी अनेक गुरूभक्त पहुंच गये थे। बड़ी संख्या में श्राविका बहनें भी थी। एक रथ से गुरूदेव की देह को सड़क मार्ग से भोपावर हेतु हुए राजगढ़ ले जाने की योजना बनी थी। राजगढ़ से पुनः भोपावर महातीर्थ जहां गुरूदेवश्री की पुण्य देह का अग्नि संस्कार किया जाना था।

लगभग रात 11 बजे जानकारी मिली कि प्लेन आने ही वाला है इसी बीच चैन्नई की फ्लाईट से भाई रमेशजी मुथा पहुंच गये थे। गुरूदेव की देह के साथ मोंटेक्स ग्रुप के श्री रमणभाई तथा अन्य दो श्रावक चैन्नई से आनेवाले थे। रमणभाई 29 जनवरी को विदेश जाना थे वे एयरपोर्ट पहुंच भी गये थे परन्तु जैसे ही उन्हें समाचार मिले उन्होंने विदेश जाना निरस्त कर चैन्नई प्रस्थान किया और फि र लगतार 31 जनवरी तक देह संस्कार तक मार्गदर्शन देते हुए कार्य करते रहे। रमेशभाई, प्रकाश सिरोहीवाला आदि अनेक वरिष्ठ श्रावक पहुंच गये थे। देर रात इन्दौर एयरपोर्ट से गुरूदेव के प्रति अतुलनीय प्रेम प्रदर्शित करनेवाले श्रावकों की नम आँखों के सामने भव्य रथ में देह को विराजित कर एक विशाल काफि ला भोपावर तीर्थ की ओर रवाना हुआ, लगभग दो किलोमीटर तक वाहन ही वाहन थे। लोग थे, आंसु थे और गुरूभक्तों की बड़ी भीड़ थी। सम्पूर्ण रास्ते में आनेवाले संघ के श्रावक-श्राविका गुरूदेव की अंतिम झलक पाने को बेताब थे, प्रभातवेला में भोपावर पहुंचे और वहां से शीघ्र ही भोपावर से राजगढ़ रवाना किया गया। नवयुवकों और भक्तों की बड़ी भीड़ साथ में थी, इधर सम्पूर्ण राजगढ़ बंद था, हजारों हजार लोगों के हुजुम से सड़क, मकान भरे थे, चारों ओर मानव ही मानव दिखाई दे रहे थे। राजगढ़ श्री संघ के द्वारा भी राजगढ़ गुरूदेव की देह के अंतिम दर्शन करवाने के लिये रथ तैयार करवाया गया था उसी पर देह को विराजित किया गया साथ में भाई राजेशजी बैठे थे जो निरंतर रूदन कर रहे थे। गुलाल जप-जप नंदा जप भदा के नारों के भी गुरूदेव की यह अंतिम यात्रा जिस पर गुरूदेव चलते थे, निकल पड़ी, जिसको देखों उसकी आंखों में आंसु थे। 5 किलोमीटर मानव भेदनी से भरी यह अंतिम यात्रा लगभग 11 से 12 बजे के मध्य भोपावर पहुंची जहां पर सिर्फ लोग और लोग ही थे, नूतन मंदिर की शिखर पर भी चढ़ गये थे।

पूज्य मुनिप्रवर श्री ऋषभचंद्रविजयजी म.सा. आदि ठाणा, रमणभाई-रमेशभाई जैसे हजारों हजार श्रावकों के बीच श्री नरेन्द्र वाणीगोता ने गुरूदेव के अंतिम संस्कार संबंधी चढ़ावे आरंभ किये। चढ़ावों के साथ वाणीगोता ने जो गुरूभक्ति गीत प्रस्तुत किये उससे सबके हृदय द्रवित हो गये, आंखों में से आंसुओं का सैलाब निकल रहा था, बहुत मुश्किल से लोग अपने आप को रोक पा रहे थे, चढ़ावों ने अद्भूत माहौल खड़ा कर दिया था। गम, दुःख और गुरूदेव से बिछड़ने का वातावरण पर पूरा प्रभाव था। सभी चढ़ावों में गुरूदेव की गरिमा के अनुकूल भक्तों ने भाग लेकर चढ़ावों को नई ऊंचाईयां प्रदान की, अंतिम चढ़ावा जो अग्नि संस्कार का थो उसे भक्तों लेने की होड़ में बहुत प्रयास किये, रमणभाई ने भी अपनी उपस्थिति और अपने प्रभाव का उपयोग कर भक्तों को प्रेरित किया। श्री वेलजीभाई मणियार का सम्पूर्ण परिवार 50 से अधिक वर्षों से पूज्य पंन्यास श्री अभ्युदयसागरजी म.सा. और गुरूदेवश्री का परम भक्त रहा है। मणियार परिवार शंखेश्वर-सूरत से पूज्यश्री के अग्नि संस्कार के लिये 252 किलो चंदन की लकड़ी भी साथ लेकर आया था, लगभग 50 से अधिक लोग आये थे। रमणभाई की प्रेरणा से मणियार परिवार ने अपने वरिष्ठ वेलजी भाई की उपस्थिति में पुत्र श्री ईश्वर एवं अनिलजी मणियार ने 2 करोड़ 65 लाख रूपये में अग्नि संस्कार का चढ़ावा लेकर अद्भूत गुरूभक्ति का परिचय दिया।

लगभग 3 बजे पूज्यपादश्री की देह को डोली में विराजित कर श्री शांतिनाथ परमात्मा यहां पूर्व में विराजित रहे उस स्थान पर अग्नि संस्कार की क्रिया सम्पन्न होनी थी, डोली को नारों के बीच हजारों-हजार आंसु बहती आंखों से अंतिम बिदाई के लिये यात्रा आरंभ हुई, कुछ ही समय में वहां पर डोली पहुंच गई। मणियार परिवार के साथ सभी वरिष्ठ सुश्रावक भी वहां एकत्रित हो गये थे। अंतिम संस्कार की क्रिया विधि को पूर्ण करते हुए चंदन की काष्ठ के मध्य गुरूदेव की देह को स्थापित कर दिया गया। मणियार परिवार के वेलजीभाई, ईश्वर, अनिलजी आदि भी वहीं थे, कुछ ही देर में देह अग्नि को समर्पित कर दी गई। एक युग की अमर कहानी पूर्ण हो गई। सिर्फ यादें ही बाकी रह गई है। यह तो निश्चित है कि पूज्यपाद गुरूदेव मालव भूषण जैनाचार्य श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा का युग जैन-जगत में हमेशा स्मरण में रहेगा। पूज्यश्री भक्तों के हृदय में हमेशा विद्यमान रहेंगे। पूज्यश्री इस संसार में अपनी देह छोड़कर जिसभी लोक में- (मुझे कुछ लोगों ने चर्चा में बतलाया था कि गुरूदेव ने 12 वें देवलोक में उच्च कोटी के देव के रूप में भव परिवर्तन किया है) गये है वहां से हम पर आर्शीवाद बरसाते रहेंगे। गुरूदेव कहते भी थे कि- मेरा आर्शीवाद सभी के लिये है। बहुत सी बातें इसमें छूट गई है और भी बहुत कुछ लिखने जैसा है।

उपकारी के उपकार को कैसे भूला सकते है ?

✻ मुनिश्री मोक्षरत्नसागरजी म.

पूज्य सागरजी म.सा. के 33 प्रायः शिष्यों में एक पूज्य दादा गुरुदेवश्री चंद्रसागरजी म.सा. । दादा गुरुदेवश्रीजी के प्रथम शिष्य गच्छाधिपतिश्री उपकारी आ.भ.श्री देवेन्द्रसागर म.सा. । जिनके प्रायः 8 वें शिष्यरत्न मेरे नानाजी म.सा. पूज्य श्रीनेमसागरजी म.सा. । पूज्य नेम सा. म.सा. की दीक्षा संवत 2010 नवसारी-कालियावाड़ी (गुजरात) में हुई थी। 55 साल की वय में संयम स्वीकारा। संयमी बनने के बाद नानीजी म.साध्वी तत्वरसाश्रीजी म. और मासीजी म. साध्वी मोहजिताश्रीजी म.की प्रेरणा देकर मुझे भी संयमी बनाया। पू.नेम सा. म.सा. प्रायः 25 साल संयम पालन करके गुरुदेव श्रीजी को समर्पित रहकर बेचराजी रामपुरा के बीच कालधर्म हुए। नानीजी म. साध्वी श्री तत्वरसाश्रीजी म. दीर्घ संयमी साध्वी मृगेन्द्र श्रीजी म. की शिष्या बनी मासीजी म. मोहजिता श्रीजी म. नानीजी म. श्री तत्वरसाश्रीजी म. की शिष्या बनी। माँ-बेटी ने संयम साथ में लिया लेकिन नानीजी म. साध्वी तत्वरसा श्रीजी म. पालीताना में शत्रुंजय विहार धर्मशाला में कालधर्म हुए। मासी म. साध्वीजी श्री मोहजिता श्रीजी म. ने 1- साध्वी भार्दवता श्रीजी म. 2- बेन म. मोक्षरता श्रीजी म. 3- साध्वी विशुद्गुणाश्रीजी म. 4- संयमोपकारिणी बेन म. साध्वी विरण्ताश्रीजी म. 5- साध्वी प्रशमरता श्रीजी म. को प्रतिबोध देकर अपनी शिष्याएं बनायी।

श्री शंखेश्वरजी में वि.सं. 2045 पोष वदि-10 से प्रारंभ 10-02-1989 उपधान तप में महा सुदी-5, 11 उपवास करके **पू.उपकारी गुरुदेव मालवभूषण आ.भ.श्री नवरत्नसागरसूरीश्वरजी म.सा.की पुनित निश्रा में मोक्षमाला 29 दिन उपधान तप करके मैंने पहनी ।** मासीजी म.साध्वी मोहजिताश्रीजी म., संयमो पकारिणी बेन म.साध्वी विरणता श्रीजी म.आदि ठाणा भी वहीं बिराजमान थे । मैंने शंखेश्वरजी दादा के पास प.पू.उपकारी गुरुदेव श्रीजी से 11 उपवास में प्रायः चौथे दिन चौथा व्रत (ब्रह्मचर्यव्रत) अपनी मर्जी से स्वीकारा। प.पू.गुरुदेव श्रीजी जाप कर रहे थे । मैं खड़े-खड़े 100 लोगस्स का काउसग्ग स्थाप्नाचार्यजी के पास कर रहा था। मुझे कमजोरी के कारण चक्कर आये, मैं प.पू. गुरुदेवश्रीजी की गोद में गिरा। मासीजी म. बेन ने कहा- आपश्रीजी का ही शिष्य बनेगा। दूसरा उपधान तप प.पू.उपकारी आ.भ.श्री अशोकसागरजी म.सा.के पास क्रियाकारण उपकारी आ.भ. श्री मतिचंद्र सा. म.सा. के पास पालीताना आगम मंदिरजी में किया था । तीसरा उपधान तप प.पू. उपकारी आ.भ.श्री रामसूरिजी म.सा. (डहेलावाले) के पास नवसारी-कालियावाड़ी में किया। मासीजी म. ने खुद सौ ओलीजी नहीं कि लेकिन अपनी सभी शिष्याओं 1- साध्वी भार्दवताश्रीजी म. सौ ओलीजी पारणा संसारी पक्षे पति पूज्य नित्यवर्धन सा.म.सा. के साथ श्री भोपावरजी महातीर्थ में 24-1-1994 के दिन किया था। 2- बेन म.साध्वी मोक्षरता श्रीजी म.ने सौ ओलीजी का पारणा गच्छाधिपतिश्री उपकारी आ.भ.श्री सूर्योदयसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में मुंबई किया था । 3- साध्वी विशुद्गुणाश्रीजी म. ने नवसारी में 22 साल पहले चार्तुमास पहले किया था । 4- संयमोपकारिणी बेन म.साध्वी विरक्ताश्रीजी म.ने सौ ओलीजी का पारणा श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र में प.पू.उपकारी गुरुदेव श्रीजी की निश्रा में गिरिविहार धर्मशाला में किया था। 5- साध्वी प्रशमरताश्रीजी म.ने सौ ओलीजी का पारणा शिहोर-सौराष्ट्र में किया था।

उपकारिणी मासी म. साध्वी मोहजिता श्रीजी म. सूरत गोपीपुरा लीमड़ी के उपाश्रय में 8-11-2020 आसोज-7 वदी, रविवार, 85 साल की उम्र और 62 साल का दीक्षा पर्याय के बाद कालधर्म हुआ था।

वात्सल्य विधाता,
सरलं सुशान्तम्
पुष्पेण तुल्यं-मधुरं स्वभावम् !
वाणी विज्ञं, निज आत्मलिनम्
परमार्थ पुरुषार्थी महायतीन्द्रं
मम हृदयं, गुरुवरम्
प्रणमामी नित्यं
गुरु श्री नवरत्नसागरम् ।

महापुरुष वही, जिसका नाम मृत्यु के बाद भी लिया जाये

✻ चन्द्रशेखरसागर सूरी

मुझे जीवन में संसारिक सुख नहीं आध्यात्मिक सुख का भाव ही संयम मार्ग पर ले गया। इस सुख में वृद्धि की चाहना थी। अलौलिक सुख ऐसा सुख जो दिल में स्थाई रुप से बना रहे, ईश्वर से जो प्रीति चाहिये भी वह भी उस समय तक नहीं मिली थी फिर सागर समुदाय के पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी का परिचय मिला उनके बारे में क्या कहूं उनके तप, जप, आचरण के बारे में क्या कहूं सभी तो अनमोल है। ब्रह्म तेज से जिनका मुखमंडल दैप्तियमान रहता था, निश्चल, जल से निर्मल, सहज अनगिनत दिलों पर जिनका राज्य था और है, ऐसे पूज्यपाद आचार्यश्री जिनके बारे में कुछ भी कहने के लिये शब्द कम पड़ जाये पर मन नहीं भरे। आज पूज्यश्री को याद करते हुए मुझे भी ऐसा लग रहा है वे आज भी लोगों के दिल में दिमाग में, निगाह में, जबान में, विचार में बसे हुए है। पूज्यश्री के सानिध्य में मैंने ऐसे सुख का अनुभव किया जिसे अलौकिक सुख कहते है। आज भी पूज्यश्री को याद कर मैं इस अनंत सुख का अनुभव करता हूं।

संसार को आलोकित करने के लिये सूर्य निरंतर तपा करते हैं। अपने अविराम तप की ज्वाला में हमेशा जलते रहकर ही वे धरती के दोनो गोलार्द्धों में प्राण और ऊर्जा का संचार करते हैं। मेघों का अभाव कहीं जीवन ही न सुखा डाले, इसके लिये सागर सतत बड़वानल में जला करते हैं। अपने इस अनवरत अन्तर्दाह को सहकर वे उस संरजाम को जुटाने में संलग्न करते हैं, जो तपते-झुलसते जीवन को वर्षा की शीतल फुहार से शांति दे सके। सितारे हर रोज चमकते हैं, ताकि मनुष्य अपनी अहन्ता में ही न पड़ा रहकर विराट ब्रह्म की प्रेरणाओं से पूरित बना रहे। अपनी हर श्वास के साथ संसार भर का जहर पीने और बदले में अमृत उड़लने का पुण्य-पुरुषार्थ वृक्षों ने कभी बन्द नहीं किया। कर्म का परोपकार में अर्पण, सृष्टि की मूल प्रेरणा है। जिस दिन यह प्रक्रिया बन्द हो जाएगी, उस दिन विनाश ही विनाश, शून्य ही शून्य,अंधकार ही अंधकार के अलावा और कुछ भी नहीं रह जाएगा।

परोपकार की इस पुण्य-प्रक्रिया को जारी रखने के लिये ही नदियाँ राह में पड़ने वाले पत्थरों की ठोकरें सहकर भी सबको जलदान करती रहती है। पवन जमाने भर की दुर्गन्ध का बोझ सहकर भी नित्य चलती है और प्राण-दीपों को प्रज्वलित रखने का कर्त्तव्य पालन करती रहती है। फूल हंसते और मुस्कराकर कहते हैं- काँटों की चुभन की परवाह न करके संसार में सुगन्ध भरने और सौन्दर्य बढ़ाते रहने में ही जीवन की शोभा है यही काम पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी ने भी किया था। कोयल कुकती है तो उसके पीछे जो आभा प्रतिध्वनित होती है, उसमें कोलाहल पूर्ण संसार में माधुर्य बनाए रखने का शान्त सरगम गूंजता प्रतीत होता है। अपने नन्हें से बच्चे की चोंच में दोना छालकर चिड़िया अपने वंश का पोषण ही नहीं करती, अपितु असमर्थ और अनाश्रितों को आश्रय देने की परम्परा भी प्रकाश डालती है।पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी ने भी अनाश्रितों को सहारा देने का काम किया था।

जीवन की मूल प्रेरणा है, परमार्थ और लोक-कल्याण के लिए भावभरा आत्मर्पण। ठीक-ठीक आत्मर्पण किए बिना परमार्थ साधना पूरी नहीं होती। आत्माहुति जितनी संपूर्ण होगी, परमार्थ की ज्वाला उतनी ऊँची उठेगी। दीप जितना अधिक अपने को जलाता है, ज्योति उतनी ही अधिक प्रखर होती है। जड़े, अपने को जितनी अधिक गहराई में दबाए रखती है, वृक्ष उतने ही अधिक मजबूत होते और ऊंचे उठते हैं। जीवन का आधार और ऊर्जा प्रदान करने वाला प्रत्येक घटक इसी पुण्य-परम्परा में संलग्न है। सृष्टि में संतुलन बनाए रखने के लिए निर्जीव कण तक इस पुण्य-प्रक्रिया को जारी रखाने में जुटे हैं पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी ने भी अपने जीवन में यही काम किया था । पर ऐसा नही करने वाला स्वयं को जीवित ही नहीं समझदार भी समझने वाला मनुष्य अपने समाज की उपेक्षा कर दे, परमार्थ से मुंह मोड़ लें, उसकी श्रीवृद्धि और सौंदर्य निखारने का प्रयत्न न करें इससे बढ़कर लज्जा और आपत्ति की बात उसके लिये और क्या हो सकती हैं ? इसी लिये सबको पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीजी सा जीवन जीना चाहिये।

गुरु अवतरण दिवस : 31 मार्च 2021 चैत्र वदी-3

तारण-तरण का अवतरण:-

जिस महामानव की जन्मतिथि चैत्र वदी-3 को राष्ट्रीय स्तर पर अनेक श्रीसंघो में स्मृति दिवसके रुप में मनाया जाता हो, निःसंदेह उनके निर्विकार बहुमुखी प्रतिभा पूर्ण आचरण की अक्षय निधि में लोकमंगल की मांगलिक भावनाओं के रत्न अवश्यमेव उपलब्ध रहते हैं।

> *गुरुवर उसी मनुष्य को श्रेष्ठ मानते थे, जिसमें मनुष्यता, मानवता और इंसानियत निहित होती है।*

गर्भावस्था में माँ मणिबाई ने 14 स्वप्न देखे या नहीं, पर जब उनकी ममता भरी नजरें नवजात शिशु को निहारती थी तो बालक में अन्तर्निहित दिव्यात्मा की छवि दिखाई देती है। परिवारजन आलोकिक, प्रफुल्लित चेहरे पर दिव्य मुस्कुराहट की रसधार को देख-देख ऐसे निहाल हो गये कि कोई अनमोल रस पा लिया हो और बालक का नाम रख दिया ''रतन''। बहते प्रवाह के संग-संग मन डोलने लगा। माँ मणिबाई की धार्मिक जीवन शैली ने नन्हें चित को संस्कारमय कर दिया। माँ मणिबाई की आध्यात्मिक विरासत को पता नहीं कब रतन के बढ़ते जीवन पर वैराग्य का परवान चढ़ने लगा।जीवन और मृत्यु के दोनों किनारों के उस पार जाने को उद्यत धार्मिक परिवार में जन्मे असाधारण आत्म सम्राट ने छोटी सी वय में श्वेतांबर का भेष धारण कर परमेष्ठी होना निश्चय कर लिया। पूज्यपाद गुरुवर नवरत्नसागर सूरीजी स्वपरकल्याण के साथ-साथ अपने भक्तों शिष्यों और सहपथिकों को भी जीवनकाल में पार लगाते रहे।

तारण-तरण के अवतरण के रुप में एक कुशल नाविक की भांति स्वयं भी तिर रहते रहे और दूसरों को भी तारते रहे।

नवरत्न श्रमण-यथा गुण तथा नामांतरण:-

सच्चिदानंद हैं गुरुवर जिनका सद्‌चित सदैव शाश्वत आनंद में, परमानंद में रमण करता रहता था। गुरुवर का वात्सल्यमय अन्तःकरण उत्साह और आशा की ऊर्जा में निमग्न रहता था। गुरुवर के मुस्कराते हुए होंठ एवं हर्षित चेहरा अपने आस-पास के पूरे वातावरण को खुशनुमा कर देताथा। यह लिखना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं होगा कि दीक्षागुरु मालवोद्धारक व्याकरण विशारद आचार्य भगवंत श्रीमद् चन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. ने मुनिवय के नामांकन से पूर्व रतन के नयनों की पुतलियों एवं पलकों के मध्य प्रवाहित प्रसन्नता के प्रवाह को जरुर देखा होगा, तभी तो नवरत्न नाम रखा होगा '' **आचार्यश्री नवरत्न सागर**'' प्रफुल्लता का सागर और तपश्चरण आलोक आपके नाम को पल प्रति पल चरितार्थ करता रहेगा। गुरुवर की छवि उन परम्परावादी साधु या संन्यासी जैसे नहीं थी, जिनका ललाट तनी हुई भौंहों का चित्रपट हो, जिनकी आँखों में सदियों पुरानी उदासीनता फैली हो, और चेहरा गंभीरता का मुखौटा पहना हुआ हो। गुरुवर तो वो श्री महावीर श्रमण थे, जो मुस्कराते, खिलखिलाते जीवन को प्रकाशवाही आनंद और शाश्वत सुख से प्रगाढ़ करता है। वात्सल्य निधिश्वर गुरुवर के सानिध्य और आगमगतचर्या पूर्ण सत्संग में शिष्यों को प्यार, ममत्व, स्नेह, बंधुत्व की अभ्यासमाला का अध्ययन-अध्यापन कराते थे।

नीरवता में नवचेतना-नवजागरण:-

पतझड़में वृक्षों से पत्ते झरने लगते हैं, नग्न शाखाएं निरीह दिखाई देन लगती है, भीषण गर्मी में रास्ते सुनसान दिखाई देने लगते हैं, पक्षियों के कलरवमंद होने लगते हैं और नदियों का प्रवाह सूखने लगता है। यह प्रकृति के मौसम का अपना एक रुप है। इसी भांति आज का मानव मन उदासीनता एवं गहरी नीरवता में हतोत्साहित हो जाता है। प्रमादता एवं आलस्यता ने जीवन की गति को जैसे मन्थर कर दिया है। ऐसे शिथिल एवं निष्क्रिय सुस्ती भरे वातावरण में सरलमना आचार्यश्री की अतिशयकारी उपस्थिति मात्र से ही चैतन्य जाग्रति का लोकाकाश स्वयं ही निर्मित एवं प्रकाशमय हो जाता था। गुरुवर कहते थे कि- अज्ञानता मौसम की भांति है, जैसे पतझड़ के बाद का बसन्त का आगमन होता है वैसे ही मानव के जीवन में सद्‌गुरु का सानिध्य उत्साह और कर्मशीलता का वातावरण पैदा करता है। मनुष्य जीवन को जिन्होंने निरर्थक माना है और नकारात्मकता ने जिन्हें घेर रखा है ऐसे मानव को गुरुवर मूढ़ मानते थे। गुरुवर कहते थे कि- अचेतन मनुष्य अपने स्वयं निकृष्टमानकर सबसे बड़ा पाप करता है।

अपने प्रति तुच्छ विचार रखना सबसे बड़ा अपराध है।

''सम्पूर्ण मानव जीवन निर्माण'' की गुरुवर की पावन प्रेरणा से एक नवचेतना का उद्‌भव हो जाता था, लोक व्यवहारी आध्यात्म के शंखनाद से जगत जागृत हो जाता था। गुरुवर उसी मनुष्य को श्रेष्ठ मानते थे, जिसमें मनुष्यता, मानवता और इंसानियत निहित होती है। एक-एक व्यक्ति में उपलब्ध सुसुप्त अन्तर्निहित श्रेष्ठता का, आन्तरिक ऊर्जा और क्षमता का, सोयी हुई सिद्धियों का अनावरण कर उनके अज्ञान तिमिर को मिटाना गुरुवर के अथक प्रयास रहता था। सुख की चाहत रखने का अधिकार गुरुवर उन्हें ही देते थे जो यथार्थ में ऐसा मानव बनना चाहता था जो मानवोचित सद्‌कार्यो में संलग्न होना चाहता था, मानवोत्कर्ष हेतु पुरुषार्थ में अनवरत प्रणरत रहना चाहता था और भय से परे आत्मान्वेषण में तत्पर और तल्लीन रहना चाहता था। मनुष्य की गरिमा और गौरव की प्रमाणिकता को उसके पुरुषार्थ और कर्मशीलता की कसौटी पर परखते हुए गुरुदेव कहते थे कि- अकर्मण्यता एवं निष्क्रियता जीवन की ऊर्जा बुझाने के लिये एक पानी के फव्वारे के तुल्य है।

ज्ञान-गंगा संवारती हैं-जन-जन का जीवन मरणः-

हिमालय के शिखर से बहती गंगा की धाराएं सम्पूर्ण वसुन्धरा को हरा-भरा कर रही है, प्यासों की प्यास बुझा रही है, उसी भांति गुरुवर की वाणी आज भी सर्वत्र ज्ञानपूंज से मानव मन को ज्योतिर्मय बना रही है, कई वर्षो तक नग्न पद विहारी रहे पूज्यश्री जैसे यायावर संत ने अपने उपदेशों एवं सद्‌बोधनों में एक ही आचरण का अनुसरण किया है, जन-मन का, आमजन का और जन-जन का जागरण। अन्तः चेतना के दिशाबोध , जात-पांत वर्गभेद, अमीर-गरीब ऊँच-नीच से परे हजारों की संख्या में उपस्थित जन समुदाय से भरी धर्म सभा में गुरुवर मात्र बोलते ही नहीं थे, वो तो अपना ह्रदयांचल खोलते थे। अपनी बौधगम्य सरल भाषा से मनुष्य के भूगोल एवं व्याकरण की व्याख्या जब करते हैं तो स्वकल्याण एवं सर्वनिर्माण की परिभाषा बोलने लगती थी। परिवार, रिश्ते-नाते, समाज और राष्ट्र से अदृश्य होती संवेदनशीलता को बचाने हेतु तुष्टिकरण नहीं समदृष्टिकरण के पक्षधर गुरुवर एक असाधारण चिंतन सौंपते थे।

गुरुचरणों में मंगल-पाठ-मंगलाचरण

जिन्होंने जीवन और मरण दोनों को ही साधने का साधना मार्ग पर चलने का तय किया था, अब वो जन्म दिवस जैसी बातों से बहुत उच्च स्थान प्राप्त कर चुके है। हम भक्त और शिष्य हैं जिनका जीवन गुरुवर की कृपादृष्टि से उपकृत हो रहा है गुरुवर के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हेतु, प्रतिवर्ष स्मृति दिवस का आयोजन गुरुभक्त देशभर में करते हैं। गुरुवर के प्रति अपनी विनयांजलि प्रेषित करते हैं। गुरुवर के गुणानुवाद स्वरुप देशभर में विधि विधान का आयोजन कर मंगल पाठ और मंगलाचरण का अर्ध्य गुरुचरणों में समर्पित करते हैं।

मेरे ह्रदय में स्थापित मेरे आराध्य गुरुवर आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. के 78 वें जन्मोत्सव पर गुरु चरणों में भावभरी आदराजंलि।

गुरुदेव आचार्यश्री

आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. जिनके तेजस्वी व्यक्तित्व को देखकर ईश्वरीय एहसास होता था जिनके साथ रहते-रहते मन तप और त्याग की और अग्रसर हो उठता था और उनकी मुस्कराती मुख मुद्रा देखकर भगवान श्रीमहावीर के दर्शन होते थे और जिनकी चर्चा का असर यूं होता था कि साथ-साथ रहते मन वैरागी हो उठता था, रत्नत्रय के कठिन मार्ग पर उन्हें इतनी सरलता एवं सहजता के साथ चलते देख उनके साथ चलने के मचल उठता था उनका आध्यात्मि ज्ञान मन के अंधेरे को दूर करता था वे ऐसे सन्त थे जो अपने आचरण से हजारों-हजारों लोग को नैतिकता का पाठ पढ़ाकर धर्म की और अग्रसर करते थे।

पूज्यपाद गुरुदेव आचार्यश्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा का कैसे वर्णन करूं कौन सी उपमा धरूं आप सब उपमाओं से परे थे अगर आपको सूरज की उपमा देता हूं तो सूर्य में आग है, चांद की उपमा देता हूं तो उसमें दाग है, हे गुरूवर आप तो ऐसे है ना आप में आग है, ना दाग है आपमें तो सिर्फ वैराग्य है।

एक दिव्य कल्पवृक्ष : नवरत्नसागर - डॉ. सुभाष जैन

वैचारिक *और धार्मिक क्रांति के द्वारा जनमन में जो श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक बन जाये, जो जन मानस में धार्मिक आस्था जागृत कर दें, जिनका सानिध्य नैतिक मूल्यों के प्रति आदर पैदा कर दें जिनका सम्पर्क जीवन में सदाचरण का भाव पैदा कर दें, ऐसे महापुरुष का मालवा में उद्भव हुआ था, हाँ ! मैं मालवा के प्राण रहे अचिन्त्मय प्रज्ञा शांति के धारक पूज्यपाद* ***गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी महाराजा*** *की ही बात कर रहा हूं। गुरुदेव का व्यक्तित्व बढ़ा ही निराला था, आपके दर्शन करने मात्र से मन प्रसन्न हो जाता था। पूज्यश्री के पुण्य प्रभाव से सभी धर्मावलम्बी, राजनेता, आपश्री के चरणों की सानिध्यता पाने को अपना सौभाग्य मानते थे।*

घोर अशांति के युग में अपने परायों से परेशान, सब कुछ होते हुए भी जिन्दगी में नितांत अभाव महसूस करने वाले निराशा और हताशा से भरे लोग ही नहीं जीवन को उत्थान पथ की ओर ले जाने के भाव रखनेवाले सभी लोग पूज्यश्री को प्रकाशपुंज मानते थे। विषम परिस्थितियों से घिरे हर आयु का जनमानस पूज्यश्री के साथ में शांति का अनुभव पाता था। सम्बलता प्रदान करनेवाले वैराग्यवासित पूज्य मालव भूषण का वात्सल्य भाव सबके लिये था और सबको प्रभावित करता था। आपश्री के पास आनेवाला कभी भी निराश नहीं गया। सम्पर्क में आनेवाला निश्चित रुप से कुछ न कुछ पाकर ही गया। आपके व्यक्तित्व में ! सहृदयता का अद्भूत समन्वय था, ऐसा व्यक्तित्व ही जनमानस की श्रद्धा का केन्द्र तथा आराध्य बनकर परमेश्वर का रुप धारण करता है।

प्रत्येक काल में कुछ व्यक्तित्व ऐसे होते है जो अपने जीवन, कृतित्व एवं धर्म को समर्पित महान कार्यो से युगों-युगों तक के लिये अपनी विशिष्ट पहचान बना लेते है और अखिल विश्व के मानसपटल पर अपनी अनुकरणीय आध्यात्मिक उपस्थिति को स्थाई रुप से उत्कीर्ण कर देते है। गुरुदेव के जीवन व्यक्तित्व में मैंने हमेशा ही सकारात्मक पक्ष ही देखा है, ***मैं गुरुदेव के साथ बिताये, अपने जीवन के समय को सर्वाधिक अनमोल और अविस्मरणीय मानता हुं और यह भी सत्य है कि गुरुदेव का जाना जीवन की सबसे बड़ी हानि है, इससे बड़ा कोई नुकसान हो नहीं सकता है।*** *पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्न सागर सूरीश्वरजी महाराजा के सामिप्य और सानिध्य में आप जैसे महान व्यक्तित्व के मानवीय और दैवीय स्वरुप को बहुत निकटता से देखने का मौका मिला। पूज्यश्री धर्मिष्ठों और भक्तों का ध्यान इस बात के लिये रखते थे कि वे जैनत्व की चर्या से विमुक्त न हो। गुरुदेव सबको समय देते थे, ऐसा नहीं लगता था कि वे कुछ खास लोगों को ही आर्शीवाद देते है वे सबके थे और सबके लिये समर्पित थे, वे निस्पृहः संत थे।*

पूज्यश्री ने अपने संपूर्ण संयम जीवन में कभी भी श्रमणत्व की मर्यादा को भंग नहीं होने दिया, जीवन के अंतिम दिनों तक आपश्री ने इसका कठोरता से पालन किया, पूज्यश्री में असाधारण समता भाव था। आपश्री इस बात को सबसे कहते थे कि- सब खेल कर्मो का है इससे तीर्थकर परमात्मा भी नहीं बच पाये तो नवरत्न इनसे कैसे बच सकता है ? रात्री के 2-3 बजे से अपनी साधना में निमग्न रहते हुए अपने पूर्वोपार्जित कर्मो की निर्जरा कर आत्मकल्याण के साथ सर्वजन हिताय साधनारत रहनेवाले पूज्य गुरुदेव हमारे लिये चिरकाल तक जीवंत तीर्थ के रुप में हमें दिव्य आर्शीवाद द्वारा कृतार्थ करते रहेंगे। मैंने भगवान को तो देखा नहीं है लेकिन मुझे सदैव गुरु को देखकर भगवत्ता का प्रमाण मिलता रहा है। जब मैं गुरुदेव का स्मरण करता हूं तो प्रतीत होता है कि- मैंने भगवान का स्मरण किया है और जब गुरु को देखता था तो लगता था कि भगवान को देख रहा हूं, मेरे जीवन पर पूज्यश्री के इतने ऋण है कि एक जन्म तो क्या अनेक जन्मों में भी मैं गुरु ऋण को नहीं चुका सकता हूं। गुरु क्या होते है? आपका जीवन में क्या स्थान है ? इसकी गहन अनुभूति आज जब गुरुदेव समक्ष नहीं है तब हो रही है।

सिर्फ मैं ही नहीं बल्कि हर व्यक्ति के जीवन में गुरु का वैसा ही महत्व होता है जैसा सौरमंडल के नवग्रह में सूर्य का होता है। जैसे सभी ग्रह अपने गुरुदेव सूर्य के चारों और चक्कर लगाते रहते है और उससे ही ऊर्जा ग्रहण करते है वैसा ही हम आज भी गुरुदेवश्री से अपने जीवन मे दिव्य आर्शीवाद से ऊर्जा ग्रहण कर रहे है। आपश्री के अनंत आर्शीवाद आज भी बरस रहे हैं।

आध्यात्मिक ऊर्जा के केन्द्र बिन्दु, अद्भूत वात्सल्य के प्रतीक जीवंत प्राणरस पूज्यश्री के विछोह ने अनेक गुरुभक्तों के जीवन में विरक्ता पैदा की है परन्तु आपश्री के देहत्याग के बाद भी उज्ञवल आत्मिक ज्योति और अंर्ततेज से देदीप्यमान आत्मीय शक्ति से हम सब को दिव्य आर्शीवाद मिलते रहेंगे इसी शुभ भाव से आपश्री को हम सबकी ओर से अनंत वंदनांजलि !

कुछ लोग उन्हें पत्थर समझते है,
पर वे मोम है.... मैंने उन्हें छूकर देखा था...''

अनागत चौबीसी के तीर्थंकर

तीर्थंकर का नाम	किसका जीव	अभी कहां है
1- पद्मनाभ	श्रेणिक राजा	पहली नरक में
2- सुरदेव	सुपार्श्व (भ.महावीर के काका)	दूसरे देवलोक में
3- सुपार्श्व	उदायीराजा (कौणिक पुत्र)	तीसरे देवलोक में
4- स्वयंप्रभ	पोट्टिल श्रावक	चौथे देवलोक में
5- सर्वानुभूति	दृढायु	दूसरे देवलोक में
6- देवश्रुत	सत्यकीर्ति (कार्तिक का जीव)	पहले देवलोक में
7- उदयप्रभ	शंख श्रावक	बारहवें देवलोक में
8- पेढाल	आनन्द श्रावक	पहले देवलोक में
9- पोट्टिल	सुनंद श्रावक	पांचवें देवलोक में
10- शतकीर्ति	शतक श्रावक	आठवें देवलोक में
11- मुनि सुव्रत जिन	देवकी (श्रीकृष्ण की माता)	आठवें देवलोक में
12- अमम	श्री कृष्ण वासुदेव	तीसरी नरक में
13- निष्कषाय	सत्य की विद्याधर	नरक में
14- निष्पुलाक	बलदेव, बलभद्र (कृष्ण के भाई)	छट्टे देवलोक में
15- निर्मम (निर्मल)	सुलसा श्राविका	पांचवें देवलोक में
16- चित्रगुप्त	रोहिणी (बलदेव की माता)	दूसरे देवलोक में
17- समाधि	रेवती श्राविका	बारहवें देवलोक में
18- संवर	शताली	आठवें देवलोक में
19- यशोधर	द्वैपायन ऋषि	अग्नि कुमार देव
20- विजय	कर्ण	बारहवें देवलोक में
21- मल्लि	नारद (विद्याधर)	पांचवें देवलोक में
22- देवजिन	अम्बड परिव्राजक	बारहवें देवलोक में
23- अनन्तवीर्य	अमरकुमार	नौवें ग्रेवेयक में
24- भद्रंकर (भद्रकृत)	स्वातिबुद्ध (इसमें मतांतर भी है)	देवलोक में

**** जीव अनंत काल तक अपने स्वच्छंद से चल कर परिश्रम करें तो भी वह अपने आपसे ज्ञान नहीं पा सकता। परन्तु ज्ञानी की आज्ञा का आराधक अंतमुर्हूत में भी केवल ज्ञान पा सकता है।***

दुनिया का दर्पण

✲ प.पू.पंन्यास प्रवर श्री राजहंसविजयजी म.सा.

✲ शत्रुंजय दादा के दर्शन करने के लिये जिस समय 100 रुपये का कर (टेक्स) देना पड़ता था, उस समय करमाशाने राजा के आगे सुवर्ण के भंडार को अर्पित कर, टैक्स बंद करवाया था।

✲ करमाशाने शत्रुंजय के जीर्णोद्धार में सवा करोड़ द्रव्य का खर्च किया था, (प्रतिष्ठा महोत्सव के खर्च अलग से)

✲ दादा का शिखर भूमि से 52 हाथ ऊंचा है और शिखर में 1245 कुंभ है।

✲ भरत चक्रवर्ती ने गिरिराज की शीतलचाया में (तलेटी में) 22 योजन का नगर स्थापित किया और वहां पर 5 करोड़ ब्राह्मणों (श्रावकों) को रहवासी बनाया।

✲ 2500 वर्ष पुराने जैन ग्रंथों में, कंदमूल नहीं खाने का उल्लेख मिला हुआ है।

✲ 11-12 मी सदी के कलिकाल सर्वज्ञ हेमचंद्राचार्य द्वारा रचित ''सिद्धहैमशब्दानुशासनम्'' नामक सवा लाख श्लोक प्रमाण ग्रंथ को सिद्धराज जयसिंह ने सुवर्ण अक्षरों से लिखाकर, हाथी की पीठ पर रखकर शोभायात्रा निकाली थी। उस समय जैन शासन की जयपताका प्रज्वलित थी।

✲ वर्तमान चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव स्वामी भगवान की माता मरुदेवा को अपनी जिंदगी में कभी भी सिरदर्द नहीं हुआ था। (जन्म से निर्वाण तक संपूर्ण रुप से निरोगी)। ब्रिटन के डॉक्टर दावा करते हैं, ''प्रत्येक चार सर्जीकल ऑपरेशन में से तीन बिलकुल बिन जरुरी होते हैं।''

✲ गुजरात के कर्णराजा ने जिनको ''मलधारी'' बिरुद दिया था, वे अभयदेवसूरीजी ने (हर्षपुरीगच्छ के) अजमेर के राजा जयसिंह को अहिंसा का उपदेश दिया था। इस उपदेश के प्रभाव से राजा जयसिंह ने हर महिने की दो आठम, दो चउदश और सुद पंचमी इस तरह पांच दिन अपने राज्य में संपूर्ण रुप से जीवहत्या को बंद कराया था।

✲ मुनिश्री हीरहर्ष के आचार्य पद का महोत्सव, राणकपुर के निर्माता धरणाशाह के वंशज चांगा संघपति ने (जो दुदाराजा का मंत्री था) किया था और इस दिन दुदा राजा ने अपने राज्य में सभी जगह अहिंसा का पालन करवाया था और हर महिने की दशम के दिन समस्त राज्य में अहिंसा-पालन की उद्-घोषणा की थी।

✲ हीरविजयसूरीजी ने 225 छट्ठ, 225 अट्ठम, 2000 आयंबील, 2000 नीवि, 3600 उपवास दो समय की भव आलोचना के 300 उपवास, आयंबिल के बीस स्थानक की आराधना 20 बार, दानसूरीजी के लिये 13 महिने तक उपवास, एकासणा, आयंबिल, उपवास, एकासणा, आयंबिल.... आगम पढ़ने के लिये योगोद्वहन पूर्वक 22 महिने तक लगातार आयंबिल तथा 11 महिने का प्रतिमा का तप-इस तरह विविध तप किया था, जीवन पर्यन्त एकासणा से कम तप नहीं किया। दूध को छोड़कर पाँच विगई का जीवनभर त्याग किया था। सूरिपद के बाद 12 द्रव्य से ज्यादा द्रव्य नहीं वापरने का नियम किया था।

✲ आचार्य हीरविजयसूरीजी के पाटण में हुए पाट महोत्सव का लाभ सूबा शेरखान के मंत्री समरथ भणशाली ने लिया था।

✲ आचार्य हीरविजयसूरीजी ने फतेपुर-सीकरी में अकबर से मिलने के लिये प्रवेश किया, उस समय उनके साथ 67 साधु थे।

✲ ''सूर्य सहस्त्रनाम स्तोत्र'' नाम के ग्रंथ को अकबर ने पंन्यास भानुचंद्रजी के पास से शीखा था। अकबर को सूर्य के 1001 नाम सीखाने वाले, पं.भानुचंद्र विजयजी, हीरविजय सूरीजी के शिष्य थे, बादशाह हर रविवार को, पं.भानुचंद्रजी को सुवर्ण और रत्नजड़ित बाजोठ पर बीठाकर, उनके मुख से यह स्त्रोत सुनते थे।

✲ हीरविजय सूरीजी के उपदेश से 303 संघपतिओं ने संघ निकाला था।

✲ हीरविजयसूरीजी को ''जगद्गुरु'' बिरुद, विजयसेन सूरीजी को ''सवाइ हीरला'' पं.भानुचंद्रविजयजी को ''महोपाध्याय'' बिरुद तथा पं.नंदीविजय और पं. सिद्धिचंद्रजी को ''खुशभहेम'' बिरुद देनेवाले सम्राट अकबर का पूरा नाम ''जलालुद्दीन मोहम्मद अकबर'' था।

✲ अकबर के सामने अपना मस्तिष्क नहीं झुकानेवाले मेवाड़ केसरी महाराणा प्रताप ने जगद् गुरु हीरविजयसूरिजी को अपने आंगन में पधारने के लिये आमंत्रण दिया था।

✲ एक समय, खंभात नगर के प्रवेश समय, हीरविजय

सूरीजी के प्रत्येक चरण कमल में दो-दो सुवर्ण मुद्रा, 1 रुपये और मोती का साथियां रखने के द्वारा गुरुपूजन किया था। उस दिन भक्तों ने (प्रभावना आदि मिलकर) 1 करोड़ जितना रजतद्रव्य का खर्च किया था।

✻ हीरविजयसूरीजी महाराज ने 160 साधुओं को पंडित पद से विभूषित किया था।

✻ दक्षिण में अभ्यास करके ये मुनि गुरु के पास वापिस आये, तब उसी समय, खड़े-खड़े, नये बनाये हुए 108 काव्यों से गुरु की स्तुति की और बाद में द्वादशावर्त वंदन (उत्कृष्ट गुरुवंदन) किया,यह मुनि थे हीरहर्ष विजय (हीरविजयसूरि)।

✻ ''हीर ! तू जल्दी आ, तेरा जरुरी काम है'' गुरुदेव के इस पत्र को पढ़ते ही हीरविजयसूरीजी ने तुरन्त वहां से विहार किया। छट्ठ का पारणा करने के लिये भी (संघ और शिष्यों का अति आग्रह होने के बावजूद) नहीं रुके, गुरुदेव को हीरविजयसूरिजी की, इस बात का जब पता चला, तब उनकी आँखें आश्चर्य और हर्ष से गीली हो गई। (गुरु आज्ञा की कितनी प्रधानता !)

✻ लोकागच्छ (मूर्ति-प्रतिमाजी को पत्थर माननेवाले) के विद्वान और उस समय के धूरंधर गिने जानेवाले मेघजी आदि 30 साधुओं ने, हीरविजयसूरीजी के पास सत्य समझकर संवेगी मार्ग स्वीकारा। यानि मूर्तिपूजा सत्य है इस तरह कबूला।

✻ हीर विजयसूरीजी ने 50 जिनालयों की प्रतिष्ठा की थी तथा उनके समुदाय में 2500 साधुजी, 160 पंडित-पंन्यास, 8 उपाध्याय, एक आचार्य (विजयसेनसूरीजी) और 300 साध्वीजी महाराज थे।

✻ खरतरगच्छ के श्री कांतिसागरजी म. एक लेख में बताते है कि किसनगढ़ के नरेश (राजा) के चित्रसंग्रह में बहुत चित्र है उनमें आ.श्री विजयहीरसूरि, विजयदेवसूरि, विजयप्रभसूरि, उपा. मेघविजय का प्रवेशोत्सव, सांवत्सरिक शोभायात्रा, राजमिलन आदि अनेक चित्र है।

✻ हीरविजयसूरीजी का जब स्वर्गवास हुआ तब उससे 4 घड़ी (डेढ़ घंटे) पहले अपनी छत पर रहे हुए एक ब्राह्मण ने ''चलो जल्दी दर्शन करें'' ऐसा वार्तालाप सुना था और आकाश में ''देवविमान'' देखा था।

✻ जिस दिन जगद्गुरु का अग्नि संस्कार हुआ, उस रात्रि खेत में रहनेवाले लोगों ने आम के बगीचे में होनेवाले ''दिव्य नाट्यरंभ'' को देखा था। आचार्य हीरविजयसूरीजी का अग्नि संस्कार जिस बगीचे में हुआ था, उस आम के वन में चार्तुमासकाल होने के बावजूद भी आम के पेड़ों पर आम लहलहाने लगे, इसमें कई वृक्ष ऐसे भी थे जिस पेड़ पर कभी आम नहीं आते थे, उन पेड़ों पर भी आम लग गये थे।

✻ आचार्य हीरविजयसूरीजी ने अपने जीवन के दौरान 4 करोड़ श्लोक का स्वाध्याय किया था।

साभार : दुनिया का दर्पण

नम्रता की जीत अभिमान पर

एक विद्वान पंडित महा अभिमानी था। वह प्रत्येक गांव में जाता, वहां विद्वान पंडितों को चर्चा के लिये बुलाता, चर्चा में विजयी बनकर पारितोषिक लेकर जाता। अधिकतर वह सामनेवालों को पूर्वपक्ष स्थापन करने का कहता और तर्क वितर्क आदि के द्वारा पूर्वपक्ष का खांडन कर विजयमाला प्राप्त कर लेता था।

एक बार एक नगर में एक नम्र, सरल, अनुभवी और कुशाग्र बुद्धि के धनी संत ठहरे हुए थे। वह अभिमानी पंडित उस नगर में गया। उसने राजदरबार में सभी पंडितों को जीत लिया। तब उसके गर्व को देखकर एक साधारण व्यक्ति ने कहा- आप हमारे नगर में बिराजित संत पुरुष को वाद में जीते तो हम आपको पंडित, विद्वान मानें, उसने गर्व में आकर कहा- कहां है वह संत ? चलो, अभी उसे हरा देता हूं। वे वहां गये। वाद का निमंत्रण दिया। संत ने कहा- भाई ! वाद करना संतों का काम नहीं। संतों का काम उपदेश देना, विरागी बनाना। तब उसने कहा- देखो ? मुझे देखकर डर गया। अब बहाने बनाता है। संत ने कहा- बहाने नहीं बनाता हूं। तेरी दया खाता हूं। तू हार जायेगा। तेरी कीर्ति नष्ट हो जायेगी। इसलिए मना करता हूं। फिर भी वह न माना, तब राजसभा में संत आये अवश्य खंडन करुंगा। संत ने पूर्व पक्ष को स्थापते हुए कहा- सुना है आप महान हो, पुण्यशाली हो, विद्वान हो, सरल हो, आपके माता-पिता सदाचारी है, धनवान है, आपके स्वजन सज्जन है, आपकी माता सती है, आप आपके माता-पिता की ही संतान है। इत्यादि पूर्वपक्ष का स्थापन किया। अब वह इन बातों का खंडन कैसे करें ? चुप रहा। संत के पैरों में गिरकर क्षमा मांगकर बोला- मेरी विद्वता आपकी सरलता, नम्रता के आगे हार गयी। मैं भविष्य में कभी गर्व नहीं करुंगा।

✻ अनु दीपक जैन, जयपुर, मो.नं. 9782499999

आगमोद्धारक भविष्य फल मार्च-2021

मेष– आपके लिये यह मास सामान्यता मिश्रित फलदायक रहेगा, कार्य क्षेत्र से लाभ की प्राप्ति होगी एवं निवेश के विभिन्न योजनाएं सफल होगी, इस समय विरोधी निस्तेज रहेंगे, विद्यार्थी वर्ग के लिए परिश्रम का समय रहेगा।

वृष– आपके लिये यह मास सामान्य शुभ फलदायक रहेगा, दूर स्थानों से बेहतर लाभ के अवसर प्राप्त होंगे, नई योजनाएं क्रियान्वित होगी एवं अधिकारी वर्ग का बेहतर सहयोग प्राप्त होगा, विद्यार्थी वर्ग के लिये परिश्रम का समय रहेगा।

मिथुन– आपके लिये यह मास सामान्यता मिश्रित फलदायक रहेगा, बौद्धिक एवं मानसिक कार्य की अधिकता रहेगी एवं सामाजिक कार्यो में वर्चस्व की वृद्धि होगी, इस समय किसी प्रकार की यात्रा आदि की संभावना भी रहेगी, विद्यार्थी वर्ग को बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

कर्क– आपके लिये यह मास सामान्य फलदायक रहेगा, मानसिक कार्यो की अधिकता परेशानी का कारण रहेगी, इस समय किसी पर भी आवश्यकता से अधिक भरोसा करना हानिकारक सिद्ध हो सकता है, विद्यार्थी वर्ग में बेहतर परिणाम प्राप्त होंगे।

सिंह– आपके लिये यह मास सामान्यता शुभ रहेगा, इस माह मान सम्मान में वृद्धि होगी एवं वाद विवाद आदि में भी विजय प्राप्त होगी, व्यापारिक गतिविधियों से बेहतर लाभ के अवसर मिलेंगे, किसी प्रकार का डूबत ऋण प्राप्त हो सकता है, महिला वर्ग का सहयोग फलदायक रहेगा।

कन्या– आपके लिये यह मास सामान्य रहेगा, बौद्धिक कार्यो की अधिकता रहेगी एवं तनाव की स्थिति भी बन सकती है, इस समय बनते हुए कार्य बिगड़ सकते है अतः किसी नए कार्य में मत उलझो, विद्यार्थी वर्ग को सतर्क रहकर कार्य करना होगा।

तुला– आपके लिये यह मास सामान्यता शुभ रहेगा, दूर स्थानों से बेहतर लाभ के अवसर प्राप्त होंगे परन्तु व्ययों की अधिकता भी रह सकती है, इस समय महिला वर्ग का सहयोग बेहतर परिणाम देगा, सामाजिक व धार्मिक कार्यो में रुचि रहेगी, यात्रा आदि का योग भी बन सकता है, विद्यार्थी वर्ग के लिये बेहतर समय रहेगा।

वृश्चिक– आपके लिये यह मास सामान्यता मिश्रित फलदायक रहेगा, इस समय कार्य क्षेत्र में परिवर्तन की संभावना रहेगी साथ ही स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी आ सकती है, दूर स्थानों की यात्रा शुभ फलदायक रहेगी, माह का उत्तरार्ध बेहतर परिणाम देने वाला है।

धनु– आपके लिये यह मास सामान्यता शुभ रहेगा, बौद्धिक कार्यो में रुचि रहेगी एवं किसी विशेष पद आदि की प्राप्ति संभावित है, अधिकारी वर्ग का बेहतर सहयोग प्राप्त होगा, इस समय कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन भी संभावित है, विद्यार्थी वर्ग को सफलता प्राप्त होगी।

मकर– आपके लिये यह मास सामान्य रहेगा, कार्य क्षेत्र से लाभ प्राप्ति हेतु परिश्रम की अधिकता रहेगी परन्तु आशा अनुसार परिणाम ना मिलने से मन व्यथित रहेगा, स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी संभावित है अतः इस समय विशेष ध्यान रखें।

कुम्भ– आपके लिये यह मास सामानयता मिश्रित फलदायक रहेगा, इस समय वाद विवाद में विजय प्राप्त करने के लिये महत्वपूर्ण समय है, सहयोगियों का बेहतर सहयोग कार्य सफलता में सहायक बनेगा, व्ययों की अधिकता रहेगी एवं परिवार में किसी प्रकार का महोत्सव आदि संभावित है।

मीन– आपके लिये यह समय सामान्य फलदायक रहेगा, बड़ों का आर्शीवाद एवं सहयोग सफलता दे सकता है, इस समय क्रोध एवं वाणी पर अवश्य रुप से नियंत्रण रखें अन्यथा बनते हुए कार्य बिगड़ सकते हैं, ख्याति में वृद्धि हेतु माह का उत्तरार्ध बेहतर रहेगा, विद्यार्थी वर्ग के लिए बेहतर समय है।

वर्ग पहेली क्रमांक-*310*

✻ प्रस्तुति :- जयंतीलाल जैन, रतलाम (म.प्र.)

■	1		2	3	■	4		5
6		■	7		8		■	
■		■		■		■	9	■
10		11	■	12		13		
■	■		■		■		■	■
14	15				■	16	17	
■		■		■	18	■		■
19	■	20		21		■	22	
23			■	24				■

बाएं से दाएं:-

1- नौ प्रति वासुदेव में से एक---- (4)
4- बीस विहरमानजी में से एक--- भ स्वामी (3)
6- श्री स्तम्भन पार्श्वनाथ का आणंद (गुज.) स्थित तीर्थ--- त (2)
7- भगवान महावीर के 10 प्रमुख श्रावकों में से एक- म--- (4)
10-णमोकार महामंत्र के पांच पदों में से--- अक्षर(3)
12-णमोकार महामंत्र का तीसरा पद है-णमो--- (5)
14-प्रभु वीर का च्यवन,जन्म व दीक्षा स्थल--- (5)
16-भोपाल में---टी की मनुआभान टेकरी पर स्थित है नया श्वेतांबर जैन मंदिर (3)
20-सुजलाम, सुफलाम--- शीतलाम (4)
22-भ.महावीर की निर्वाण स्थली है पावा--- (2)
23-भ.महावीर का घोर अभिग्रह पूर्ण हुआ और--- ने उड़द के बाकले प्रभु को अर्पित कर दिये (3)
24-भ.महावीर का प्रथम भव--- (4)

ऊपर से नीचे:-

1- जिन शासन की 16 सतियों में से एक--- (4)
2- उत्तरप्रदेश के इ ---द में स्थित श्री पुरिमताल तीर्थ से मरुदेवी माता मोक्ष सिधारी थी (3)
3- मंदसौर में है श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ का---पुर तीर्थ (2)
4- भला, अच्छा, उम्दा का पर्याय--- (2)
5- भ.महावीर के ग्यारहवें गणधर का नाम---स (2)
8- लीन, तल्लीन, ध्यानमग्न का पर्याय--- (3)
9- बारहवें तीर्थंकर श्री वासुपूज्यजी की माता का नाम (2)
11-दिगम्बर आचार्य श्री कुन्दकुन्द रचित एक ग्रंथ---सार (3)
12-तपागच्छ समुदाय के उद्गम स्थल का नाम---(3)
13-भोयण व शियाणी तीर्थ के निकट चन्दनवर्णी आदिनाथ प्रभु का तीर्थ उप---(3)
15-वीर प्रभु की माता का नाम---ला (2)
17-भ.आदिनाथ की फिरोजा वर्ण की प्रतिमा वाला तीर्थ कुक्षी, मोहनखेड़ा व लक्ष्मणी तीर्थ के निकट स्थित है ता---(4)
18-नौ बलदेव में से एक ---(3)
19-जैन धर्म के सभी पंथों में केश---प्रथा विद्यमान है (2)
20-स्वतंत्रता संग्राम सेनानी व भारत रत्न मदन मोहन मालवीय को महात्मा गांधी ने महा---की उपाधि दी थी (2)
21-नैन, चक्षु, आंख का पर्याय-न--- (2)

वर्ग पहेली क्रमांक-309 का परिणाम

भू	पा	ल	सा	ग	र	■	सु	■
चा	■	ह	र	■	वि	त	रा	ग
ल	मे	र	■	भु	■	र्ज	■	ज
■	घ	■	■	जं	क	■	ग	■
कि	र	ण	वे	ग	वि	द्या	ध	र
■	थ	■	ध	दे	■	■	रा	■
सां	■	गु	■	व	■	आ	ज	वा
झ	ग	ड़ी	या	■	प्रा	ग	■	न
■	जा	■	क	ल्या	ण	मं	दि	र

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक-310

✻ आचार्य प्रवर श्री मृदुरत्नसागरजी म.सा.

प्रश्न-प्रस्तुत प्रश्न अंताक्षरी पर आधारित है। पहले प्रश्न के उत्तर का अंतिम अक्षर, दूसरे प्रश्न के उत्तर का प्रथम अक्षर होगा।

1- अजितनाथ प्रभु के भाई का नाम जो चक्रवर्ती बने ?
2- ऋद्धि गाख आदि तीन गाख में से एक गाख ?
3- सीमंधर स्वामी की माता का नाम ?
4- वे देव जो देवलोक में नीच कोटी के होते है ?
5- जो संसार की अभिवृद्धि करते है ?
6- जो वीर परमात्मा की धर्मपत्नी है ?
7- महारानी के साथ रहकर महारानी सेवा करती है ?
8- सतियों में से एक सति का नाम ?
9- ऐसे पर्वो में पर्युषण वैसे ज्योतिष्क में ?
10-इस अवसर्पिणीकाल में आवे नं. बलदेव कौन बने ?

वर्गपहेली क्रमांक-308 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास (म.प्र.)- प्रथम
2- सुरभि सराफ,बदनावर (म.प्र.) -द्वितीय
3- प्रिती हिंगड़, नरवर (म.प्र.) - तृतीय

इनके भी उत्तर सही थे :–

सुधा लोढ़ा, उज्जैन, हंसा वैभव जैन, सुधा धारीवाल, मीना जैन, प्रभा जैन, भारती जैन, देवास, श्रीमती कुसुम जैन, आगर मालवा।

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक–308 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती मीना जैन, देवास, (म.प्र.) - प्रथम
2- प्रियांशी जैन, नरवर (म.प्र.) -द्वितीय
3- श्रीमती प्रभा जैन, देवास, (म.प्र.) -तृतीय

सही उत्तर-

1- श्री पद्मप्रभुजी, 2- श्री सुमतिनाथजी, 3- श्री आदिनाथजी, 4- श्री चंद्रप्रभस्वामीजी, 5- श्री शीतलनाथजी, 6- श्री शांतिनाथजी, 7- श्री महावीर स्वामीजी, 8- श्री सुविधिनाथजी, 9- श्री नेमिनाथजी, 10- श्री पार्श्वनाथजी 11-श्री अजितनाथजी 12-श्री श्रेयांसनाथजी

इनके भी उत्तर सही थे :–

श्रीमती चंदनबाला जैन, देवास।

वर्गपहेली क्रमांक-309 के परिणाम

विजेता:-

1- श्रीमती सरोज तल्लेरा, इन्दौर (म.प्र.)- प्रथम
2- स्नेहलता जैन, मंदसौर (म.प्र.) -द्वितीय
3- सुधा लोढ़ा उज्जैन (म.प्र.) -तृतीय

ज्ञानगंगोत्री क्रमांक–309 के परिणाम

सही उत्तर-

1-युधिष्ठिर-द्रौपदी, 2- श्री महावीर स्वामी-नंदिवर्धन 3- सुदर्शना-नंदिवर्धन, 4- भरत-मरुदेवी माता, 5-द्राविड़-वारिखिल्लजी, भरत-बाहुबली 6- श्री महावीर स्वामी- गौतम स्वामीजी, 7-मृगावती-चंदनबाला, 8-श्री श्रेयांसकुमार-श्री आदिनाथजी, 9-श्री नेमकुमार-श्रीकृष्णा 10-भरत-सुंदरी 11-बाह्मी सुंदरी-बाहुबली।

एक भी उत्तर सही नहीं था।

✻ सत्पुरुषों का महान बोध है कि उदय में आये हुए कर्मो को भोगते हुए नये कर्मो का बन्धन न हो इसके लिये आत्मा को सचेत रखना।

सूचना– अब पहेली के लिये ड्रा द्वारा प्रोत्साहन राशि पुरस्कार में दी जायेगी। इसके लिये ड्रा निकालकर क्रमशः तीन पुरस्कार तीन विजेताओं को रुपये 31/-, 21/-, 11/- एम.ओ.भेजे जावेंगे। सही उत्तरवाले नाम हम छापेंगे ही। आप सहयोग बनाये रखिये। धन्यवाद।

नोट- पोस्टकार्ड पर अपने पते के साथ शहर के पिनकोड नंबर अवश्य डालें।

प्रिय पाठकों! उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर हमें पोस्टकार्ड पर लिखकर हमें दिनांक 25-3-2021 तक भेज दीजिये। सही उत्तरों में से लक्की ड्रा निकालकर प्रथम तीन को क्रमशः51/-, 31/-, 21/- रूपये की राशि से सम्मानित किया जायेगा साथ ही उत्तीर्ण होने वालों के नाम ''आगमोद्धारक'' मासिक में प्रकाशित किये जायेंगे। भेंट राशि एम.ओ. द्वारा भेजी जायेगी। - सम्पादक

सिध्दक्षेत्र में नवरत्नधाम का लोकापर्ण एवं उपधान तपाराधना से जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागरसूरीजी ने सागर समुदाय का मान बढाया

तीन मुनि भगवंतों श्रीआगमरत्नसागरजी, श्रीप्रशमरत्नसागरजी, श्रीकीर्तिरत्न सागरजी की 52 दिवसीय महानिशीध की योग क्रिया पूर्ण करवाई *✻ आगामी चार्तुमास मालवा में होने की संभावना। ✻ मार्च में मालवा आगमन।*

पालीताना-जम्बुद्वीप वर्धमान पेढ़ी पर चातुर्मासिक आराधना के बाद पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य देवेश श्री नवरत्न सागर सूरीजी महाराजा के द्वितीय शिष्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी म. सा., मुनिश्रीतीर्थरत्नसागर जी, मुनिश्रीउत्तमरत्नसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पालीताना की पुण्य पावन भूमि एवं दादा श्री आदिनाथ की छत्र-छाया में जंबूद्वीप आराधना भवन में कोरानाकाल में सिद्धक्षेत्र में सभी धर्मशाला में धर्मिष्ठा का आगमन निरोध होने के बाद भी पूज्यश्री ने श्रावक से श्रमण बनने की महायात्रा के प्रमाण स्वरुप ऐतिहासिक उपधान तपाराधना करवाकर जिन शासन के इतिहास में अपना नाम अंकित कर लिया। 250 धाराधकों ने धर्म का शंखनाद कर इतिहास रच दिया। शताधिक साधु-साध्वी वृंद की पावन उपस्थिति में उपधान तपाराधना हुई।

इसके साथ ही शंखेश्वर में श्री आगम मंदिर संस्थान में सफल चार्तुमास सम्पन्न कर पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगलरत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्री आगमरत्न सागरजी म. सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. पू. आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जित रत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्नसागर जी म. सा.साधु-साध्वी आदि ठाणा का मंगल आगमन भी सिद्धक्षेत्र में योगोधवन के लिये हो गया था। पूज्य जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में मुनिश्री आगमरत्न सागरजी म.सा. , मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा., मुनि श्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा.को महानिशीध की 52 दिवसीय आयंबिल आराधना युक्त योग क्रिया का शुभारंभ भी हुआ था जो पूज्यश्री की निश्रा में पूर्ण हुई।21 फरवरी को योग क्रिया पूर्ण होने पर भव्य रथयात्रा का आयोजन किया गया। योग क्रिया का संपूर्ण विधान आचार्यश्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उपाध्याय श्री वैराग्यरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनि श्री कीर्तिरत्न सागरजी म.सा.का भी उपस्थित थे। आचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी म.सा. का मंगल विहार मालवा की ओर होने की संभावना है। झाबुआ में आगामी महामांगलिक 14 मार्च को होने की संभावना है, यहां से आपश्री भोपावर महातीर्थ भी पहुंच सकते है। आगामी चार्तुमास भी मालवा में हो ऐसी संभावना है इसके साथ ही आगे की धार्मिक योजनाओं और कार्यक्रम की रुपरेखा बन रही है।

तमन्ना हो गुरु से मिलने की तो बंद आँखों में भी नजर आयेंगे।
महसूस करने की कोशिश कीजिए। दूर होते हुए भी गुरु पास नजर आयेंगे।

"नवरत्न धाम" के पूर्ण निर्माण से युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी ने मालव भूषण सूरीजी के सपने को साकार किया

उज्जैन- नवरत्नधाम का द्वितीय उद्घाटन यज्ञ 21 फरवरी को सम्पन्न हुआ। लाभार्थी परिवार का बहुमान किया गया। 25 हजार से अधिक पुस्तकों के साथ ज्ञान भण्डार की स्थापना भी की गई है। श्री वाघचंद्र कोचर के द्वारा नवरत्नधाम को प्रतिवर्ष 5 लाख रुपये पूज्य युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी की प्रेरणा से देने का निश्चय किया है। यह बात आपने अपनी वसीयत में भी लिखवाई है। नवरत्नधाम का सुचारुरुप से संचालन करने के लिये गुरुभक्तों के द्वारा ढाई करोड़ रुपये का फंड भी बनाया गया है।

शाश्वत जैन तीर्थाराज श्री सिध्दाचल महातीर्थ पालीताना में पूज्यपाद मालव भूषण गुरुदेव आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागर सूरीश्वरजी द्वारा अपने जीवनकाल पालीताना मे मालवा के साथ पूरे देश के गुरुभक्तों के लिये जिस विशाल धर्मशाला की कल्पना कि थी उसकी पूर्णाहुति गुरु कृपापात्र सुशिष्य रत्न युवाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वरजी के दिशा दर्शन में पूर्णता को प्राप्त कर लिया गया है। नवरत्नधाम के नाम से पालीताना महातीर्थ में भव्य धर्मशाला का प्रथम लोकार्पण पालीताना महातीर्थ में विराजित आचार्यश्री, मुनि साध्वी भगवंतों की निश्रा में 31 जनवरी को किया गया था। जैनाचार्यो द्वारा रचित कई धार्मिक ग्रंथों और उनकी मूल प्रतियों को यहां रखा जाएगा।

युवाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वरजी के अमृत निश्रा और दिग्दर्शन में "नवरत्न धाम" का निर्माण लगभग 30 करोड़ की विशाल राशि का खर्च कर किया गया है विशाल रुप से निर्मित इस भव्य भवन में एक महातीर्थ की धर्मशाला में जो सुविधा होना चाहिये वह सब है ज्ञान ध्यान अनुष्ठान स्वाध्याय के साथ इस "नवरत्न धाम" धर्मशाला पालीताना महातीर्थ में एक अध्यात्म केंद्र के रुप में ख्याति प्राप्त करेगी इसमें कोई शंका नही है क्योंकि तलेटी के मुख्यमार्ग पर होने से यह सबके लिये सहज सरल और सर्वसुविधाजनक है। सभी सुविधाओं से परिपूर्ण लगभग 100 कमरों की नवरत्नधाम धर्मशाला में सभी कमरे वातानुकूलित हैं यात्रियों के साथ साधु -साध्वीयों की तीर्थ में स्थिरता के लिये विशेष ध्यान रखा गया है। नवरत्नधाम धर्मशाला में साधु - साध्वी के ठहरने, यात्रियों के ठहरने एवं संघ यात्रा के लिये भी व्यवस्था है।

गुरु कृपापात्र सुशिष्य रत्न युवाचार्य श्री विश्वरत्न सागर सूरीश्वर जी ने पालीताना में मालव के तीर्थ यात्रीयों के लिये इस विशाल धर्मशाला के निर्माण महत्वपूर्ण बतलाया है, इससे मालवा के तीर्थ यात्रीयों को आवास की सुविधा मिल सकेगी। युवा जैनाचार्य श्री विश्वरत्नसागर सूरीश्वर जी का संकल्प गुरु की इच्छा को पूरा करने का दृढ इरादा पूर्ण हुआ है। पूज्यश्री के भक्तो ने इस संकल्प को पूरा करने में स्वेच्छा से दान देकरे पूर्ण करने में बडा योगदान दिया है। नवरत्नधाम धर्मशाला में सुरक्षा नियमों का विशेष ध्यान रखा गया है।

श्री भोपावर महातीर्थ में 16 मार्च को ध्वजारोहण होगा

भोपावर- श्री शांतिनाथ पर माल्या के 88 हजार वर्ष प्राचीन महातीर्थ भोपावर से प्रतिष्ठा उपरांत प्रथम ध्वजारोहण 16 मार्च 2021 को आयोजित होगा। कोठारी परिवार लाभाथी है।

पूज्य गच्छाधिपति की स्मृति में जीवदया अनुकंपा दान

पालीताना- सागर समुदाय के समर्थ गच्छाधिपति रहे पूज्यपाद आचार्य देवेश श्री सूर्योदयसागर सूरीश्वरजी महाराजा की 12 वीं पुण्य तिथि पर पालीताना में पूज्य मुनिप्रवर श्री गुणरत्नसागरजी म.सा. एवं साध्वीवर्या श्री शीलरेखा श्रीजी म.सा. के मार्गदर्शन और प्रेरणा से अनुकम्पा दान एवं जम्बुद्वीप परिसर में पालीताना में विराजित साधु-साध्वी भगवंत के लिये वैय्यावच्च की सुन्दर व्यवस्था की गई। दिनांक 26 फरवरी को यह आयोजन किया गया।

पूज्यपाद गच्छाधिपति के जन्म शताब्दी पर्व पर शतकवीर स्वाध्याय अभियान

आगामी चार्तुमास मुंबई में होगा।

सूरत- सुविशाल आगमोद्धारक सागर समुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलत सागर सूरीश्वरजी महाराजा अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागर सूरीश्वरजी म.सा.,पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीश्वरजी म.सा. आदि-12 ठाणा एवं साध्वीवृंद की पावन निश्रा में स्मरण रहे पूज्यश्री का आगामी चार्तुमास काला चौकी, मुंबई में होगा।

पूज्य जैनाचार्य श्री अभयदेवसूरी की निश्रा में दो दीक्षा फरवरी में गुरु राम जन्म भूमि पर होगी

सूरत- सूरत के उपनगर गुरु राम भूमि पाल में पूज्य आचार्य भगवंत श्री अभयदेवसूरीजी म.सा. एवं आचार्य श्री मोक्षरत्नसूरीश्वरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में में सम्पन्न हुए **उपधान तप में 730 आराधकों ने भाग लिया जिसमें से 600 तपस्वी प्रथम माल के थे,** माल के चढ़ावे 12 फरवरी को पूज्यश्री की महामांगलिक के साथ सम्पन्न हुए मालारोपण 22 फरवरी को भव्य आयोजन के साथ सम्पन्न हुआ। दो दीक्षा दिनांक 15 फरवरी को कु.रेन्सी, जयेश की दीक्षा सम्पन्न हुई इसके बाद शुभकुमार (17) की दीक्षा 28 फरवरी को हुई इसके साथ ही पूज्यश्री ने सोनई (राज.) में प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये प्रतिष्ठा मुहूर्त 22 मई 2021 को प्रदान किया। **श्री श्रुतभाई भी दीक्षा ग्रहण करेंगे** श्री श्रुतभाई (14) की भगवती प्रवज्या मार्च के प्रथम सप्ताह में होगी। महोत्सव का आरंभ 3 मार्च से होगा। वर्षीदान वरघोड़ा 4 मार्च को आयोजित है। शुभ लग्नांश वेल में दीक्षा क्रिया विधि पूज्यश्री की निश्रा 5 मार्च को आरंभ होगी। मेहता परिवार के युवा का दीक्षा प्रसंग है।

अभिनव शत्रुंजयधाम की अंजन-प्रतिष्ठा जनवरी 2022 में होगी

रानी- श्री जैनाचार्य श्री नेमी सूरीजी महाराजा के सुशिष्य आचार्य देवश्री सुशीलसूरीजी म.सा. के सुशिष्य आचार्यदेव श्री जिनोत्तमसूरीजी म.सा. के दीक्षा के 50 वर्ष पूर्ण होने पर रानी के सुशील विहारधाम अभिनव शत्रुंजय धाम का नव निर्माण किया गया है। तीर्थ का अंजन-प्रतिष्ठा महोत्सव 15 से 24 जनवरी 2022 तक आयोजित होगा। प्रतिष्ठा 22 जनवरी को सम्पन्न होगी। प्रतिष्ठा महोत्सव के लिये 153 चढ़ावों का लाभ लेने के लिये 1 लाख 8 हजार का नकरा तैय किया गया जिसका ड्रॉ निकालकर विजेता लाभ दिया जायेगा। ड्रॉ 26 फरवरी 2021 को श्री अष्टापद तीर्थ सुशील विहार रानी में निकाले जायेंगे।

श्री भक्तामर महातीर्थ में ध्वजारोहण हुआ

धार- श्री अभ्युदय भक्तामर धाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद ज्योति र्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्न सागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में प्रतिष्ठित यहां दादाश्री आदिनाथ प्रभु के जिनालय के साथ भक्तामर की 44 देहरियों का ध्वजारोहण 18 फरवरी को किया गया। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों का आगमन हुआ। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

15 वां ध्वजारोहण महोत्सव

भवानीमंडी- श्री आदिनाथ धाम पंचपहाड़ में मूलनायक श्री आदिनाथ दादा के जिनालय की 15 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण पूज्य जैनाचार्य श्री अशोकसागरसूरीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में 3 फरवरी को सम्पन्न हुआ। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

देवास देवड़ा में ध्वजारोहण

देवास देवड़ा- मंदसौर जिले के देवास देवड़ा में प्रथम तीर्थंकर परमात्मा श्री आदिनाथ दादा के जिनालय की 20 वीं वर्षगांठ का आयोजन किया गया। पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा के कर कमलों से प्रतिष्ठा सम्पन्न हुई थी, अंतराष्ट्रीय जैन विधिकारक श्री मनोजकुमार बाबूमलजी हरण के मार्गदर्शन रहा था।

भोपावर महातीर्थ प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीजी का जन्मोत्सव 7 मई 2021 को उज्जैन में मनेगा

उज्जैन- सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा.आदि ठाण की निश्रा में अनेक शासन प्रभावक कार्यो की श्रृंखला के साथअपश्री आगर में पारणा महोत्सव में निश्रा प्रदान कर छोटी सादड़ी (राज.) रिंगनोद आदि क्षेत्रों की यात्रा और विभिन्न श्री संघों से शासन प्रभावना के बाद पुनः उज्जैन पधारने पर आपका जन्मोत्सव कार्यक्रम 7 मई 2021 को भव्य रुप से आयोजित किया जावेगा ।पूज्यपाद ज्योति विंद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्न सागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्न सागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा को उज्जैन में आयोजित पूज्यपाद आचार्य श्री नरदेव सागरसूरीश्वरजी म.सा. के जन्मोत्सव कार्यक्रम के लिये आमंत्रण दिया गया है । आपने अनुकुलता से पधारने की स्वीकृति प्रदान की है। यहां से आपश्री सांवेर पधारेगें जहां प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन 22 मई को होगा

वर्धमान तपोनिधि आचार्यश्री नयचंदसागरसूरीजी की निश्रा में दो नवयुवक श्री ऋषभ और तन्मय परमात्मा श्री महावीर की श्रमण परंपरा भी करेंगे

चैन्नई- श्री आदिश्वर जैन श्वेतांबर न्यास चैन्नई के तत्वावधान में प्रसिद्ध महातीर्थ केशरवाड़ी में दीक्षा महोत्सव आयोजित होने जा रहा है। पूज्यपाद वर्धमान तपोनिधि आचार्य भगवंत श्री नयचंद्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. की पावन निश्रा में यहां 3 मार्च को दो नवयुवक श्री ऋषभ और श्री तन्मयकुमार के द्वारा परमात्मा श्री महावीर स्वामीजी की श्रमण परम्परा को स्वीकार कर दीक्षित होंगे । इस दीक्षा महोत्सव के प्रसंग पर 5 मार्च को यहां विरती महोत्सव का आयोजन भी किया जायेगा।

श्री अंतरिक्ष तीर्थ की 935 वीं ध्वजा

अकोला- अति प्राचीन दादा पार्श्वनाथ प्रभु के तीर्थ श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ प्रभु के जिनालय में 935 वीं ध्वजा का रोहण बसंत पंचमी के दिन दिनांक16 फरवरी को सम्पन्न हुआ।

श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम में महामांगलिक

मुंबई- श्री नाकोड़ा भैरव दर्शनधाम में दिनांक 12 फरवरी को सागर समुदाय के आचार्य भगवंत श्री चन्दनसागरसूरीजी म.सा.की महा-मांगलिक का आयोजन हुआ। बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों ने लाभ लिया।

पोष दशमी अट्ठम तप की आराधना हुई

रोहिड़ा (राज.) में प.पू. दीक्षा दानेश्वरी आचार्यदेव श्री गुणरत्न सूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य प.पू. सूरिमंत्र आराधक आचार्यदेव श्री रविरत्नसूरीजी म.सा.आदि साधु भगवंतों सिरोही (राज.) में भव्य चार्तुमास एवं श्री जैन मंदिर की 58 ध्वजारोहण एवं पूज्यश्री की 43 वीं दीक्षा तिथि का महोत्सव 300 सामूहिक सामायिक रोहिड़ा (राज.) पधारे। यहां पर पूज्यश्री का स्वागत सामैया किया गया एवं श्री पार्श्वनाथ प्रभु के जन्म दीक्षा कल्याणक के उपलक्ष्य में प्रथम बार सामूहिक अट्ठम तप की आराधना हुई। तीन दिन प्रभुजी की पूजा भावना आंगी एवं जन्म कल्याणक का वरघोड़ा, 14 स्वप्न दर्शन जन्मावाचन एवं दीक्षा कल्याणक की उजवणी समुह सामायिक आदि प्रथम बार होने से लोगों में उत्साह रहा। यहां से विहार करके श्री जीरावला तीर्थ पधारे वहां पर 22 जनवरी से 17 फरवरी 2021 तक सूरिमंत्र की पिठीका की व 18 फरवरी को चतुर्थ वर्षगांठ में निश्रा प्रदान की।

श्री अंतरिक्ष तीर्थ में ओली आराधना

अकोला- श्री अंतरिक्ष पार्श्व नाथ तीर्थ में जैनाचार्य श्री विमलबोधि सूरीजी म.सा., श्री हंसकीर्तिसूरीजी म.सा.,श्री धन्यकीर्तिसूरीजी म. सा. आदि ठाणा की अमृत निश्रा में दिनांक 19 से 27 अप्रेल तक चैत्र नवपद ओली आराधना का आयोजन होने जा रहा है।

सुविशाल सागर समुदाय गच्छाधिपति की निश्रा में कात्रज तीर्थ में दीक्षा और ध्वजारोहण हुआ

पूना- सुविशाल सामुदाय के शतकीय वय को धारण करनेवाले पूज्यपाद गच्छाधिपति जिनागमसेवी आचार्य देवेश श्री दौलतसागर सूरीजी महाराजा के आदि ठाणा के द्वारा स्थापित विश्व विख्यात जैन महातीर्थ आगम मंदिर कात्रज में पूज्यपाद अजात शत्रु पूज्य आचार्य भगवंत श्री नंदीवर्धन सागरसूरीजी म. सा., पूज्य आचार्य देव श्री हर्षसागर सूरीजी म.सा. पंन्यास प्रवर प्रवर श्री विरागसागरजी आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंत का 22 फरवरी को भव्य सामैया के साथ मंगल प्रवेश हुआ। यहां आपश्री की निश्रा में और पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा.के मार्गदर्शन में श्रीमती उर्मिला बहन राजेन्द्रकुमार परिख का भव्य प्रवज्या महोत्सव आयोजित हुआ। 23 फरवरी को दीक्षार्थी बहन का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा निकाला गया। 24 फरवरी को पूज्यपाद तीन आचार्य भगवंतों की अमृत निश्रा में शुभ लग्नांश वेला में प्रातःकाल दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई। दीक्षा उपकरणों के ऊंचे चढ़ावे बोले गये। उर्मिला बहन ने पूज्य साध्वी श्री सिद्धापूर्णा श्रीजी गुरुत्व ग्रहण किया है। कात्रज महातीर्थ की 25 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण भी सम्पन्न हुआ। 20 फरवरी को पूज्यपादश्री का मंगल प्रवेश श्री गोड़ीजी पार्श्वनाथ जैन टेम्पल में हुआ था। पूज्य पंन्यास प्रवर श्री विरागसागरजी म.सा. ने जोरदार सामैया के लिये प्रयास कर गुरु भगवंतों को भव्य सम्मान दिलाया। श्री गोड़ीजी पार्श्वनाथ जैन टेम्पल में प्रवेश पर बड़ी संख्या में धर्मिष्ठों की उपस्थिति रही।

मुनिश्री मोक्षचंदसागरजी को गणि प्रदान करने के साथ अंजनशलाका भी सम्पन्न हुई।

साध्वीश्री कल्पबोधिश्रीजी को 295 ओली का पारणा हुआ।

पार्श्वपुरम् तीर्थ- ोकण क्षेत्र में जैनत्व की ध्वजा फहरानेवाले श्री पार्श्वपुरम् तीर्थ में शासन प्रभावक आचार्य भगवंत श्री सागरचंदसागर सूरीजी म.सा. आदि साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में यहां पर 28 जनवरी को पूज्य तपस्वी साध्वीवर्या श्री कल्पबोधि श्रीजी म.सा. को 100+100+95=295 ओली का पारणा भव्य रुप से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री शांतिनाथ परमात्मा और श्री महावीरस्वामी प्रभु की रजत से निर्मित प्रतिमा के अंजनशलाका के आदेश भी दिये थे। पूज्यश्री की निश्रा में दिनांक 11 से 16 फरवरी तक भव्य गणिपद प्रदान महोत्सव के आयोजन में पूज्यमुनि श्री मोक्षचंदसागरजी म.सा. को गणिपद प्रदान किया गया साथ ही रजत से निर्मित प्रतिमा की अंजन शलाका भी हुई। इस अवसर पर 16 फरवरी को भव्य मंचीय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उपधान तप की माल 1 मार्च 2021 को होगी।

श्री हरीभाई का अवसान हुआ

अहमदाबाद- पूज्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्नसागरजी म.सा. के संसारी पिताश्री हरीभाई का अवसान विगत दिन हो गया। आगमोद्धारक परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि।

आचार्य भगवंत का मंगल प्रवेश

मंदसौर- प्रतापगढ़ से विहार कर पूज्यपाद भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठा चार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वर जी महाराजा, मुनिश्रीपद्म कीर्तिसागर जी म. सा., पूज्यपाद ज्योति विंद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागर सूरीजी म. सा. वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा. 100 +100 +154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म. सा. आदि ठाणा एवं साध्वी श्री शासन ज्योतिश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का मंगल प्रवेश यहां श्री रुपचंद्र आराधना भवन में हुआ। यहां शासन प्रभावना कर आपश्री का मंगल विहार श्री नागेश्वर महातीर्थ के लिये हुआ।

श्री नाकौड़ा भैरवजी का स्थापना दिवस मना

नाकोड़ा- महासुद-13 दिनांक 25 फरवरी को श्री नाकोड़ा भैरवजी का स्थापना दिवस भव्य रुप से देशभर में मनाया गया। हजारों भक्तों के तारणहार श्री नाकौड़ाभैरवजी की स्थापना श्री नाकौड़ा भैरव तीर्थ में 86 वर्ष पूर्व आचार्य भगवंत श्री हिमाचलसूरीजी म.सा. ने की।

खाराकुंआ मंदिरजी में ध्वजारोहण हुआ

उज्जैन- श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी स्थित श्री ऋषभदेव प्रभु श्री महावीर स्वामीजी, श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ दादा के जिनालय में 1 मार्च को ध्वजारोहण किया गया। पूज्य साध्वी श्री शशिप्रभा श्रीजी म.सा. साध्वी श्री दमिताश्रीजी म.सा., साध्वी श्री मननकीर्ति श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में ध्वजारोहण किया गया। सत्तर भेदी पूजन पढ़ाई गई।

दादा के जिनालय की ध्वजा 31 मई को चढ़ाई जावेगी : चढ़ावे हुए

पालीताना- शाश्वत तीर्थराज श्री सिद्धाचल महातीर्थ में दादाश्री आदिश्वर प्रभु के भव्य जिनालय की 490 वीं ध्वजा (1587) चढ़ाने के लिये 29 अक्टूबर को भव्य चढ़ावे पालीताना में भाताघर में हुए। दादा के देरासर के साथ ही राघण पगलियाजी राघण वृक्ष श्री पुंडरिक स्वामीजी देरासर में भी ध्वजा चढ़ाने के लिये चढ़ावे हुए। सेठ श्री आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी के तत्वावधान में ध्वजा की बोलियां हुई। इसके साथ ही श्री शांतिनाथ परमात्मा के जिनालय में 18 अभिषेक का आयोजन भी किया गया। दादा की ध्वजा संवत् 2077 वैशाख वदी-6 (ज्येष्ठ वदी) दिनांक 31 मई, सोमवार को चढ़ाई जावेगी।

सांवेर में 22 मई को प्रतिष्ठा में होगी

उज्जैन- श्री अभ्युदय भक्तामर धाम महातीर्थ धार में पूज्यपाद ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्न सागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100+100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरीजी म.सा.,मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेशरत्नसागरजी म.सा.,मुनिश्री गोयमसागरजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में सांवेर में होनेवाले श्री आदिनाथ परमात्मा के जिनालय की प्रतिष्ठा के लिये जाजम बिछाई गई जिसमें 50 लाख रुपये के चढ़ावे हुए साथ ही 30 लाख रुपये की टीप प्रतिष्ठा आयोजन के लिये भी हुई। प्रतिष्ठा का आयोजन 22 मई को होने जा रहा है।

महिदपुर में 10 वां ध्वजारोहण हुआ

महिदपुर- श्री शत्रुंजय आदिनाथ तीर्थधाम में 10 वें ध्वजारोहण पर पंच दिवसीय महोत्सव का आयोजन पूज्य साध्वी श्री मुक्तिदर्शनाश्रीजी म.सा. की निश्रा में किया गया। 24 से 28 फरवरी तक आयोजित महोत्सव के अंतर्गत 24 फरवरी को श्री मणिभद्रवीर का हवन, 25 फरवरी को 18 अभिषेक, 26 फरवरी को स्नात्र महोत्सव, ध्वजा का चल समारोह एवं ध्वजारोहण के बाद सत्तरभेदी पूजन पढ़ाई गई। 27 फरवरी को वर्धमान शक्रस्तव का आयोजन किया गया। 28 फरवरी को पूज्य साध्वी श्री प्रियदर्शना श्रीजी म.सा. की स्मृति में गुणानुवाद सभा हुई।

श्री अवंति पार्श्वनाथ में ध्वजारोहण

उज्जैन- श्री अवंति पार्श्वनाथ जिनालय की द्वितीय वर्षगांठ पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन श्री विनयकुशल मुनि गणिवर्य आदि साधु-साध्वी की निश्रा में हुआ। 24 से 26 फरवरी तक आयोजित कार्यक्रम में 18 अभिषेक, भोमियाजी का हवन, दादावाड़ी का ध्वजारोहण के साथ श्री आदिनाथ दादा, कल्याण मंदिर, देहरी का ध्वजारोहण भी सम्पन्न हुआ। 26 फरवरी को दादा की ध्वजा चढ़ाई गई।

492 वीं वर्षगांठ

वड़ाचौरा- श्री सिमंधार जगवल्लभ जिनालय की 492 वीं वर्षगांठ का आयोजन 25 फरवरी को किया गया। संध्या भक्ति भावना हुई।

कालधर्म

✻ पूज्य जम्बुविजयजी के शिष्यरत्न पूज्य श्री धर्मविजयजी म.सा. के शिष्य आचार्य श्री पुंडरिक रत्नसूरीजी के शिष्य वयोवृद्ध मुनि श्री हिसवंतविजयजी म.सा. का कालधर्म 28 जनवरी को हुआ।

✻ विमल गच्छाधिपति आचार्य श्री प्रद्युम्नविमलसूरीजी के शिष्यरत्न श्री विमल आगमविमलजी का देवलोक 25 जनवरी को हिम्मत विहार धर्मशाला पालीताना में हो गया।

✻ मुनिश्री सिद्धत्रिलोक विजयजी म.सा. का मांगोद अमिझरा महातीर्थ के समीप एक्सीडेंट हो जाने के बाद इन्दौर के अरिहंत हॉस्पिटल में 8 फरवरी को कालधर्म हो गया।

✻ पूज्य मुनिश्री पुंडरिकप्रभ विजयजी का बोरसद (गुज.) में 3 फरवरी को कालधर्म हुआ, पालकी 4 फरवरी को निकली।

श्री अजितसेन मुनिश्री आचार्य पद पर आरुढ़

बैंगलोर- श्री आदिनाथ जैन संघ चिकपेठ बैंगलोर में श्री लब्धिसूरीजी समुदाय के श्री अजितसेन मुनिश्री को आचार्य पद प्रदान किया गया। पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीजी म.सा., आचार्य श्री महेन्द्रसागर सूरीजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में 13 से 15 फरवरी तक आयोजित आचार्य पद प्रदान महोत्सव के अंतर्गत पंच कल्याणक पूजन वृहत्त नद्यावंत महापूजन पढ़ाई गई। 15 फरवरी को आचार्य पद प्रदान किया गया।

वागड़ नरेश जैनाचार्य श्री मृदुरत्नसागरसूरी की निश्रा में छःरिपालित संघ निकला

चीताखेड़ा- मालव भूषण आचार्य भगवंत गुरुदेव श्री नवरत्न सागर सूरीजी म.सा. के तीसरे सुशिष्य आचार्य भगवंत श्री मृदुरत्नसागरसूरीजी म.सा मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजी म.सा. अर्हम्. रत्न सागरजी सा. की निश्रा में मुनिश्री पवित्ररत्नसागरजी म.सा. एवं साध्वी श्री भव्यपूर्णा श्रीजी म.सा. के द्वारा नीमच चार्तुमास में प्रेरित चीताखेड़ा में श्री वही पार्श्वनाथ का छःरिपालित यात्रा संघ आयोजित किया गया। चीताखेड़ा से संघ का प्रस्थान विधि विधान के साथ 25 फरवरी को हुआ। 27 फरवरी को संघ की माल धूमधाम से श्री वही पार्श्वनाथ प्रभु के दरबार में हुई।

आहोर में जैनाचार्य श्री जयानंदसूरीजी की निश्रा में 6 दीक्षा एवं 3 बड़ी दीक्षा हुई

आहोर- पूज्य आचार्य भगवंत श्री जयानंदविजय सूरीश्वरजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में यहां 6 दीक्षा तथा 3 बड़ी दीक्षा से भव्य धर्ममय वातावरण का सर्जन हो गया। 20 फरवरी को दीक्षाथी भाई-बहन के कपड़े रंगने का कार्यक्रम हुआ। 21 फरवरी को श्री गोड़ीजी जिन मंदिर में परमात्मा का 18 अभिषेक हुए। 22 फरवरी को श्री गोड़ीजी मंदिर में ध्वजारोहण तथा बड़ी दीक्षा साध्वी विभुयशा श्रीजी एवं जिनांगयशा श्रीजी की सम्पन्न हुई। 23 फरवरी को दीक्षार्थी श्री शशिंकात भाई, श्री निसर्ग भाई, कुमारी नेहा, कुमारी गुणी बहन एवं कुमारी हेतवी एवं कुमारी पाटिल का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। 24 फरवरी को पूज्य आचार्य भगवंत की अमृत निश्रा में शुभलग्नांश वेला में दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई। इस अवसर पर दीक्षार्थी के उपकरण के जोरदार चढ़ावे हुए। 25 फरवरी को पूज्य साध्वी श्री बसंतबाला श्रीजी की 100 वीं ओलीजी का पारणा तथा नूतन दीक्षार्थियों के पगले हुए। सभी आयोजन श्री गोड़ी पार्श्वनाथ जिनालय के परिसर में सम्पन्न हुए।

श्री दीपचंदजी की प्रतिमा का अनावरण हुआ

नागेश्वर तीर्थ- श्री नागेश्वर महातीर्थ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले श्री दीपचंदजी के अवसान के एक वर्ष पूर्ण होने पर पुण्य स्मृति में आपकी प्रतिमा की स्थापना श्री नागेश्वर तीर्थ परिसर में स्थापित की गई है। इस अवसर पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन 1 से 3 मार्च तक किया गया।पूज्यपाद सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, मुनिश्रीपद्म कीर्तिसागरजी म. सा., पूज्यपाद ज्योतिर्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्नसागरसूरीजी म. सा. वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्न सागरसूरीजी म.सा. 100 +100 +154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में हुए आयोजन के अंतर्गत श्री पार्श्वनाथ पंच कल्याणक पूजन, श्री सिद्धचक्र महापूजन पढ़ाई गई। 3 मार्च को प्रातः प्रतिमा का अनावरण किया गया। गुरुभगवंत के प्रवचन एवं साधर्मिक वात्सल्य हुआ।

शुभम् दीक्षित होंगे

धार- धार श्री संघ के युवा श्री शुभम् नरेन्द्र छजलानी परमात्मा प्रभुवीर के श्रमण समुदाय में दीक्षित होकर जिन शासन को शोभायमान करने जा रहे है। पूज्य गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री नित्यसेन सूरीश्वरजी म.सा. एवं आचार्य श्री विजयजयरत्न सूरीश्वरजी म.सा.के अमृत सानिध्य में आपका प्रवज्या महोत्सव वैशाख वद-5 शनिवार दिनांक 1 मई 2021 को पाटण तीर्थ में उपस्थित होगा।

करमदी महातीर्थ में प्रथम ध्वजारोहण

रतलाम- श्री शत्रुंजय तीर्थधाम करमदी में पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य श्री सौमचंदसागरसूरीजी, आचार्यश्री विवेकचंद्रसागरसूरीजी म.सा.,आचार्य श्री मतिचंदसागर सूरीश्वरजी म.सा.,साध्वी श्री पूर्णयशा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में तीर्थ का प्रथम ध्वजारोहण होने जा रहा है। 3 मार्च को पूज्यश्री का मंगल प्रवेश गुजराती उपाश्रय में हुआ, 4 मार्च को करमदी तीर्थ में सत्तरभेदी पूजन पढ़ाने के साथ ध्वजारोहण हुआ, सधर्मिक वात्सल्य का आयोजन भी किया गया।

मांडवगढ़ में ध्वजारोहण

मांडवगढ़-श्री सुपार्श्वनाथ परमात्मा की प्रतिमा से सुसज्जित मांडवगढ़ महातीर्थ की 34 वीं ध्वजा 23 फरवरी को यहां धूमधाम से चढ़ाई गई। स्मरण रहे इस महातीर्थ का जीर्णोद्धार पूज्य आचार्य भगवंत श्री अशोकसागर सूरीजी म.सा. की निश्रा में होने जा रहा है। पंच शिखरीय भव्य जिनालय का निर्माण कार्य चल रहा है।

सागर समुदाय में होनेवाले दीक्षा महोत्सव

- ✻ मुमुक्षु विपल राजेशभाई तलेसरा (शहा) महा वद-5, 3 मार्च कात्रज-आगम तीर्थ
- ✻ मुमुक्षु निकिता विक्रमभाई ओसवाल, महा-वद-12, 10 मार्च कामशेत (लोनावला पासे)
- ✻ मुमुक्षु यशीता दीपकभाई नाणेशा, महा-सुद-7, 21 मार्च आगम तीर्थ
- ✻ मुमुक्षु हीना जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-5, 1 मई, हालोल (गुज.)
- ✻ मुमुक्ष पूजा जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-6, 2 मई, हालोल (गुज.)
- ✻ मुमुक्षु करिश्मा जयंतिभाई धोका, चैत्र वद-6, 2 मई, हालोल (गुज.)

भाई हितेश खोना को श्रमण समुदाय स्वीकार करने के लिये 30 मई को मंगल मुर्हूत मिलेगा

मथुरा- आचार्य भगवंत श्रीमृदुरत्नसागर सूरीजी महाराज के सुशिष्य गणिवर्य श्री आदर्शरत्न सागर जी म.सा. आदि ठाणा का आगरा से विहार कर मथुरा पहुंचे यहां आपकी महामांगलिक का आयोजन जैन मंदिर में 12 फरवरी को किया गया। सुश्रावक उच्च शिक्षा, उच्च पद पर कार्य करनेवाले श्री हितेशभाई को संसार की असारता का ज्ञान हुआ। आपने सब कुछ मोह माया का त्याग करते है, श्री महावीर स्वामीजी के श्रमण समुदाय में दीक्षित होने का संकल्प लिया है। आपके परिवार के श्री भायचंद्र लखमीशा खोना परिवार को 30 मई को उत्तर भारत के किसी नगर के श्रीसंघ में भगवती प्रवल्या का मंगल मुर्हूत प्रदान किया जायेगा।

मनीष गोडसे परिवार 21 फरवरी 2021 को दीक्षित हुआ

पूना - जर्मन की बड़ी कंपनी में कार्यरत रहे श्री मनीषभाई गोडसे जो अजैन मराठी परिवार से है, आपने जैन मित्रों के संपर्क में आकर पूरी जीवन शैली बदलकर अब अपने परिवार श्रीमती गोडसे उनका पुत्र एवं पुत्री चारों दीक्षित होने जा रहे है। आपने पूना के पास अपने गांव में नागेश्वर पार्श्वनाथ का मंदिर निर्माण करवाया। विगत पांच वर्षो से नंगे पैर रहे। आपको विगत 21 फरवरी 2021 को पूज्य आचार्यश्री रविशेखर सूरीश्वरजी म.सा. की निश्रा में दीक्षा मुहूर्त प्रदान किया गया था। दीक्षा के बाद मनीषभाई- मौनरत्नविजयजी भाविक भाई- ध्यानरत्नविजयजी सपना बहन- सप्तवेग रेखाश्रीजी मनीषी बहन-जिनांग रेखाश्री का नाम रखा गया है।

8 दीक्षार्थी का दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया

ब्यावरा- खतर गच्छाधिपति आचार्यदेव श्री जिनमणिप्रभ सूरीजी ने यहां 8 दीक्षार्थी मुमुक्षुओं की दीक्षा मुर्हूत प्रदान किया। 1-अमित बाफना, 2-रितेश गड़, 3- राजेश धोका 4- महावीर बोहरा, 5- मुस्कान बोहरा (श्रमणी) 6- सोना मालु, 7- भावना सकलेचा, 8- विनीता सकलेचा। आदि दीक्षा सिद्धक्षेत्र पालीताना में 6 मई को होगी।

अयोध्यापुरम् में श्री शत्रुंजय महातीर्थ का संघ निकला

अयोध्यापुरम्- सागर समुदाय के शासन प्रभावक आचार्य भगवंत बंधु बेलड़ी आचार्य श्री जिनचंद सागर सूरीजी एवं आचार्य श्री हेमचंद सागर सूरीजी महाराज आदि ठाणा की पावन निश्रा में अयोध्यापुरम् से श्री शत्रुंजय महातीर्थ के लिये छःरिपालित यात्रा संघ का आयोजन किया गया। 22 से 28 फरवरी तक आयोजित संघ की माल 28 फरवरी को हुई। मंगल नवकार महक ग्रुप- अहमदाबाद संयोजक रहा।

जैनाचार्य श्री मुक्तिसागर सूरीजी निश्रा में ध्वजाराहण हुआ

बड़ोद - श्री अभ्युदयपुरम् जैन गुरुकुल में पूज्य आचार्य श्री मुक्ति सागर सूरीजी, पंन्यास प्रवर श्री अचल मुक्ति सागरजी एवं साध्वीश्री मुक्ति रेखा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में उपधान तप की माल 1फरवरी 2021 को हुई। उपधान तपाराधना सम्पन्न करवाकर जैनाचार्य श्री मुक्तिसागरसूरीजी आदि ठाणा का मंगल विहार 6 फरवरी को उन्हेल की ओर हुआ। यहां से आलोट होते हुए तिलगोद पधारे जहां से 13 फरवरी को श्री नागेश्वर पार्श्वनाथ तीर्थ का संघ आयोजित किया गया। 18 फरवरी को तीर्थ से माल हुई। यहां से डग होते हुए बड़ोद पधारे। यहां आपकी निश्रा में निर्मित श्री विमलनाथ प्रभु के जिनालय की 10 वीं वर्षगांठ पर त्रिदिवसीय आयोजन 24 से 26फरवरी तक आयोजित किया गया। 18 अभिषेक भव्य वरघोड़ा तथा साधर्मिक वात्सल्य का आयोजन हुआ।

रिंगनोद में कुमारी इशिता का भव्य दीक्षा महोत्सव 28 फरवरी को 5 आचार्य भगवंतों की निश्रा में हुआ

108 उपवास का पारणा छोटी सादड़ी में हुआ

रिंगनोद- पूज्यपाद सागर समुदाय के वचन सिद्ध, भोपावर महातीर्थ के प्रतिष्ठाचार्य पूज्यपाद श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी महाराजा, मुनिश्री पद्म कीर्तिसागरजी म.सा., पूज्यपाद ज्योति र्विद आचार्य भगवंत श्री जिनरत्न सागर सूरीजी म.सा.वाणी के जादूगर और अनेक ग्रंथों के रचयिता पूज्य आचार्य श्री जितरत्नसागरसूरीजी म.सा. 100 +100+154 ओली के आराधक आचार्य भगवंत श्री चन्द्ररत्न सागरसूरी जी म.सा.,पूज्यपाद जैनाचार्य श्री मृदुरत्न सागरसूरीजी म.सा. मुनिश्री मोक्षरत्न सागरजीम.सा. अर्हम्रत्न सागरजी सा.मुनिश्री चैत्यरत्न सागर जी म.सा.,मुनिश्री ज्ञानेश रत्नसागरजी म. सा.,मुनिश्री गोयम सागरजी म.सा. इसके साथ ही यहां पूर्व से ही विराजित मुनिश्री नमिरत्न सागरजी म.सा. एवं मुनिश्री पवित्ररत्न सागरजी म.सा. एवं साध्वी अर्चपूर्णाश्री साध्वी भव्यपूर्णा श्रीजी एवं अक्षय ज्योतिश्रीजी आदि ठाणा की मंगल निश्रा में छोटी सादड़ी (राज.) में पिंकी नागौरी को 108 उपवास का भव्य पारणा अष्टान्हिका महोत्सव के साथ सम्पन्न हुआ। आपश्री का मंगल प्रवेश 5 फरवरी को हुआ था, 6 फरवरी को जिनालय पर ध्वजारोहण भी सम्पन्न हुआ। 11 एवं 12 फरवरी को वरघोड़ा एवं पारणा सम्पन्न हुआ। यहां से आपश्री आदि ठाणा धार होते हुए रिंगनोद पधारे थे। यहां कुमारी इशिता की भव्य भगवती प्रवज्या का आयोजन किया गया था। 27 फरवरी को दीक्षार्थी बहन का भव्य वर्षीदान वरघोड़ा आयोजित किया गया। 28 फरवरी को शुभ लग्नांश वेला में पूज्य आचार्य भगवंतों की पावन निश्रा में दीक्षा क्रिया विधि सम्पन्न हुई। दीक्षा उपकरणों की बोली भी अच्छी रही।

श्री केशरिया मणिभद्र यक्षराज तीर्थधाम में श्री मणिभद्र दादा का 538 वां जन्मोत्सव हवन-आरती के साथ मनाया गया

दादा का नियमित 365 दिन हवन नकरे के साथ आरंभ हुआ

उज्जैन- सिंह गर्जना के स्वामी सागर समुदाय के वरिष्ठआचार्य भगवंत श्री अशोकसागरसूरीजी महाराजा के द्वारा प्रतिस्थापित श्री मणिभद्र दादा के महातीर्थ श्री केशरिया मणिभद्र यक्षराज तीर्थधाम में अधिष्ठायकदेव का 538 वां जन्मोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

पूज्य आचार्य श्री सौम्यचंद्रसागर सूरीजी, पूज्य आचार्य श्री विवेकचंद्र सागर सूरीजी म.सा.,पूज्य आचार्यश्री मतिचंद्रसागरसूरीजी म.सा.आदि ठाणा की पावन निश्रा में श्री मणिभद्र दादा के जन्मोत्सव पर बसंत पंचमी दिनांक 16 फरवरी 2021 को भव्य हवन आरती हुई। श्री संघ का स्वामी वात्सल्य आयोजित किया गया। यहां प्रतिदिन 365 दिन सालभर दादा का हवन आरंभ किया गया है। विशेष तिथि पर विशेष हवन का आयोजन होगा। सामान्य दिन के लिये नकरा 1500/- रुपये निश्चित किया गया है। दिनांक 16 फरवरी को दादाश्री आदिनाथ प्रभु के जिनालय की 11 वीं वर्षगांठ पर ध्वजारोहण भी हुआ।

पूज्यपाद जैनाचार्य श्री राजयशसूरीजी को गच्छाधिपति पद पर विराजमान का गच्छनायक बनाया

अहमदाबाद- यहां विक्रमतीर्थ शांतिनगर में श्री लब्धिसूरीजी महाराजा के समुदाय में पूज्यपाद जैनाचार्य श्री राजयशसूरीजी म.सा. को गच्छाधिपति पद पर शोभायमान कर गच्छनायक बनाया गया। पूज्य जैनाचार्य श्री मनोहर कीर्तिसूरीश्वरजी, आचार्य श्री उदय कीर्ति सूरीजी, आचार्य श्री रत्नयश सूरीजी म.सा.,आचार्य श्री वीतरागयश सूरीजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वी भगवंतों की पावन निश्रा मे 15 फरवरी को गच्छाधिपति पद पर आरुढ़ किया गया।

श्री वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक हुए

रतलाम- प्रसिद्ध जैन तीर्थ श्री करमदी में पूज्य साध्वीवर्या श्री पूर्णयशा श्रीजी म.सा.आदि ठाणा की निश्रा में श्री वर्धमान शक्रस्तव अभिषेक का आयोजन 31 जनवरी को किया गया।

अयोध्यापुरम् महातीर्थ में बंधुबेलड़ी जैनाचार्यश्री की निश्रा में उपधान तपाराधना की पूर्णाहुति हुई

अयोध्यापुरम्- जिनशासनरत्न सागर समुदाय के शासन प्रभावक आचार्य भगवंत श्री जिनचंदसागर सूरीश्वरजी म.सा., आचार्य भगवंत श्री हेमचंदसागर सूरीश्वरजी म.सा. अनुयोगाचार्य श्री लब्धिचंदसागरजी म.सा., पू.पंन्यास श्री प्रसन्नचंद सागरजी म.सा., पू.पं. श्री विराग सागरजी म.सा.,गणिवर्य श्री पद्मचंद सागरजी म.सा.आदि विशाल संख्या में साधु-साध्वीवृंद की पावन निश्रा में श्रावक से श्रमण बनने की महाराधना का उपधान तप की पूर्णाहुति पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन 16 से 19 फरवरी तक किया गया। 17 फरवरी को जोरदार रथयात्रा निकाली गई, श्री शांतिस्नात्र महापूजन भी पढ़ाई गई। 18 फरवरी को प्रातः लग्नांश वेला में उपधान परिधान का विधान विशाल धर्मसभा में किया गया। 200 के लगभग तपस्वियों को मोक्षमालारोपण किया गया।

योगाधान विधान पूर्ण होने पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन हुआ

पालीताना- पूज्यपाद मालव विभूति तपोनिष्ठ आचार्य भगवंत श्री अपूर्वमंगल रत्नसागरसूरीजी म. सा.के शिष्य परिवार मुनिश्रीआगम रत्न सागर जी म. सा., मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म. सा. पू. आ.भगवंत वाणी के जादूगर श्री जित रत्नसागरसूरीश्वरजी म.सा.के सुशिष्य मुनिश्री वज्ररत्नसागर जी म. सा.के गुरुकुल से पूज्य मुनि भगवंत श्री आगमरत्नसागरजी, मुनिश्री प्रशमरत्न सागरजी म.सा. के महानिशीध योगोद्वन की क्रिया पूर्णाहुति पर त्रिदिवसीय महोत्सव का आयोजन किया गया। आपकी पूर्ण क्रिया पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री विश्वरत्नसागर सूरीजी म.सा. की मंगल अमृत निश्रा में सम्पन्न हुई। योग क्रिया के सभी अनुष्ठान और विधान आपश्री ने पूर्ण करवाये। इस प्रसंग पर त्रिदिवसीय महोत्सव 19 से 21 फरवरी तक आयोजित किया गया। महोत्सव के आयोजन और मार्ग दर्शन की प्रेरणा युवा मुनिप्रवर प्रवचन कार श्री वज्ररत्नसागरजी म.सा. रहे।

19 फरवरी को 18 अभिषेक महापूजन हुई, 19 फरवरी को पालीताना में भव्य वरघोड़े का आयोजन हुआ जिसमें पालीताना में विराजित सभी साधु-साध्वी भगवंत का आमंत्रण दिया गया था। रात्री में भव्य संगीत निश्रा के साथ श्री सिद्ध गिरीराज को वधासणा दिया गया। 21 फरवरी को पूज्य गिरीराज की यात्रा के आयोजन के साथ दोपहर में मुनिद्वय का पारणा कार्यक्रम हुआ। चढ़ावे बहुत अच्छे रहे।

मेघ संस्कार वाटिका का लोकार्पण

इन्दौर- श्री नवकार सेवा संस्थान द्वारा निर्मित श्री संघ संस्कार वाटिका जो श्री ह्रींकारगिरी तीर्थ की तलेटी में स्थित है, का लोकार्पण 14 फरवरी का पूज्य गणिवर्य श्री आनंदचंद्र सागर जी म.सा. मुनिप्रवर श्री चारित्र चंद्र सागरजी म.सा. मुनिश्री उत्सवचंद्र सागरजी म.सा.एवं साध्वीवर्या श्री मेघवर्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा-3 की निश्रा में सम्पन्न हुआ। आप इन्दौर के विभिन्न श्रीसंघ में शासन प्रभावना कर रहे है।

चार्तुमास....

✲ जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, मरुधररत्न पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेन सूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा का वि.सं. 2077 का चार्तुमास श्री जगवल्लभ पार्श्वनाथ जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक आराधक संघ बीजापुर (विजयापुर) (कर्णाटक) में निश्चित हुआ है।

आचार्य पद प्रदान किया जावेगा

पूज्य पंन्यास प्रवर श्री उदयरत्न विजयजी को 10 मार्च को आचार्य पद पर आरुढ़ किया जावेगा।

आगमोद्धारक सदस्यता शुल्क ऑन लाईन भेजिये....

आगमोद्धारक का सदस्यता शुल्क आप ऑन लाईन बैंक में जमा कर सकते है। शुल्क भेजने के लिये बैंक- आय.सी.आय.सी.आय. बैंक, शाखा तीन बत्ती चौराहा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता:-श्री सिद्धसेन दिवाकर चेरिटेबल ट्रस्ट,

46, सखीपुरा, उज्जैन (म.प्र.)

खाता क्रं. 030001000331 IFSC Code ICICI0000300

हमारे तीज-त्यौहार

1-	माघ वदी-5	बुधवार	3-3-2021	श्री वर्धमान आगम मंदिर वर्षगांठ (सं.1999) पालीताना
2-	माघ वदी-11	मंगलवार	9-3-2021	श्री ऋषभदेव प्रभु का केवलज्ञान कल्याणक
3-	फाल्गुन सुदी-1	रविवार	14-3-2021	मीनार्क कुमुहूता आरंभ
4-	फाल्गुन सुदी-3	मंगलवार	16-3-2021	शुक्रादेव-श्री सीमंधर स्वामी का दीक्षा कल्याणक
5-	फाल्गुन सुदी-5	गुरुवार	18-3-2021	श्री राणकपुर तीर्थ की वर्षगांठ
6-	फाल्गुन सुदी प्रथम -7	शनिवार	20-3-2021	चौमासी अट्ठाई आरंभ रोहिणी
7-	फाल्गुन सुदी-12+13	रविवार	26-3-2021	श्री सिद्धाचल महातीर्थ की छः गांव की यात्रा
8-	चैत्र वदी-3	बुधवार	31-3-2021	पूज्यपाद गुरुदेव मालव भूषण आचार्य भगवंत श्री नवरत्नसागरसूरीजी महाराजा का 78 वां जन्म दिवस

पुष्प नक्षत्र :—

आरम्भः- फाल्गुन सुदी-7, मंगलवार, दिनांक 23-3-2021 समय- 22.47 बजे

समाप्तः- फाल्गुन सुदी-10,बुधवार, दिनांक 24-3-2021 समय- 22.47 बजे

भाव श्रावक के छः लिंग

1- कृत व्रत कर्म :- *धर्म के बारे में सुनना, समझना, व्रत आदि स्वीकार कर उसका पालन करने वाला।* ***2- शीलवानः-*** *श्रावक के आचार को जाने, देशाचार, कुलाचार अनुसार जीये, ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करें।* ***3- गुणवानः-*** *स्वाध्याय, धर्मक्रिया, विनयादि गुण के विकास में क्रियाशील रहे।* ***4- ऋजुव्यवहारीः-*** *व्यवहार में शुद्ध पालन।* ***5- गुरुशुश्रूषाः-*** *गुरु की विविध सेवा करने में तत्पर।* ***6- प्रवचन कुशलः-*** *धर्म, विधि, अनुष्ठानों का ज्ञाता।*

सारे देश में आगमोद्धारक प्रतिनिधि नियुक्त करना है

जैन जगत की प्रतिष्ठित, प्रसिद्ध मासिक पत्रिका आगमोद्धारक के सदस्यता अभियान के लिये सारे देश में प्रतिनिधियों की नियुक्ति की जा रही है। सक्रिय युवा भाई-बहन जो जिनशासन के प्रचार-प्रसार हेतु अपनी सेवा देना चाहते है वे तुरन्त निम्न पते पर संपर्क करें।

प्रतिनिधि को कम से कम 25 सदस्य बनाना आवश्यक है। आपकी सहमति प्राप्त होने पर रसीद कट्टे एवं प्रचार-प्रसार सामग्री आपको भेजी जायेगी। सम्पादक से सम्पर्क करें।

✻ मनुष्य भव में व्यक्ति पुण्य के उदय में जितना अनुकूलता का आग्रह, आसक्ति और अहंकार करता है, उसके पाप का बंध उतना ही अधिक होता है।

सादर आमंत्रण

✻ पूज्य साधु-साध्वीजी से विनंती है कि आपके चातुर्मास एवं सभी धार्मिक कार्यक्रमों की जानकारी एवं धार्मिक महोत्सव की सूचना आगमोद्धारक तक पहुंचाने का कष्ट करें, ताकि अंक आपको लगातार भेजा जा सके तथा समाचार प्रकाशित किया जा सकें।

✻ आगमोद्धारक के लिये आपकी रचनाएं भी प्रकाशन के लिये निरंतर भेजते रहे। आपकी रचना से हम प्रोत्साहित होंगे।

✻ पत्रिका को और अच्छा बनाने के लिये आपके सुझाव, मार्गदर्शन भी भेजते रहे ताकि आगमोद्धारक की गुणवत्ता बढ़ाई जा सके।

✻ अंक आपके तक नियमित रुप से नवीन स्वरुप के साथ 10 तारीख तक पहुंचे ऐसा हमारा प्रयास रहता है, अंक अप्राप्ति पर शीघ्र सूचित करें।

- सम्पादक

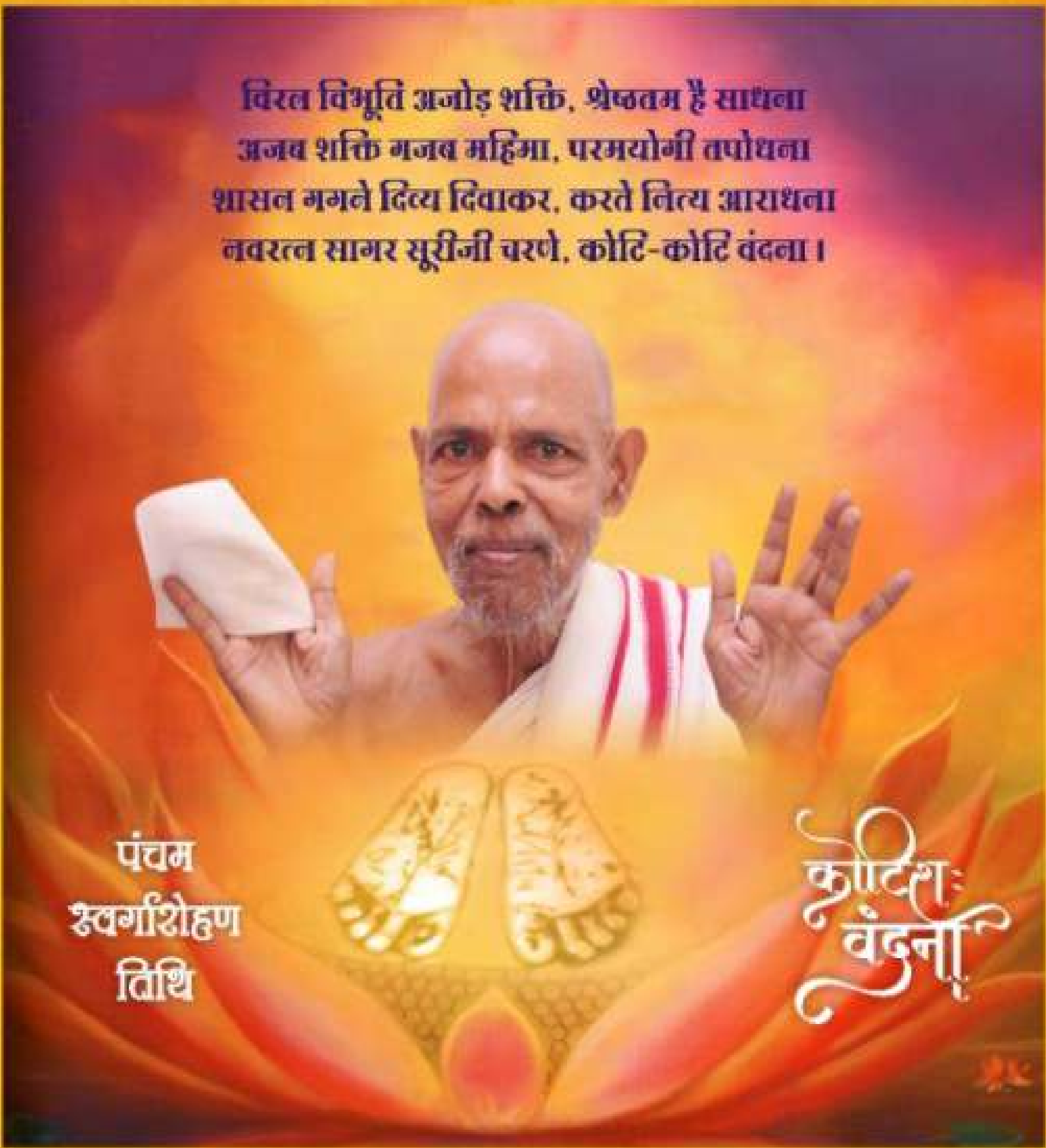

वर्ष 26 | माघ - फाल्गुन | मार्च-2021 | अंक 03 (मासिक) | प्रकाशन उज्जैन

आर.एन.आई. नं. 0048870/29/30/1982
पोस्ट मालवा डिवीजन पी.आर.एन.नं.एम.डी. 08/2021-2023

प्राप्त न होने पर कृपया लौटाएँ-

डॉ. सुभाष जैन (संपादक)
46, सखीपुरा, उज्जैन - 456001 (म.प्र.)
मो. 94250-91012, 8770884897
Email : subash_3333@yahoo.co.in, subhashjain@gmail.com

प्रति,
बुक पोस्ट
श्रीमान् ....
....
....

स्टाम्प
टिकिट

श्री अभ्युदय फाउण्डेशन उज्जैन के लिये डॉ. सुभाष जैन - संपादक द्वारा प्रकाशित एवं एम.बी. ऑफसेट प्रिंटर्स,
286, एम.जी.रोड, इन्दौर से मुद्रित। फोन : 0731-2412232, संपादक मो. 94250-91012, 8770884897